

# असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—कण्ड 3—उप-कण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 341]

नई दिल्ली, सुक्षवार, अक्तूबर 31, 1980/कार्तिक 9, 1902

No. 341]

NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 31, 1980/KARTIKA 9, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दो जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

### भौबहुन और परिवहन संत्रासय

(परिवहन पक्ष)

### अधिस्चना

नई चिल्ली, 31 अधन्बर, 1980

सा. का. नि. 615(अ). — केन्द्रीय सरकार महापत्त र न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 28 के माथ पठित भारा 126 द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए निम्स-निस्तित विनियम बनानी है, अधित्ः :—

- 1. संक्षिप्त माम और प्रारम्भः—(1) इस विनियम का संक्षिप्त नाम तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण के लिए अग्रिमों का अन्दान) विनियम, 1979 है।
- (2) यह राजपत्र में प्रकाशन की तारीख़ से प्रवृक्त होंगे।
  2. परिभाषाण, —इस विनियम में जब तक कि संदर्भ से अन्प्रथा अपेक्षित न हो।
  - (क) ''अधिनियम'' से महत्पत्तन न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) अभिप्रेत हैं,
  - (स) ''बोर्ड'' में तूतीकोरिन पत्तन न्यास के लिए अधि-नियम के अधीन गठित न्यासी-बोर्ड अभिप्रेन हैं,
  - (ग) ''अध्यक्ष'' से सोर्ड का अध्यक्ष अभिप्रेत हैं,
  - (घ) ''उपाध्यक्ष'' से बोर्ड का उपाध्यक्ष अभिप्रत है,

- (ड) ''कर्मचारी'' से बोर्ड का कर्मचारी अभिप्रेत है,
- (च) ''मरकार'' में केन्द्रीय मरकार अभिप्रोत है,
- (छ) ''विभाग का अध्यक्षः'' में ऐमा पद अभिन्नेत हैं जिसकें पदधारी को केन्द्रीय सरकार, अधिनियम के प्रयोजन के लिए, उक्त अधिनियम की धारा 24 की उपधारा (2) के अधीन उम रूप में विनिर्दिष्ट करें।
- (ज) ''विधिक मलाहकार'' से समय समय पर निद्कत बोडें का बिधिक सलाहकार अभिन्नेत है.
- (भ) ''स्थायी कर्मचारी'' और ''अस्थायी कर्मचारी का बही अर्थ होगा जो त्तीकोरिन पत्तन न्याम कर्मचारी (भती ज्येष्ठता और प्रोन्नित) विनिधम, 1979 में क्रमश: उनका है।
- (ञ) ''गिम्म वेतन'' से ऐसा कर्मचारी अभिशंत हैं जिसका वेतन, जिसके अन्तर्गत स्थानापन्न वेतन, महांगाई वेतन, व्यक्तिगत वेतन और विकोध वेतन हैं, प्रति मास 500 रुपए से अधिक न हो।
- 3. पात्रता .—गह निर्माण अग्निम का अनुदान कर्मचारियों के निम्निलिखत प्रवर्गी को किए जा सकेंग, अर्थात् :—
  - (क) बोर्ड के स्थायी कर्मचारी,
  - (स) बोर्ड के ऐसे कर्मधारी, जो ऊपर के प्रवर्ग (क) क अधीन नहीं आसे हैं और जिन्होंने कम से कम दस वर्ष निरन्तर

(1231)

सेवा की है, परन्तु यह तब जब कि मंजूरीकर्ता प्राधिकारी का यह समाधान हो जाए कि उनके बोर्ड की मंत्रा में कम से कम तब तक वने रहने की संभावना है जब तक उस गृह का, जिसके लिए अग्रिम मंजूर किया गया है, निर्माण नहीं हो जाता है या उसे बोर्ड को बंधक नहीं कर दिया जाता है।

दिष्पण - ऐसे मामलों में, जहां पति और पत्नी दोनों बोर्ड को कर्मचारी हैं और अग्निम को अनुदान के लिए पात्र हैं यह उनमें से केवल एक को अनुजय होगा ।

- 4. शतें जो पूरी की जानी है. अप्रिम के अनुवान के किसी आबेवन में निम्नलिखित शतें पूरी होनी चाहिए, अर्थात् :
  - (क) किसी गृह के मामले में निर्माण/क्रय किए जाने वाले गृह या फ्लैट की लागत निवासी प्लाट की लागत की निकाल कर कर्मचारी के वेतन के 75 गना से या 1,25,000 रुपये से, इसमें से जो भी कम हो, अधिक नहीं होगी और आयेदक ने किसी अन्य प्राधिकारों या निकाय, जैसे कि प्नर्वास विभाग या केन्द्रीय या राज्य आवास स्कीम से इस प्रयोजन के लिए, कोई उधार या अग्रिम न लिया हो । निम्न बेतन कर्मचारी के मामले में निर्माण/कथ किए जाने वाले प्रस्तावित ग्रह/फ्लीट की लागत (भूमि/फ्लैंट के विकय/पट्टा विलेख में यथा-वर्णित भूमि की लागत को निकल्कर 50,000 रुपये से अधिक नहीं होगी यद्यपि कि वह उनके सास्कि वेतन से 75 गुना से अधिक हो सफेगी—जहां आवेदक दुवारा पहले ही ले लिया गया उधार आदि इन विनियमों के अभीन अनुज्ञेय रकम से अधिक नहीं है, उसके लिए इस अधिनियम के अग्रिम के लिए आवेदन करना इस शर्त के अध्यधीन रहते हुए स्ता है कि वह बकाया उधार या अग्रिम को उन पर ब्याज सहित, यदि कोई हो, एक मध्त राशि में पर्वोक्ति प्राधिकारी या किकाय को प्रतिसंदरत करने का बचन देता है।
  - (ख) ऐसे मामले में जहां कोई कर्मचारी इस विनियम के अधीन कोई अग्निम लेने के अतिरिक्त गृह/निवागीय फ्लैट के संनिमाण/उ.जंन के संबंध में अपनी भिट्टय निधि लेखे से अंतिम रूप से रकम निकालता है (या निकाला है) इस विनियम के अधीन मंजूर अग्निम और भविष्य निधि से निकाली गयी कुल रकम का योग मासिक बेतन आदि के 75 गूना से या 1,25,000 रुपय से, इसमें से जो भी कम हो, और निम्न बेतन कर्मचारी की बाबत 50,000 रुपये से उनके 75 मास के बेतन पर ध्यान न देते हुए अधिक नहीं होना चाहिए।
  - (ग) न तो आवेदक के न आवेदक के पिता/पत्नी या अव-यस्क संतान के स्वामित्व में कोई ग्रह होना चाहिए किन्त् यह भर्त बोर्ड द्वारा आपवादिक परिस्थितियों में शिथिल की जाएगी उदाहरणार्थ यदि आवेदक या आवेदक की पत्नी/पिति/आवद्यक संतान किसी गांव में गृह की स्वामी है और आवेदक किसी नगर में बसना चाहता है, या जहां आवेदक अन्य नामदारों आदि के साथ संयुक्त रूप से गृह का स्वामी है और वह अपने लिए किसी पृथक गृह का निर्माण करना चाहता है।
  - (घ) संनिर्मित या ऋय िकए जाने वाले गृह की पसी क्षेत्रफल 22 वर्ग मीटर से कम नहीं होना चाहिए ।

टिप्पण :—इस और अन्य विनियमों तथा इन विनियमों से उपाबद्ध बंध के प्ररूपों के प्रयोजनों के लिए 'गृह' शब्द के अन्तर्गत कोई फ्लैंट आता है, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित गहो ।

- 6. प्रयोजन जिनके लिए अग्रिम अनुदत्त किया जा सकेगा.— अग्रिम निम्नलिखित के लिए अगुदत्त किए जा सकेगं—
  - (क) या तो कर्तव्य के स्थान पर या उस स्थान पर, जहां कर्मचारी सेवा निवृत्त के पश्चात् बसने की प्रास्थापना करता है, किसी नए गृह की संरचना (जिसके अन्त-र्यंत उस प्रयोजन के लिए भूमि के किसी उपयुक्त प्लाट का अर्जन आता है) या पहले से ही निर्मित गृह या फ्लैट को ऋय करना। एहले से निर्मित गह रा फ्रनैट को ऋय करने के लिए अग्रिम के किसी अखेदन पर भी विचार किया जा सकेगा। अभिम की अधिकतम रकम, जो अनुदत्त की जा सकती है, पहले से ही निर्मित गृह या फ्लैंट की वास्तविक लागत या मासिक बेतन के 75 गुना या 70,000 रुपये इसमें जो भी सबसे कम हो, होगी। निम्न वेतन कर्मचारियों के मामले में गृहों का संनिर्माण/गृहों/फ्लैंटों क ऋय (भूमि की लागत को निकालकर) की कुल लागत 50,000 रुपयों से अधिक नहीं होगी यद्यपि कि वह 75 मास के वेतन से अधिक हो सकेगी।
  - (स) संबंधित कर्मचारी के या उसकीः/उसके गत्नी/पित के साथ संयुक्त रूप से स्थामित्वाधीन किसी विव्यमान गृहं में निवास स्थान की वृद्धि:

परन्तु थिद्यमान संरचना की भूमि को छोड़कर, और प्रस्थापित बृद्धि और विस्तारों की कुल लागत उसके मासिक बेतन के 75 गुना या 1,25,000 क्यए, इसमें से जो भी कम हो, से अधिक नहीं होगी। निम्न बेतन कर्मचारियों के मामलों में विद्यमान संरचना की, भूमि को छोड़कर, और प्रस्थापित वृद्धि और विस्तार की कुल लागत 50,000 क्यों से अधिक नहीं होनी चाहिए यद्यपि कि बह कर्मचारी के बेतन के 75 गुना से अधिक हो सकेगी।

(ग) विनियम 4(क) में विनिर्दिष्ट किसी प्राधिकारी या निकाय से लिए गए उधार या किसी अग्रिम का प्रति-संदाय,

परन्तु इस विनियम के खंड (ग) के अधीन अग्रिम का अनुदान उपलभ्य नहीं होगा यदि गृह पर संनिम्ण पहले ही प्रारम्भ कर दिया गया है ।

- 6. अग्रिम की रकम:--
  - (क) कर्मचारी को उसकी संपूर्ण सेवा के वौरान इन विनियमों के अधीन एक अग्निम से अधिक मंजूर नहीं किया जाएगा।
  - (ख) किसी आवेदक को उसके मासिक वेतन के जिसके अन्तर्गत स्थानापन बेतन (बंहा के सिवाय जहां वह छुट्टी के कारण हुई रिक्ति में लिया गया है) मंहगाई वेतन, वैयिक्त के तेन और विशेष धेतन सिम्मिलत है किन्त् प्रति नियुक्ति पद की अल्प या नियम अविध में लिया गया वेतन सिम्मिलत नहीं है, 75 गूना के समत्त्य रक्तम से अधिक रक्तम अनुदत्त नहीं की जा सकेगी और यह विनियम 5(क) के अधीन आने वाले मामलों में अधिकतम 70,000 रुपए, विनियम 5(ख) के अधीन आने वाले मामलों में अधिकतम, 25,000 रुपयों तक मीमित होगी।

- (ग) मंजूर किए जाने वाले अग्रिम की वास्तविक रकम, अविदित अग्रिम को नियोचित बनाने के लिए आवेदकों द्वारा दिए गए रेखांकों, ज्यौरेदार विनिदेशों प्राक्कलनों के अधार पर, पत्तन न्यास के मुख्य इंजी-नियर द्वारा अवधारित की जायेगी और ऊपर विनिद्धित रकम सीमा के भीतर संनिर्माण की प्राक्कलित लागत तक सीमित होगी। अग्रिम की रकम आगे उस रकम तक सीमित होगी, जिसे कोई कर्मचारी उसे लागू संवा नियमां के अनुसार भागतः अपने उपदान मृत्यु—एवं सेवा निवृत्त उपदान से और भागतः अपनी अधिवार्दिता की तारीख के पूर्व अपने वेतन सं सुविधा-पूर्ण मामिक कटौतियों द्वारा प्रतिसंदत्त कर सकता है ।
- (व) अग्रिम की मामिक किस्तों की बसूती बोर्ड स्वारा अग्रिम की मंजूरी की तारीख से एक वर्ष के अवसान के पश्चात् की जाएगी।
- (ड़) किसी कर्मचारी के बेतन के 33-1/2 प्रतिशत तक संगणित किस्त उसके संदाय क्षमता के भीतर मानी जाएगी।
- 7. संवितरण और प्रतिभूति : (1) भागतः भूमि का क्रय करने के लिए और भागतः एक मंजिल नए गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि करने के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्नलिखिल रूप में संदत्त किया जाएगः—
  - (1) मंजूर अग्रिम के 20 प्रतिशत से कनिभक रकम आवेदक को, भूमि के ऐसे विकसित फ्लैट का ऋय करने के लिए जिस पर उधार की प्राप्ति की तारीख से तुरत्त संनिर्माण प्रारम्भ किया जा सकता है, आवेदक द्वारा अग्रिम के प्रतिसंदाय के लिए विहित प्रारूप में एक करार निष्पािवत किए जाने पर संदेय होगी । ऐसे सभी मामलों में, जिसमें अग्रिम का भाग भूमि का ऋय करने के लिए दिया गया है उस तारीख स दो मास के भीतर, जिसकी उपरोक्त 20 प्रतिशत रकम निकाली गयी है या ऐसे अतिज्ञित समय के भीतर, जैसा अध्यक्ष इस निमित्त अगुका दे, भूमि को ऋय किया जाना चाहिए और उसकी बाबत विकय जिलेख निरीक्षण के लिए अध्यक्ष को पेश किया जाना चाहिए, जिसके न हो सकने पर आवेदक वोर्ड को संपूर्ण रकम, उस पर ब्याज सहित, तुरत्त वापस करने के लिए दायी होगा ।
  - (2) अग्रिम के अग्तिशेष के 30 प्रतिशत के समतुल्य रकम आवेदक को, उसके व्वारा ऋय की गयी भूमि को उस पर निर्मित गृह के साथ, बोर्ड के पक्ष में उसके व्वारा बन्धक िकए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विऋय के निबंधनों द्वारा अनुजात है, संदेय होगी। ऐसे मामलों में, जहां विऋय के निबंधन जब तक भूमि पर गृह बना न दिया जाए, ऋता में हक निहित नहीं करते हैं, अवेदक बोर्ड के साथ एक करार विहित प्रारूप में निष्पादित करेगा जिसमे वह जैसे ही गृह का निर्माण कर दिया जाता है और संपरित में पूर्ण हक हो जाता है, भूगि को उस पर निमित किए जाने के लिए गृह के साथ वन्धक करने का करार करेगा।
  - (3) अग्निम की मंजूर रकम मो से भूमि के कय के लिए वी गयी किस्त की कटौती करने के पहचात अवशिष्ट रकम क 40 प्रतिहात के समतृष्य रकम तब संदेय होगी जब गृह का मंनिर्माण प्लिथ की अंचाई तक पहुंच गया हो ।

- (4) मंजूर अग्निम का अतिशोष तब संदेय होगा जब गृह का संनिर्माण छत की ऊचाई तक पहुच गया हो।
- (2) केंबल एक मंजिले नए गृहु का संनिर्माण या किसी बिद्य-मान गृह मं निवास स्थान की वृद्धि करने के लिए अपेक्षित अग्निम निम्निलिख्ति रूप मं संदह्त किया जाएगा:—
  - (1) मंजूर अग्रिम के 40 प्रतिकात के समतुल्य रकम आवेदक को, उसके द्वारा क्रय की गयी भूमि को, उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह के साथ बोर्ड के पक्ष में उस के द्वारा बंधक किए जाने पर जहां ऐसा बंधक भूमि के दिक्य के निबन्धनों द्वारा अनुज्ञात हो, संदत्त किया जाएगा । ऐसे मामलों में जहां विक्रय के निबंधन जब तक भूमि पर गृह बना न दिया जाए केता में हक निहित नहीं करते हैं । आवेदक बोर्ड के साथ एक करार विहित प्रष्प में निष्पादित करेगा जिसमें वह जैसे ही गृह का निर्माण कर दिया जाता है उस पर और संपत्ति में हक पूर्ण हो जाता है भूमि को उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह सहित बन्धक करने का करार करेगा ।
  - (2) मंजूर अग्रिम के 40 प्रतिशत से अनिधिक और रकम तब संदेय होगा, जब गृह प्लिंध की ऊषाई तक पहुंच गया हो।
  - (3) बचा हुआ 20 प्रतिशत मंजूर अग्रिम तब संदेश होगा जब गृह छत की ऊंचाई तिक पहुंच गथा हो ।
- (3) भागतः भूमि का ऋय करने के लिए और भागतः दो मंजिले नए गृह का संनिर्माण या किसी विव्यमान गृह में आवास स्थान की वृद्धि करने के लिए अपेक्षित अग्निम निम्नलिखित रूप में संदर्श किया जाएगा,—
  - (1) मंजूर अग्रिम के 15 प्रतिशत से अनिधक रकम आवंदक को भूमि एसे विकसित फ्लैंट का ऋथ करने के लिए जिस पर उधार की प्राप्ति की ज़ारीख से तुरत्त संनिर्माण प्रारम्भ किया जा सकता है, आवेदक व्यारा अग्रिम के प्रतिसंवाय के लिए विहित प्ररूप में करार निष्पादित किए जाने पर संदेय होगी । ऐसे सभी मामले, जिनमें अग्रिम का भाग भूमि का ऋय करने के लिए दिया गया है, उस तारीख से दो मासों के भीतर जिसको उपरोक्त 15 प्रतिशत रकम ली गयी हो या ऐसे अतिरिक्त समय के भीतर जैसा अध्यक्ष इस निमित्त अन्जा दे भूमि को ऋय किया जाना चाहिए और उसकी बावत विऋय विलेख निरीक्षण के लिए अध्यक्ष को प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिसके न हो सकने पर आवेदक बोर्ब की संपूर्ण रकम उन पर ब्याज सिहता तुरन्त बापस करने के लिए दायी होगा ।
  - (2) अग्रिम के अतिशोष के 25 प्रति शर्त के समतुल्य रकम आधेदक को, उसके ब्रारा ऋय की गई भूमि को उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह के साथ, बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा बंधक किए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विक्रय निबंधनों द्वारा अनुज्ञात है, संदेय होगी। ऐसे मामलों में, जहां ऐसा बंधक अनुज्ञात नहीं है, बिनि-धम 7 के उपविनियम (1) के खण्ड (2) में अन्तर्विष्ट उपबन्ध लागू होगा।
  - (3) अग्रिम की मंजूर रकम में से, भूमि के ऋय के लिए दी गयी किस्त की कटौती करने के पश्चात् अविशष्ट रकम के 30 प्रतिश्वत के समत्र्ल्य रकम तब संदेय होगी जब गृह का संनिर्माण प्लिथ की ऊंचाई तक पहुंच गया हो।

- (4) अग्निम की मंजूर रकम में से, भूमि के क्रय के लिए दी गयी किस्त की कटौती करने के पश्चात् अवशिष्ट रकम के 25 प्रतिशत में अगिधिक और रकम तक सदय होगी जब पहली मंजिल की छत डाल दी गयी हो।
- (5) मंजूर अग्निम का अतिशंघ तब संदेय होगा जब दूसरी मंजिल की छत डाल दी गयी हो।
- (4) क्रेबल दो मंजिले नए गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह में आवास स्थान की वृद्धि के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्न-लिखित रूप में संदत्त किया जाएगा, अर्थात् :—
  - (1) मंजूर किए गए अग्निम के 25 प्रतिशत के समतुल्य रकम आबदक को, उसके द्वारा ऋय की गयी भूमि को उम पर बनाए जाने वाले गृह के साथ बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा बंध किए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विऋय के गिबंधनों द्वारा अनुआत है, संदेय होगी । ऐसे मामलों में, जहां ऐसा बन्धक अगुज्ञात नहीं है, विनि-यम 7 के उपिविनियम (2) के खण्ड (1) में अन्तर्विष्ट उपबन्ध लाग् होगा।
  - (2) मंजूर किए गए अग्रिम के 30 प्रतिशत से अमिधक और रकम तब संदेय होगी जब गृह प्लिंथ तक पहुच गया हो।
  - (3) मंजूर उधार के 25 प्रतिशत से अनिधिक और रकम तब संदेय होगी जब पहली मंजिल की छत डाल दी गयी हो ।
  - (4) मंजूर अग्निम की अवशिष्ट 25 प्रतिशत रकम तब संदेय होगी जब दूसरी मंजिल की छत डाल दी गयी हो।
- (5) पहले से निर्मित गृह का ऋय करने के लिए अपिक्षत अग्रिम निम्नतिस्ति रूप में संदत्त किया जाएगा .—

अध्यक्ष आवेदक द्वारा अपेक्षित और उसे अनुज्ञेय सम्पूर्ण रकम का संवाय आवेदक द्वारा उधार के प्रतिसंदाय के लिए, विहित प्ररूप में एक करार निष्पादिस किए जाने पर एक म्हत मंजूर कर सकता है। गृह का अर्जन उधार के निकाले जाने के तीन मास के भीतर पूर्ण किया जाना चाहिए और गृह लोडें को बंधक किया जाना चाहिए, जिसके म हो सकने पर अग्रिम, उस पर ब्याज सहित, जब तक कि उस समय सीमा का विस्तार अध्यक्ष द्वारा अनुजात न किया गया हो, बोर्ड को तुरन्त वापस किया जएगा।

- (6) नए फ्लैंट का ऋय/संनिर्माण करने के लिए अपेक्षित अग्रिम निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जाएगा :—
  - (क) अध्यक्ष आवेदक द्वारा अपेक्षित और उसे अनुज्ञंय रकम के संदाय की मंजूरी आवेदक द्वारा विहित प्ररूप में एक करार निष्पादित किए जाने पर और उधार के प्रति-संदाय के लिए नीचे के उपनियम 6(रू) (2) में अन्त-विष्ट उपबन्धी का पालन करने पर द सकेगा । रकम या तो एक मुक्त या अध्यक्ष के विवेक पर उपस्कत किस्तों में संवितरित की जा सकेगी। आवेदक द्वारा इस प्रकार निकाली गयी रकम या इस प्रकार निकाली गयी किन्त/ किस्तों को उसी प्रयोजन के लिए जिसके लिए बह निकाली गयी है, अग्रिम या किस्त/किस्तों के निकाले जाने के एक मास के भीतर उपयोग में लाया जाएगा जिसके न हो सकने पर इस प्रकार संवित्तरित अग्निम या अग्रिम का भाग, उस पर ब्याज सहित, जय तक कि उस समय सीमा का विस्तार अध्यक्ष द्वारा विनिर्दिण्ट रूप मंजूर न किया गया हो, बोर्ड को स्रन्त वापस किया जाएगा ।

- (स) (1) उनके द्वारा ऊपर के सण्ड (क) में निर्दिष्ट करार और बंधक विलेस निष्पादित किए जाने के अतिरिक्त निम्निलिसित तीन प्रवगों के आवेदकों से मंजूर अग्निम या उसके किसी भाग को उन्हें बास्तव में संवित्तरित किए जाने के पूर्व बोर्ड के किसी अनुमोदित स्थायी कर्मचारी की प्रतिभृति विहित प्रकृप में देने की भी अपक्षा की जाएगी, अर्थात्:—
  - (1) ऐसे सभी आवेदक, जो बोर्ड के स्थायी कर्मचारी नहां हैं,
  - (2) ऐसे सभी आवंदक जो किसी अग्निम के अन्दान के लिए आवंदन की तारीख के पश्चात्वती 18 मासों की अधिष के भीतर सेवा में निवृत्त होने वाले हैं।
  - (3) ऐसे सभी आवेदक, जो बोर्ड के स्थायी कर्मचारी है किन्तु जो ऊपर के खण्ड (2) की परिधि में नहीं आतं है यदि वे पूर्व निर्मित गृह का ऋय करने के लिए अग्निम की अपक्षा करते हैं।

दिष्पण .—(1) फ्लैटो का संनिर्माण के लिए या पहले से मंनिर्मित फ्लैटो का ऋय करने के लिए आवेदक को , ऊपर के खण्ड (क) और (ख) (1) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों का अनुपालन करने के अतिरिक्त , जब भी वह भूमि , जिस पर फ्लैट बने हों , भूमि के स्वामी द्वारा अग्रिम के प्रतिसंदाय के लिए प्रतिभूति के खप में बोर्ड के पक्ष मं बन्धक न की गयी हो गाधारण वित्तीय नियमों के संग्रह के नियम 274 के अधीर यथा अधिकथित पर्याप्त संपार्शिवक प्रतिभृति अध्यक्ष के समाधानप्रद रूप में देनी चाहिए ।

- (2) प्रतिभूति का दायित्व संनिर्मित/कय किए गए गृह के बोर्ड को बंधक रहने तक या अग्रिम का उन पर देय ब्याज सहित, बोर्ड को प्रतिसंदाय किए जाने तक, उसमें से जो भी पहले हो, जारी रहेगा।
- (3) अग्निम का उस प्रयोजन से भिन्न जिसके लिए वह मंजूर किया गया है किसी अन्य प्रयोजन के लिए उपयोग कर्मचारी को स्कूरंगत आचरण विनियम के अधीन या कर्मचारी को लागू सेवा के किन्हीं अन्य विनियमों के अधीन उपयुक्त अगुशासिनक कार्यवाही के दायित्थाधीन बनाएगा । उससे, उसके द्वारा लिया गया संपूर्ण अग्निम, उस पर उद्भूत ब्याज महित, इन विनियमों के विनियम 8 के अनुसार तुरन्त बोर्ड को वापस करने के लिए भी कहा जा सकेगा ।
- (4) विनियम 7 के उपियनियम (1) (1) और (3) (1) में निर्दिष्ट भूमि के विकित्सत फलेटों की बाबत विक्रय विलेख प्रस्तृत करने की अविधि में विस्तार अध्यक्ष द्वारा अपना यह समाधान करने के पश्चात् किया जा सकेगा कि आवेदक ने भूमि की लागत या तो पहले ही सदत्त कर दी है या तुरन्त संदेश किए जाने की संभावना है, समय सीमा का विस्तार उसे भूमि के लिए हक/पट्टा धृति अधिकार अर्जित करने में समर्थ बनाएगा, और उसका गृह निर्माण करने का पूर्ण आशय है और बहु अग्रिम की प्रथम किस्त के निकाले जाने की तारीक के पश्चात् 18 मासों में या ऐसी अविध में जिस तक गृह को पूर्ण किए जाने के समय का जिस्तार विनियम 9 के उपिविनयम (क) खण्ड (2) के अधीन किय गया है, गृह का संनिर्माण पूर्ण करने की स्थित में होगा ।
- 8. ब्याज :—इन विनियमों के अधीन अनुदत्त अग्निम पर, अग्निम के संदाय की तारीख से, साधारण ब्याज लगेगा । ब्याज की रकम प्रतिमास की अंतिम नारील को वकाया अतिशेष पर संगणित और जैसा समय-समय पर, बोर्ड द्वारा नियत किया जाए, होगी किन्त केन्द्रीय सरकार द्वारा, समय-समय पर अपने कर्मचारियों के लिए वैसे ही अग्निमों के लिए प्रभारित दर से कम नहीं होगी ।

- 9 संनिर्माण रख-रहाव आदि.—(क) यथास्थिति गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह मं निधाम स्थान में वृद्धि (1) उस अनुमोदित रखांक और विनिर्दाशों के ठीक ठीक अनुरूप की जाएगी जिसके आधार पर अग्निम की रकम संगणित और मंजूर की गई थी। रखांक और विनिर्देशों से कोई अन्तर बोर्ड की पूर्व सम्मति के बिना नहीं किया जाना चाहिए। कर्मचारी जब यह प्लिथ/छत की ऊंखाई तक बास्तव में पहुंच गया है और पहले निकाली गयी रक्षम गृह के मंगिर्माण में वास्तव में उपयोग में लाई गयी है। अध्यक्ष यदि आवश्यक समक्रे, प्रमाणपत्रों की मत्यता के सत्यापन के लिए जांच किए जाने की व्यवस्था कर सकेगा।
  - (2) उस तारीख सं, जिसको अग्निम की किन्त संबंधित कर्मचारी को संदर्त की गयी है, 18 मास के भीतर पूरी की जाएगी। ऐसा न किए जाने पर कर्मचारी उसे अग्निम दी गयी संपूर्ण रक्षम उन पर ऊपर के विनियम 8 के अग्नुसार संगणित ब्याज सहित एक म्हत धापम करने का दायी होगा। समय सीमा में किसी विस्तार की अग्नुजा अध्यक्ष व्यारा एक वर्ष के लिए और बोर्ड द्वारा दीर्घतर अविध के लिए उन मामलों में दी जा सकेंगी जहां कार्य में विलम्ब कर्मचारी के नियंत्रण के बाहर की परिस्थितियों के कारण हुआ हो। सीनर्माण के पूरा होने की गारीख की रिपोर्ट अध्यक्ष को अधिलम्ब की जानी चाहिए।
    - (स) यथास्थिति गृह कं पुण होने या ऋष किए जाने पर त्रन्त संबंधित कर्मचारी गृह का बीमा, अपने स्थयं हो के सर्ची पर, भारत के जीवन बीमा कम्पनी के साथ या किसी रजिस्ट्रीकत सामान्य: बीमा कंपनी के साथ ऐसी राज्ञि के लिए कराएगा जो अग्निम की रकम से कम न हो और उसे आग, बाढ़ और बिजली गिरने के कारण हानि के विष्वुध तस तक इस प्रकार सीमा-कत कराए रसंगा जब तक कि अग्रिम ब्याज महित, बोर्ड की पूर्णत: न प्रतिमंदत्त कर दिया जाए और पालिसी को बोर्ड के पास निक्षिप्त रखेगा । प्रीमि-यम नियमित रूप से संदत्त किया जाना चाहिए और प्रीमियम की रसीद समुचित प्राधिकारी, उदाहरणार्थ अध्यक्ष दबारा निरीक्षण किए जान के लिए प्रस्त्त की जानी चाहिए । कर्मचारी की आर स जाग, बाढ़ और बिजली गिरने के विरुद्ध बीमा कराने में असफलता पर बोर्ड के लिए संबंधित कर्मचारी की लागत पर उक्त गह का थीमा कराना और प्रीमियम की रकम को अग्रिम की बकाया रकम में जोड़ना विधि सम्मत होगा किन्त् बाध्यताकारी नहीं होगा और कोई कर्मचारी जब तक रकम बोर्ड को प्रति-मंदला नहीं कर दी जाती उस पर ब्याज की चाल दर पर ब्याज का संदाय करने के लिए वैसे ही दायी होगा मानों प्रीमियम की रकम उपरोक्त अग्रिम के भाग के रूप में अग्निम दी गयीथी। अध्यक्ष विधिक मलाहकार एवं म्ह्य लेखा अधिकारी अग्रिम निकालने वाले कर्मचारी से उस बीमाकर्ता के लिए जिसके साथ गृष्ठ का बीमा किया गया (प्रकृप सं. यथाविहित) एक पत्र पश्चात्वती को यह तथ्य स्चित करने के लिए अभिप्राप्त करेगा कि बोर्ड लो गयी बीमा पालिसी में हितबद्ध है, अध्यक्ष/वित्तीय सलाहकार एवं ग्रूप लेखा अधिकारी बीमाकर्ता के निए अग्रीयत करेगा और उसकी अभिस्वीकृति प्राप्त करेगा । वार्षिक आधार पर प्रभावी भीमा के मामले में यह प्रक्रिया तब तक दुहराई जानी चाहिए जब तक

- अग्निम की सम्पूर्ण रकम बोर्ड को प्रतिसंदत्त न कर दो जाए।
- (ग) गृह को संबंधित कर्मचारी को अपने स्वयं के खर्चे पर अच्छी भरम्मत हालत में रखना चाहिए। वह उसे सभी चिल्लंगमों से मुक्त रखना और जब तक अग्निम बोर्ड को पूर्णतः प्रतिसंदत्त न कर दिया जाए सभी नगरपालिक और अन्य स्थानीय रेट और कर निय-मित रूप में संदत्त करता रहेगा।
- (घ). गृह के पूर्ण होने के पश्चात् उसके वार्षिक निरीक्षण अध्यक्ष के अनुदेश के अधीन किसी प्राधिकृत अधि-कारी द्वारा यह सूनिरिचत करने के लिए किए जा सकेंगे कि उसे जब तक अग्रिम का पूर्ण रूप से प्रति-संदाय नहीं कर दिया जाता है अच्छी मरम्मत की दशा मे रखा गया है। संबंधित कर्मचारी इस प्रयोजन के लिए अभिविहित अधिकारी (अधिकारियों) द्वारा ऐसे निरीक्षण करने के लिए आदृश्यक स्विधाएं देगा।

हिष्पण.—िमिध्या प्रमाणगत्र देना संबंधित कर्मचारी की, उसे लागू सेवा के विनियमों के अधीन अन्दासिनक कार्यवाही के लिए दायी बनाएगा । उससे, उसके द्वारा निकाले गए सम्पूर्ण अग्रिम को उस पर उद्भूत ब्याज सहित इन विनियमों के विनियम 8 के अनुसार बोर्ड को तुरन्त बापस करने के लिए भी कहा जा सकेगा।

10. अग्निम का प्रतिसंदाय — (क) इन विनियमों के अधीन किसी कर्मचारी को अनुदत्त अग्निम, उन पर ब्याज सहित, 20 वर्षों के अनिधक अवधि के भीतर मासिक किस्तों में पूर्णतः प्रतिसंदत्त की जाएगी । प्रथमतः अग्निम की वसूली 180 मासिक किस्तों से अनिधक मा की जाएगी और तब ब्याज 60 मासिक किस्तों में अनिधक मा बसूल किया जाएगा।

दिष्यण -- (1) मासिक रूप में बसूल की जाने वाली रकम पूण रूपयों में नियत की जाएगी, सिवाय अंतिम किस्स के मामले में , जब अविशिष्ट अतिशोष , जिसमें रूपए का कोई भाग सम्मिल्लित है बसूल किया जाएगा ।

- (३) भागतः भूमि का क्रय करने के लिए और भागतः मंनिर्माण के लिए अन्दत्त अग्निम की बस्नी गृह के पूर्ण होने के पश्चात्वती, माम के बेतन से या उस तारीख के पश्चात् के जिसको भूमि का क्रय करने के लिए किसन कर्मचारी को संदन्त की जाती है 24वें मास के बेतन से, इसमें में जो भी पूर्ववती को प्रारम्भ होती। किसी नए गृह के संनिर्माण के लिए या किसी गिद्धमान गृह के निवास-स्थान की दृद्धि के लिए अगुदत्त अग्निम की बसूनी गृह में पूर्ण होने के पश्चात्वती मास के बेतन से या उस तारीख के पश्चात् जिसको कर्मचारी की अग्निम की प्रथम किन्स मंदत्त की जाती है, 18वें मास के बेतन से इसमें जो भी पूर्ववती हो, प्रारम्भ होगी। पहले ही निर्मित गृह का क्रय करने के लिए, दिए गए किसी अग्निम के मामले में बसूनी उस मास के पश्चात्वती मास के बेतन से प्रारम्भ होगी जिसमें अग्निम लिया गया है।
- (3) कर्मचारी रक्षम का संदाय किसी लघुतर अविध में करने के लिए, यदि वह ऐसा करना चाहे, स्वतन्त्र होगा । किसी भी मामले में संपूर्ण अग्रिम उस तारीख़ के पूर्व, जिस्को वे सेया-निवृत्त होने बाले हों, पूर्णतः (उस पर ब्याज महिता) प्रतिसंदत्त किया जाना चाहिए ।
- (4) किसी ऐसे कर्मचारी को, जो अग्निम के अनुवान के लिए अविदन की तारीख से भीस वयों के भीसर सेवा निवृत्त होने बाला हो और जो उसे लागू सेवा विनियम के अधीन किसी उपदान या मृह्य और सेवा निवृत्ति उपदान के अनुवान के लिए पात्र हो

असम्यक कठोरता से बचने के लिए अध्यक्ष उसे, उसकी सेवा की बची हुई अविध के दौरान सुविधाजनक मासिक किस्तों में (किस्तों की रकम उससे कम नहीं होगी जो बीस वधीं की अविध के भीतर प्रतिसंदाय को आधार पर निकाली गयी हो) अग्निम का, ब्याज सिंहत, प्रतिसंदाय करने की अनुजा दे सकगा परन्तू यह तब जब कि वह चिहित करार और बन्धक विलेख प्ररूप में इस प्रभाव का कोई उपयुक्त खण्ड सिमिलत किए जाने के लिए सहमत हो कि बोडें उक्त अग्निम का अतिशेष, ब्याज सिंहत, जो उसक सेवा निवृत्ति या संवानिवृत्ति के पूर्व मृत्यु के समय असंदत्त रह ग्या हो उसके सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से, जो उसे मंजूर किया जाए, वसूल करने के लिए हकदार होगा।

- (5) ऐसे मामले में, जहां कर्मचारी बोर्ड को दिए गए अग्रिम का अतिशेष उसकी सेवा निवृत्ति को तारीख के पूर्व प्रतिसंदत्त नहीं करता है तो बोर्ड तत्पश्चात किसी समय बंधक की प्रतिभूति को प्रवृत्त करने के लिए और दिए गए अग्रिम के अतिशेष को, ब्याज और वसूली की लागत सिहत, गृह का विकथ कर या ऐसी अन्य रीति सं, जो विधि के अधीन अनुझेय हो, वसूल करने के लिए स्वतन्त्र होगा।
- (ख) अग्रिम की वसूली यथास्थिति अध्यक्ष या संबंधित वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखाअधिकारी द्वारा संबंधित कर्मचारी के मासिक वेतन/छुट्टी वेतन/निवाह भत्त बिलों के माध्यम से का जाएंगी । वसूली अध्यक्ष की पूर्व सम्मति के सिवाय विधारित या रोकी नहीं जाएंगी । कर्मचारी के लम्बे निलंबर पर होने के कारण, संवेय निर्वाह भत्ता में कभी कर दिए जाने की दशा में वसूली में अध्यक्ष द्वारा, यदि वह आवश्यक समके, उपरोक्त रूप में कमी की जा सकेंगी।
  - (ग) यदि कोई कर्मचारी अग्रिम का पूर्ण रूप से प्रतिसंदाय किए जाने के पूर्व सामान्य सेवा निवृत्ति/अधिवधिवता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रह जाता है या यदि उसकी मृत्यु हो जाती है तो अग्निम की सम्पूर्ण बकाया रकम बोर्ड को त्रन्त संदेय हो जाएगी बोर्ड उपरोक्त मामलों में यथास्थिति सम्बन्धित कर्मचारी उसके हित उत्तराधिकारी को या बिनियम 7(ख) के अन्तर्गत आने बाले मामले में प्रति-भूओं को, यदि उस समय तक गृह पुरा नहीं किया गया है, या बोर्ड को बन्ध नहीं किया गया है, बकाया रक्तम को, विनियम 8 के अनुसार संगणित उन पर ब्याज सहित, उपयुक्त किस्तों में प्रतिसंदत्त करने के लिए अनुजा दे सकेगा। किसी भी कारण से अग्रिम के प्रित्सिंदाय के लिए (यथास्थिति) सम्बन्धित कर्म-चारी या उसके उत्तराधिकारियों की और से कोई असफलता बोर्ड को बन्ध को प्रवृत्त करने के लिए और बकाया रकम की वसूली करने के लिए ऐसी अन्य कार्य-वाही करने के लिए, जो अनुज्ञेय है, हकदार बना-एगी ।
  - (घ) बोर्ड को बन्धक की गई सम्पत्ति, अग्रिम का, उन पर ब्याज सहित, बोर्ड को पूर्ण रूप से प्रतिसंदाय कर दिए जाने के पश्चात् सम्बन्धित कर्मचारी का (या यथा-स्थिति उसके हित उत्तराधिकारियों को) विहित प्ररूप में प्रतिहस्तांतरित की जाएगी।
  - आबेदनों पर कार्यवाही करने की प्रक्रिया :—(क) आवेदन कर्मचरियों ब्रारा अध्यक्ष को विहित प्ररूप में (दो प्रतियों में) उचित प्रणाली से दी जानी चाहिए।

- आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेजें होंगी, अर्थात् :--
- (1) आवेदन करने के समय आवेदक के या आवेदक की पत्नी/पति/अवयस्क सन्तानों के स्वामित्वाधीन यदि काई ग्रह/समपत्ति हो, उसकी बाबत घोषणा,
- (2) यदि अग्रिम किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि के लिए अपेक्षित है तो विक्रय विलेख की, साथ ही ऐसी अन्य दस्तावेजों की यदि कोई हो, एक प्रमाणित प्रति जो यह सिद्ध करती हो कि आवेषक प्रकारत सम्पत्ति में अविवाद्य हक रखता है। स्थान रेखांक भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- (3) ऐसे मामले में, जहां आवेदक का भूमि पर कब्जा है और वह उस पर नए गृह का निर्माण करना चाहता है वहां विक्रय विलेख की एक प्रति या उस भूमि पर, जिस पर गृह निर्माण किए जाने की प्रस्थापना है, आवेदक के स्पष्ट हक रखने का अन्य सबूत, स्थल रेखोक के साथ यदि वह भूमि पट्टाशृति हो तो पट्टा विलेख की एक अनुप्रमाणित प्रति भी उपाबद्ध की जानी चाहिए।
- (4) ऐसे मामले में जहां आवेदक भूमि का अय करना चाहता है, प्लाट के विकंता का इस प्रभाव के पत्र की एक अनुप्रमाणित प्रति कि व्यवस्थापन और कीमत के संदाय किए जाने के अधीन रहते हुए वह उसके पत्र की तारीख से वो मास की अविध के भीतर आवेदक की भूमि के स्पष्टतः सीमांकित विकसित प्लाट का रिक्त कब्जा हस्तांतरित करने की स्थिति में है, अग्रेषित की जा सकेगी।
- (5) ऐसे मामलों में, जहां आवेदक कोई पलैंट कय करना चाहता है, पर्लंट के विक्रेता से इस प्रभाव के पत्र, की एक अनुप्रमाणित प्रति की व्यवस्थापन और कीमत का संदाय किए जाने के अधीन रहते हुए वह उसके पत्र की तारीख से दो मास की अवधि के भीतर आवेदक को स्पष्टत: सीमांकित फ्लंट का रिक्त कब्जा हस्तांत्रित करने की स्थिति में है, अग्रेषित की जा सकेंगी।
- (ल) विभागों के अध्यक्ष आवेदक की जांच करेंगं और उसमें किथत तथ्यों आदि की सुरक्षा के बारे में अपना समाधान करेंगे। वे ऊपर के उप विनिधम (क) का अनुपालन करने में किए गए हक विलेखों, आदि से यह भी सुनिदिचत करेंगे कि आवेदक प्रस्तात सम्पत्ति में स्पष्ट हक रखता है। यह करने के परचात् विभागों के अध्यक्ष आवेदनों को, अपनी सिफारिशों के साथ, अध्यक्ष को अग्रेषित करेंगे।
- (ग) अध्यक्ष का कार्यालय, निधि के उपलभ्य होने के अध्य-धीन रहते हुए, आवेषनों पर कार्यवाही करने के लिए अधिकधित पूर्विकक्ताओं, आदि, यदि कोई हों, के प्रति निवेश से आवेदनों की परीक्षा करेगा।
- (घ) (1) अनुमोदन के पहचस् नीचं के उप-विनियमों (ङ) की परिधि में अने वाले मामलों में किसी अग्नि के अनुदान की प्रारुपिक मंजूरी अध्यक्ष द्वारा दी जाएगी, जो बोर्ड द्वारा अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार विधि अधिकारियों और राजस्व सथा रिजस्ट्रीकरण प्राधिकारी में परामर्श करके अपना यह समाधान करेगा कि

आवेदक, विल्लंगमों और कुर्कियों से मुक्ति रूप में सम्पत्ति पर वास्तव में स्पष्ट और विषण्य हक रखता है। अध्यक्ष विहित प्रारूपिकताओं का जैसे कि करार, बंधक विलेख, प्रतिभृति बंधपत्र, आदि का निष्पादन करता है जहां आवश्यक हो, समुचित विधि/प्राधिकारी से परामर्श करके बिहित प्ररूप में परा करने की व्यवस्था करेगा और जब मंज्र अग्रिम की समिषित रकम की आवेदक को सजित-रित करने को प्राधिकत करेगा। जहां भूमि या पहले से निर्मित गृह का ऋय अग्रिम की सहायता से किए जाने का आशय हो वहा अध्यक्ष अग्निम का संदाय प्राधिकृत करने के पूर्व सम्बन्धित कर्मधारी से यह प्रमाणित करने की अपेक्षा भी कर सकेगा कि ऋय के लिए बातचीत अन्तिम प्रक्रम में पहुच गई है, ऋय का कीमतों के भंजुर अग्निम की रक म से कम होने की सम्भावना नहीं है और उसने अपना यह समाधान कर लिया है कि संव्यवहार उसे प्रश्नगत भूमि/गृह के लिए विवास हक अर्जित करने में समर्थ बनाएगा ऐसे मामलों में क्रय विलेख आदि की परीक्षा अध्यक्ष द्वारा (जहां आवश्यक हो विधि और अन्य प्राधिकारियों से परामर्श करके) स्निश्चित करने के लिए सावधानीप्र्वक करनी चाहिए कि सम्बन्धित कर्मचारी ने प्रश्नगत सम्पत्ति में अविवासक हक फ्लेटों के माभली में भूमि केप्लाट के लिए हक को अप-विजिल करते हुए वास्तव में अिंजर कर लिया है। यह भी सत्यापित किया जाना चाहिए कि कय की गई भूमि /गृह का बाजार मृल्य मंज्र अग्निम से कम नहीं है।

(2) अध्यक्ष किमी नए गृह का संनिर्माण करने या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि करने के लिए इच्छुक आवेदकों की रेखाकी साथ ही विनि-देंशों और प्राक्कलनों की दो प्रतियां बिहित प्ररूप में प्रस्तुत करने का अन्देश देगा । रेखांकी को अध्यक्ष को प्रस्तुत किए जाने के पूर्व संबंधित नगर-पालिका या अन्य स्थानीय निकाय द्वारा सम्यक् रूप से अन्मोदित किया जाना चाहिए ।

(ड.) उपरोक्त उपविनियम (ख) (2) में निर्दिष्ट रेखांकी विनिदेशों और प्राक्कलनों को उस यिषय पर पूर्ववर्ती पत्राचारों के प्रति निर्देश से अध्यक्ष को निर्दिष्ट किया जाना चाहिए । अध्यक्ष वित्तीय सलाहकार एवं मरुय लेखा अधिकारी से परामर्श करके इन सभी क्यौरों की परीक्षा करने के पश्चात अग्रिम के अन्दान के लिए प्राकृषिक मंजरी देगा । अध्यक्ष उपरोक्त उपविनियम (घ) (1) में स्पष्ट की ग**ई सभी प्रारुप** किताओं का अन्-पालन भी करेगा और सब आवेदक को संनिर्माण के प्रयोजन के लिए अग्रिम की अवशिष्ट किस्तों का संवाय आवेदकों द्वारा दिए जाने वाले विनियम १(क) में यथाविहित प्रमाणपत्रों के और ऐसे अन्वेषणों के जो आवश्यक समभे जाएं, आधार पर सीधे अध्यक्ष द्वारा प्राधिकत किए जा सकेंगे। अग्रिम के अन्तिम किस्त के संवितरण के पूर्व यह भी सत्यापित किया जाना चाहिए कि स्थल का विकास पूरा हो गया है (देखिए उपरोक्स विनियम 7)।

टिप्पण :—विनियम 2 के उप-विनियम (घ)(1) या (ङ) में यथाविहित अग्निम की किसी किस्त का संवितरण प्राधिकृत करते समय अध्यक्ष इस प्रभाव का एक

- प्रमाण-एश संलग्न करेगा कि उन अपेक्षित प्रारुपिक-ताओं को, जिनके अनुसरण में किस्त देय हो गई हो, अनुपालन किया गया है।
- (च) अध्यक्ष यह भी सुनिश्चित करेगा कि संव्यवहार/गृह का संनिर्माण विनियमों में बिहित अविध के भीतर पुरा हो गया है, और—
  - (1) घिनियम 7 के उप-विनियम (1) और (3) की परिधि में आने वाले मामलों में (उन मामलों के सिवाय जिनमें विद्यमान गृष्टों में निवास स्थान की वृद्धि अंतर्वलित हैं) बिहित प्ररूप में करार, अग्निम की प्रथम किस्त का संवितरण किए जाने के पूर्व, संबंधित कर्मचारी द्वारा सम्यक् रूप से निष्पादित किया गया है और भूमि का क्रय किए जाने के पश्चात विक्रय विलेक विहित रूप में निष्पादित किया गया है और हस्तांतरण पत्रों के रिजस्ट्रार के कार्यालय में सम्यक्रूप से रिजस्ट्रीकृत किया गया है और उजिस्ट्रीकृत किया गया है और राजस्ट्रीकृत दिलेख भूमि के हक के मूल दस्तावेजों के साथ, अध्यक्ष के पास अग्निमों की दिवतीय किस्त के निकाले जाने वो पूर्व निक्षिपत किया गया है।
  - (2) विनियम 7 के उप-विनियम (2) और (4) की परिधि में आने वाले मामलों में और विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि को अन्तर्विलित करने वाले सभी मामलों में बंधक विलेख विहित प्ररूप में निष्पादित किया गया है और हस्तांतरण पत्रों के रिजस्ट्रीकृत किया गया है तथा अग्रिम की प्रथम किम्त के निकाले जाने के पूर्व रिजस्ट्रीकृत विलेख को, भूमि/गृह के हक के मूल दस्तावेजों के साथ, अध्यक्ष के पास निश्चित्त किया गया है।
  - (3) यिनियम 7 के उप-विनियम (5) की परिधि में आने वाले मामलों तथा उन मामलों में, जिनमें भिम के विकय के निबंधन, जब तक भूमि पर गृह बनान दिया जाए, कर्मचारी के हक निहित नहीं करते हैं, विक्रित प्ररूप में करार, मंजुर अग्रिम या उसके किसी भाग के संवितरण के पूर्व, निष्पादित किया गया है और अध्यक्ष के पास निक्षिप्त किया गया है। गृष्ठ का ऋय करने पर त्रन्त या गृह के बिना लिए जाने पर कर्मचारी के पक्ष में हक के निहित हो जाने के पदचात तरन्त विहित प्ररूप में बंधक विलेख निष्प-विक्ष किया जाएगा और हस्तांतरणपत्रों के रिजस्टार के कार्यालयों में रिजस्ट्रीकृत किया जाएगा। रिजः-स्ट्रीकृत विलेख, भूमि/गृह के हक की दस्तावेजों के साथ, अध्यक्ष के पास, विनियम 7 के उप-विनियम (5) की परिधि में आने वाले मामलों में अग्रिम के निकाले जाने के तीन मास के भीतर और इस उप-विनियम के अधीन आने वाले अन्य मामलों में कर्म-चारी के पक्ष में हक के निहिल होने की तारीख के और बंधक विलेख के रिजम्ट्रीकरण के लिए अपेक्षित समय के तीन मास के भीतर निक्षिप्त किया जाएगा ।
  - (4) विनियम 7 के उप-विनियम (8) (स) (1) की परिधि में आने वाले मामलों में प्रतिभृति बंधकपत्र मंजूर अग्रिम या उसके किसी भाग का संवितरण किए जान के पूर्व विहित प्ररूप में अनुमोदित स्थायी कर्मचारी द्वारा दिया गया है।

- (5) सभी उपरोक्त सामनों में कर्मचारी संध जिलेलों के निष्पादित किए जाने के पूर्व मम्पत्ति के लिए अपने विषण्य हुक को बोर्ड द्वारा दिहित प्रक्रिया के अन-सार सिद्ध करता है। ऐसे मामलों में जहां विक्रय के निबंधन, जब तक भृमि प्रमृहन बना किया जाए, कर्मचारी के पक्ष में करार के निष्पादित किए जाने के पूर्व यह मुनिश्चित किया जाएगा कि कर्म-चारी गृष्ठ बना लेने पर सभी विल्लंगमों और क्कि भों से मुक्त रूप में , स्पष्ट और विषण्य हुक अर्िजत करने की स्थिति में होगा।
- (6) बन्धक विलेख (और बन्धक से सम्पत्ति निर्माचित या प्रति-हस्तांतरित होने पर प्रति-हस्तांतरण विलेख) भारतीय रविस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (†1908 की 16) की धारा 23 की अपेक्षा अन्माएँ उसके निष्पादित किए जाने की तारीस से चार साम के भीतर सम्यक् रूप से रिजस्टोकृत किया जाता है और इन उपबन्धों के अन्सरण में कर्मचारी द्वारा निक्षिप्त सभी दस्तावेजों बन्धे से सम्पन्ति के निमी चित या प्रति हस्तांतरित किए जाने तक स्रक्षित अभिरक्षा में रखी जाती हैं (इन विनियमों में विहित प्रतिभामि बन्धपत्रों और करारों के मामलों में रजि-म्ट्रीकरण आवश्यक नहीं है),
- (१) गह उसके ऋय के किए जाने पर किए जाने पर तरन्त उपरोक्त विनियम १(स) में उपदर्शिंग रीति में कीमाकृत किया जाता है और प्रीमियम की रसीदें नियमित रूप से निरीक्षण के लिए प्रस्तुत की जाती हैं।
- (8) जब तक अग्रिम पूर्णतः प्रतिसदत्त नहीं कर दिया है गृह अच्छी मरम्मत की हालत में रखा जाता है और आवश्यक बीमा प्रीमियम, नगरपालिक रैटें और कर नियमित रूप में संदत्त किए जाते हैं और अपे-क्षित प्रमाणपत्र बार्षिक रूप से प्रस्तत किए जाते हैं.
- (9) अग्रिम के प्रतिसंदाय की किस्तों की मासिक वस्ली सम्यक् तारील से प्रारम्भ होती है और तत्परचात् संबंधित कर्मधारी के मासिक वेतन/छुट्टी वेतन/ निर्वाह भत्ता बिलों से नियमित रूप से की जाती हैं,
- (10) ऐसे कर्मचारी के मामलों में जिसके लिए उसके आवे-दन की तारीख से अट्ठारह मास के भीतर सेटा निवृत्त होने की संभावना हो (विनियम र(स) देखें) उसके उपदान की रकम पर्याप्त होनी जाहिए जिससे उसकी सेवा-नियुत्ति की तारीख के ठीक पर्व उसके प्रति बकारा अग्रिम के अतिशेष की पराकियाजासके।

- (11) उपगत ब्यय से अधिक निकाली गई रकम, उस पर देय ब्याज सहित, यदि कोई हो, त्रस्त बोर्ड को भम्बन्धित कर्मचारी द्वारा प्रतिवत्त की जाती है ।
  - (12) बोर्ड को बन्ध की कोई सम्पन्ति, अग्रिम और उसे पर ब्याज की पूर्ण रूप से प्रतिसंदाय करेने पर त्रन्त निमोचित था प्रतिहम्तांतरित की जाती है और बंध विलेख र स्थाका है। से रद्द किए। जाता है और भंबीधन कर्मचारी को भूमि भूगोतित के हुंबे के मूल दस्तावेजों सहित वापम किया जाता है।
- (छ) ज्याय और गृह को पूरा करने की प्रगति की देखरेख की लिए अध्यक्ष को समर्थन बनाने के लिए विभाग की अध्यक्ष त्रीमासिक विवरणियां भेजेगा जिसमें (1) इन विनियमों के अधीन उनके द्वारा उपगत व्यय के अंकों, (2) उन कर्मचारियों की हुंची, जिन्हें उस बैमासिक के दौरानं गृहं निर्माण अग्निम की अन्तिम किंस्त, संवितरित की गई थी, अनुमोदनों का प्रतिनिवेश देते हुए, और (3) पूरे किए गए गृहों की सूची दिशात करते हुए इस प्रकार भंजेगा जिससे वह उस त्रमासिक के, जिससे विवरणियों का सम्बन्ध है, पश्चात्वती महीनों के 10 दिन के भीतर अध्यक्ष के पास पहुंच जाए । शुन्य विवरणियों को भेजने की आवश्यकता नहीं है।

टिप्पण :- बस्तावेजों पर प्रभार्य स्टाम्प श्ल्क, यदि कोई हो, रजिस्ट्रीकरण फीसे और अन्य अ्यय जो विधिक और अन्य प्रारूपिकताओं को प्रा करने के लिए उपगत किए जाएं, कर्मचारी द्वारा अपने स्वयं के साधनों द्वारा निर्वहन किए जाएंगे।

गृहों के संनिर्माण आदि के लिए बोर्ड के कर्मचारियों की अग्रिम के अनदान विनियमित करने वाले नियमों के अ**धीन** विहित आयेदन का प्रारूप —

- 1. (क) नाम (मोटे अक्षरों में)
  - (स्त) पदाविध
  - (ग) वेसनमान
  - (घ) वेतनमान वेतन (भक्तों को छोड़कर किन्तु मंहगाई वैतन को, यदि कोई हो सम्मिलित करते हुए)—
- 2. (क) वह विभाग या कार्यालय जहां नियुक्त किया गया है ।
  - (स) विभाग का अध्यक्ष
  - (ग) वह कार्यालय जहां तैनात हो─

3 कृपया निम्नलिखित कथन करें :---

क्या आप बोर्ड के स्थायी या अस्थाई कर्मचारी है स्रौर बोर्ड के स्रधीन की गयी सेवा की स्रवधि

(क) ग्राप का स्थायी पद यदि जन्म की तारीख ग्रीर सेवा निवृत्त कोई हो। संबंधित कार्या-

लय ग्रौर विभाग का नाम

के दिन प्राय्

क्या ग्रापकी पत्नी/पति बोर्डका कर्मचारी है यदि हां तो ; उसके नाम पदाभिमान, स्मदि दी जाए

(स्रा) क्या स्नाप राज्य/केन्द्रीय सरकार के ग्रधीन कोई म्यायी नियुक्ति धारण करते हैं यदि हो तो विशिष्टियां दीजिएगा

[HIGHEROS 3 (1)]	_		नाट्य गर युग्यमः व्या		
4. क्या झाप या झापकी पत्नी/पति/झब करें:—	यस्क संतान पहले ही	किसी गृह की स्व	त्रामी हैं ? (विनियम 4(ग)	देखिए) यदि हां, तो कृप	या निम्नलिखित भथन
वह स्थान जहां यह स्थित है मही पता के साथ	फर्शीक्षेत्रफल (व	वर्गमीटर में )	उसका (लगभग) मूल्यांकन		गृह के स्थामित्व को सा गृह में निवास-स्थानों की के लिए कारण
1	2	<del></del> - ·	3		4
ं टिप्पणं:—— उपरोक्त स्पंस 1 में प्रारूप में) ग्रौर नेवांकों द्वारा, समृचित प्र			भरा जाना चाहिए। स्तंन	2 से 4 का समर्थंन विनिर्दे	शों, प्राक्कलनों (संखग्न
5. (क) क्या धापको नए गृह के निर्मा	ण के लिए म्रप्रिम की	<b>ग्रपेक्षा</b> है ? या	वे हो तो क्रुपया निम्नलिखित	उपर्वांशत करें (विनियम 5	देखिए)
संनिर्माण के लिए प्रस्थापित गृह की लगभग फर्शी क्षेत्रफल (वर्गमीटर में)			प्राक्ष्कलिन लागन		ख्या जिनमें श्रुग्निम को, संदक्त करने की प्रस्थापना
कथा वासकल (यमनाटर म) -	लागत व	निर्माण स्रोग की लागत	श्रपेक्षित ग्रग्रिम की रकम		
1	2	3 4	5		6
(ख) क्या भूमि प्रापके कब्जे में 					भ्रन्य स्थानीय प्राधिकारी ई हो) जिसको भ्रधिका- वह स्थिति है।
1		2	3	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	4
करे कि व्यवस्थापन क्रौर स्पष्ट रूप से सीमाकित (	लगभग क्षेत्रफल (वर्ग कीमन का संदाय कि वेकसित प्लाट का रिष	मीटरों में) कथि ए जाने के झधीन क कब्जा कर सर	त करें भौर प्लाट के विकेता गरहते हुए वह भ्रावेदन की	के एक पस्न की ग्रनुप्रमाणित सारीख को दो माम की ग्रव	ासत्य प्रतिलिपि संलग्न धिकेभीतर भूमिका
गृह में कमरों की संख्या (जीवालय स्तान-			 वांछित <b>युद्ध</b> ः	की विभिष्टयां	उन <b>वर्षों</b> की संख्या,
<b>गृह .भौ</b> ए रसो <b>ई</b> को छोड़कर)	क्षेत्रफल (वर्गमीटरों में)	यदि कोई ग्रांतिरिक्त मंजिर्ला जोड़ने की प्रस्थापन हो तो क्या नीव	कमरों की फर्मी क्षेत्र- सं० फल (वर्ग मीटरों में)	प्राक्कलित बांछित श्रप्रिम लागत की रकम	ि जिनमें प्रग्निम को ब्याज सहित प्रति- स्वित्त करने की प्रस्थापना है ।

पर्याप्त है मजबूत है

डिप्पण:--विश्वमान गृह का रेखांक म्रावेदन के साथ होता धाहिए। 887 GI/80—2

- 7. क्या आपको पहले से निर्मित गृह का क्रय करने के लिए अग्रिम की अपेक्षा है ?
- (क) (1) यदि हां, भीर यदि भापकी दृष्टि में पहले से ही कोई गृह है तो कृपया निम्नलिखित कथित करें :---

गृह की श्रीक-ठीक स्थिति	गृष्ट् काप्फर्शी क्षेत्रफल (क्पीमीटरों में)	गृह् की प्लिंथ क्षेत्र- फल (वर्ग मीटरों में)	गृह की लगभग भाग	गृह की नगर- पालिक मूल्यांकन	स्वामी <i>चा</i> नाम भौर पता		भ्रपेक्षित श्रप्रिम की रकम	वर्षी की संख्या 'जिल्मीं ग्रग्निम को क्याज संक्षित प्रतिसंदत्त किए जाने का प्रस्साय है
1	2	3	4	5	6	7	8	9

टिप्पण:--(i) भावेदम के माथ गृह का रेखांक होना चाहिए।

- (ii) क्या धापने यह समाधान कर लिया है कि संब्यवहार गृह के लिए धापकी धविवाद्य हक प्रजित करने में परिणस होगा ?
- (क) यदि भापकी दृष्टि में पहले से ही कोई गृह नहीं है तो भाप कैसे, कब भीर कहां उसे भणित करने की प्रस्थापना करते हैं ? निम्नलिखित उपविश्ति करें :---

षह लगभग रकम जिस तक धाप गृह का अप करने के लिए तैयार होंगे अपेक्षित ध्रिप्त भी लागत रकम वर्षों की संख्या जिनमें ध्रीप्तम को, व्याज सिंहत प्रतिसंदत्त किए जाने का ध्रस्ताव है।

1 2 3

टिप्पण:— उपरोक्त सद 7 (क) के सामने विनिर्विष्ट ब्योरे इस मामले में भी यथासंभव शीध्र दिए आगे चाहिए और किसी भी दशा में धाग्रिस की पूरी रकम निकाले जाने के पूर्व दिए जाने चाहिए।

8. क्या बह भूमि जिस पर गृह का सीनिर्माण किए जाने की प्रस्थापना है, स्वतंत्र धृति (फी होल्ड) या पट्टाधृति है ? यदि पट्टाधृति है तो निम्नलिखित कथित करें।

पट्टा की भविध विसनी भविध पहले व्यतीत हो क्या पट्टा की गर्ते भूमि की प्लाट के लिए संदत्त प्रीमियम प्लाट का वार्षिक किराया । सुकी है बोर्ड को बंधक किए जाने की भनुका देती है।

'टिन्यण :---पट्टाविकय किसेब की एक प्रति ग्रावेदन के साथ देनी चाहिए।

- (क) क्या भूमि/गृह के लिए आपका हक भिरिक्याद और विल्लंगमों से मुक्त है ?
  - (स) क्या आप अपने हक के समर्थन में, यदि अपेक्षित हा, मूल दस्तावेओं (विकय या पट्टा किलेस) प्रस्तृत कर सकते हैं ? यदि नहीं, सो उसके सिए कारणों का कथन यह उपविश्ति करते हुए करें कि आप कौन से अन्य वस्तावेजों का सब्त यदि कोई हो, अपने वाबे के समर्थन में दे सकते हैं । (उपरोक्त विनिम्ध 5(स) और 7(क) वेखिए)।
  - (ग) क्या वह परिक्षेत्र में जिसमें भूमि का प्लाट/गृह स्थित है, सड़क, जल प्रदाय, जल निकास, मल विकास, मार्ग, प्रकाश आदि जैसी आवश्यक सेवाएं हैं (कृपया स्थल रेसाक पूरे पते के साथ दें)।
- 10. यिव आप इस आवेदन की तारीख से 20 बर्ष के भौतर सेवा निवृत्त होने वाले हैं और उपकान या मृत्यु और सेवा-निवृत्ति उपकान के लिए पात्र हैं सो क्या आप करार प्रक्प/बन्धक विलेख में एक घोषणा देकर यह करार करते हैं कि बोर्ड आपकी सेवा-निवृत्ति या सेवा-निवृत्ति के पूर्व मृत्यु के समय असंदत्त रह गए उक्त अग्रिम के उत्तिशेष को, व्याज सहित, उस सम्पूण उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से, जो उसे मंजूर किया जगए, वस्त करने के लिए हकदार होगा ले

- 11. क्या चिनियम 7(ल) आपके मामलों में लागू है ? यदि हां तो निम्नलिखित कथन करें :—
  - (1) ऐसे स्थायी कर्मचारी का, जो आपके लिए प्रतिभृति देने के लिए रजामन्द है, नाम, पदारिभभान, वेसनमान, कार्यालय, विभाग आदि।
  - (2) वह सारीख, जिसको प्रस्ताबिस प्रतिभू सेवा-निवृत्त होने वाला हो ।
- 12. यदि आपने गृह या किसी निधासी प्लाट के संनिर्माण अर्जन के लिए अपने भिवष्य निधि से पहले ही अन्तिम रूप से रकम निकाली है तो कृपया निकाली गई रकम की विशिष्टियां, निकालने की सारीस और वह प्रयोजन, जिसके लिए अब गृह निर्माण अग्निम नियम के अधीन अपेक्षित रकम की अपेक्षा है, दें।

### घोषणा

- .1. मैं सत्यनिष्ठा से यह धोषणा करता हूं कि ऊपर उपदिशित विकास मदों के उत्तर में मेरे द्वारा दी गई जानकारी मेरी सबों-त्रम जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।
- 2. मैंने गृह के निर्माण अप्तदि के लिए बोर्ड के कर्मचारियों को अग्रिमों के अनुदान को विनियमित करने धाले मियमों को

पढ़ा है और उनमें दिए गए जिबन्धनों और शतो का पालन करने के लिए सहमत्त हो।

- 3. मैं प्रमाणिस करता हूं कि-
  - (1) मेरी पत्नी/मेरा पति बोर्ड का कर्मचारी नहीं है मेरी पत्नी/मेरा पति, जो बोर्ड का कर्मचारी है इन नियमों के अधीन अग्निम के लिए कोई आवेदन नहीं दिया है और/या प्राप्त नहीं किया है।
  - (2) न तो मैंने मेरी पत्नी/पित/अवयस्क संतान ने किसी गृह के अर्जन के लिए पहले किसी सरकारी स्रोत से (उदाहरणार्थ पुनर्वास विभाग या किसी केन्द्रीय या राज्य आवास स्कीम के अधीन) किसी उधार या अग्रिम के लिए कोई आवेदन दिया है और/या प्राप्त किया है या किसी गृह के अर्जन के सम्बन्ध में किसी भविष्य निधि से कोई अग्रिम लिया है या अन्तिम रूप से रकम निकाली है (उपरोक्त मद 12 भी वेखिए)।

\*विकल्प (विकल्पों) को जो लागून हो काट दें

(3) गृह का संनिर्माण जिसके लिए अग्निम के लिए आवेषन विया गया था, प्रारम्भ नहीं किया गया है।

िवभाग /कार्यालय जिसमें नियोजित है।

(आवेदन के विभाग के प्रधान द्वारा भरा जाना है) अध्यक को अग्रेषित

तारीख - - - - - - -

(1) मैंने इस विनियम के 2(स) के अनुसार आवेदनों की जांच की है और उसमें कथित तथ्यों अगदि की शृक्षला के सम्बन्ध में अपना समाधान कर लिया है और आवे-वक को प्रश्नगत सम्पत्ति का स्पष्ट हक है।

- (2) यह सिकारिक की जाती है कि - - र का अग्निस आवेदक को अगुदत किया जा सकता, है। मैं ने आवेदक के वेसन से की गई मासिक कटौतियों आदि के आधार पर अपना यह समाधान कर लिया है कि वह रकम उसकी संदाय क्षमता के भीतर है।
- (3) \*बिनियम 4(स) के उपकंषों को विश्वेष मध्यक्षे के रूप में, शिथिस किया जा सकता है।
- (4) अवेदक को उसकी अधिवार्षिता की तारीस को देय उपदान/मृत्यु और सेवा-निवृत्ति उपदान की रक्षम (जो सेवा निवृत्ति की तारीस को आवेदक द्वारा गृह निर्माण अग्निम के लिए आवेदन देने के समय धारिदा नियुक्ति के आधार पर संगणित है) - - - - ह प्राक्किलत की गई है।
- (5) प्रमाणित किया लाता है कि अभो हस्तारिती श्री - - - - (नाम और पदाभिधान मोहे अकरों मों दे) \*\* विधाग की अध्यक्ष है । \*\* ऐसे आवेदनों की जांच करने और सिफारिश करने के लिए विभाग के अध्यक्ष द्वारा सम्यक्ष रूप से प्राधिकृत किया गया है ।

***हस्ताक्षर	-	 -	-	
पदाभिधान	_	 -	-	-
विभागकानाम	-	 _	-	

\*थदि लागुन हो तो काट दें।

\*\*जो शब्द लागून हो तो काट दें।

\*\*\*हस्ताक्षर करने बाले अधिकारी का नाम भी उसके हस्ताक्षर के नीचे मोटे अक्षरों में उपयिक्तित किया जाना, चाहिए।

#### प्रवपसंख्याः 1

गृहों के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारियों को प्रक्रिमों के धनुवान के लियें (प्रक्रम सं० 2 के ब्यीरों पर प्राधारित) मून प्राक्रत्ती भीर ब्यीरेकार विनिर्देशों की लागत की संक्रिप्ति)

<u> स्मिन्------</u>

∓ाम

पदाभिधान

मद सं०	उपशीर्ष ग्रीर कार्य की मदें	मात्रा या संख्या	दः	प्रति	रक्तम	जोङ्
l.	2	3	4	5	6	7
I. मिट्टी । (माधा	हा कार्च तें के उरखनत में मिट्टी कार्य भीर प्रधिशेष मिट्टी का व्यास्त पादि)		1(	000 वर्ग गिटर		
	कार्य र्जाके नांचे या कृटिंग के लिये पथ्यर या देंटों की गिट्टी का उपयोग करते सीमेंट या कृता के साथ बाधार कंकीय		will rill	100 वर्ग मीटर		

1242 THE GAZETTE OF INDIA : EXTRA	ORDINAR	Y	[Par	т ІІ—Ѕес	3(i)]
1 2	3,	4	5	6	7
III. ममोसह प्रक्रिया			·· <u></u> -	- <del> </del>	
, (प्रचूर सीमेंट गारा या विटुमिन स्टिक मिश्रण पर कंकीट	=-				
IV. छत का कार्य (प्रार०सी०सी० ऐसबेस्टस या किसी श्रन्थ प्रकार की उपयुक्त छत			<b></b>		· 
V. प्रवसित सिमेंट कंकीट					
VI. चिनाई (ईट, पत्थर, कंफीट खण्ड, दीवाल प्रादि)				<del></del>	
VII. काष्ट-कार्य (दरदाजों ग्रीर खिड़कियों, छतों के लिये काष्ट घटक माप (स्केन्टलिंग) ग्रादि के लिये				<b>-</b>	
VIII. इल्पात कार्य (प्रजलन, संसम्मक, खिड़कियों की छड़ें भादि के लिये)			<del></del>		
IX. कर्श बनाना (कंकीट, पत्थर या संगमरमर की चिपें ग्रावि)		·			
X. परिष्करण (ख़्लास्टर, करता, टीप करना, रंग या चूना की पैंटिंग भ्रादि)	·	<b></b>			
XI. प्रकीर्ण (जैसे बरसाती जल के नल, ढसान, जल, चुले, खूटिया पेश्वों के लिये मंकुश ग्रादि)					
XII. श्वक्छता संस्थापन (ग्रलमारी कक्ष, संबन्धन, नलके, मैनहोल, जलविकास भ्रादि)			<b>-</b> √-	<del></del>	
XIII. जल प्रदाय (टोटियां, जल प्रमापी, जल टेंक, जी०माई० नलके मादि)		, 			
XIV. विजली				-	
(बिजली के प्याइन्ट, प्रमापी, संबन्धन, लाइनें भ्रादि)					
कुल लागत :		<del></del>		<del></del>	<del></del>
<del></del>	<u>.</u>		 ग्रावेदक के ह	स्त( <b>क्षार</b>	
			तारीख		
टिप्पण:संक्षिप्त को वास्तविक स्यौरेबार (किये जाने के लिये प्रस्तावित कार्य किया जाना है स्रोर समुचित प्रक्रम पर धावेदन के साथ सलग्न किया जाना है ।	की म <del>वें</del> , रेट झ	ादि को उपदर्शि	ात <b>करने हुए</b> )	पृथक कागज	पर टाइप
प्रदर्ग मंख्या / 2					
गृह के निर्माण के लिये बोर्ड के कर्मचारी को प्राप्त	म के लिये क्य	ौरेक₁र प्राक्कल	न ।		
(प्ररुप 1 में दी गयी मा <b>लाओं</b> का समर्थन करने हैं					
न्। स					
पदाभिधान					
कार्यालय, जिससे संग्रस है	-				
परिक्षेत्र भीर पता, जिसमें नृह के निर्माण का प्रस्ताय है				··	
करु सं कार्य के स्थीरे	 संख्या		 माप	<del></del>	

**-**: 1

19-1/2

1-1/2

19-1/2 1-1/2 1-1/2

2

पीछे का बरांडा दीवाल रखते हुए

भाधार भौर अन्य खाइयों के लिये सभी मृदाओं में उत्खनन में मिट्टी का कार्य भौर उसे 50 मीटर लीड के भीतर श्रीर 1-5 मीटर इंचाई तक निक्षिप्त करना।

1

ो. मिट्टी का कार्य

सामने की दोवाल

2	3	4	5	6 ·	7
बाहरी दीवाल	1	201/2	I-1/2	2	62
कमरों के जीव की सामान्य दीवाल	1-1/2	12-1/2	1-1/2	2	56
सामने की धोर पीछे की उम्लू० सी०	2	3-3/4	1	1-1/2	11
यथोक्त पार्श्वका	1- 1/2	4- 1/2	1	1-1/2	11
सामने की ग्रोर पीछे की सीकियां	2	4-1/2	1 - 1/2	1/2	7
कुल मिट्टी का कार्य					250
जस् <b>ख</b> िनत मि <i>र्</i> टी की पुनः भराई श्रादि					
सभी मदों के लिये, जैसा कि नमूना प्ररूप सं० 1 में दिया गया है, चाल ख्वीरे				<del></del>	

मावेदक के हस्ताक्षर----

टिप्पण :--- ऊपर की मद 1 के सामने स्तम्भ 3-7 में दी गयी प्रविष्टियां केवल यह म्पष्ट करने के लिये हैं कि संपूर्ण प्ररूप कैसे तैयार किया जाना है उसे पूथक कागज पर टाइप किया जाना चाहिये और श्रावेदन के मार्थ समुचित प्रक्रम पर संलग्न किया जाना चाहिये ।

जब सम्पत्ति मुक्त धृति (फीहोल्ड) है सब निध्यादिन किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप

### (विनियम 7 देखिए)

बंधककर्ता उस भूमि और/या गृह सम्पत्ति और परिसर का, जिसका सर्णन इसमें भागे लिखी धनुसूची में किया गया है भीर जिसकी सोमाएं भाधिक स्पष्टता के लिए इससे संलग्न नक्यों में '''''''' रंग की रेखा से दिखाई गयी है तथा जो इसके द्वारा हस्तांनित भीर मंतरित किया गया श्रमिव्यक्त है, (जिसे इसमें भागे 'उक्त बंधक सम्पत्ति' कहा गया है) पूर्ण भीर एकमान्न हिताधिकारी स्वामी है और वह उसके कब्जे में है अथवा वह प्रस्य रूप में उसका विधि पूर्वक और पर्याप्त रूप से हकदार है ।

बंधकंकता ने प्राप्त के प्रक्रिय के लिए बंधकदार को भाषेदन किया है। बंधकंकर्ता ने यह मित्रम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मोगा है:

- \*(1) भूमि का कय करने के लिए भीर उस पर मकान बनाने के लिए या\* (उक्त भूमि पर विद्यमान मकान में भावास स्थान विस्तार करने के लिए) ।
- ः \*(2) उक्त भूमि पर मकान बनाने के लिए या \*(उक्त भूमि पर अपने मकान में भावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
  - \*(3) उन्त बने बनाए मकान का अध करने के लिए।

बधकवार कुछ निबंधनों भीर मती पर : : रूपए की ज़ब्त रकम बधककर्ता को देने के लिए सहमत हो गया है।

उक्त प्रियम की एक णर्त यह है कि बधककर्ता की चाहिए कि वह इसमें आगे अनुसूची में वॉणत सम्पत्ति का बंधक करके उक्त अग्निम के प्रतिसंत्राय को और उन निबंधनों और शतों के सम्पक् अनुपालन की प्रतिभूत करें जो नव तूतीकोरिन पत्तन न्याम कर्मचारी (मकानों के निर्माण भादि के लिए भग्निम का अनुवान) विनियम, 78 में (जिसे इसमें भागे 'उक्त विनियम' कहा गया है और इसके अन्तर्गत जहां संदर्भ के अनुकूल है, तत्समय प्रवृत्त उसके संशोधन या उसके परिवर्धन भी हैं) दी हुई है श्रीर बंधकार ने

- \* बंधककर्ता को एठ० (केवल एक०) का प्रक्षिम निर्माण नारीख को भ्रीर उक्त विनियम में उपबंधित रीति में दे दिया है, तथा उस उधार का ब्याज महिन प्रतिसंदाय तथा उक्त विनियम में दिए हुए निबंधनों भ्रीर गतौं का, जिनका उल्लेख इसमें भ्रागे किया गया है, श्रमुपालन इसमें भ्रागे दी हुई रीति से प्रतिभूत करा निया है।

संधककर्ता को संधकवार से उक्त ग्राग्रम निम्नलिखित किस्तों में मिलना है:

- \*\*\*\*\*\*\*\*\*\* तारीख को मिल् चुके हैं।
- अय् इस विलेख के निष्पादन पर ।
- \*\* रूपए तब जय बंधककर्ता, बंधकदार के पक्ष में इस विलेख का निष्पादन करेगा ।
- \*\*..... रुपए तब जब मकात का निर्माण कुर्सी के स्तर पर पहुंचेगा।
- \*\* रूपए तब जब मकात का निर्माण छत के स्तर तक पहुंचेगा, परन्तु यह तब होगा जब कि बंधकदार का यह समाधान

<sup>\*</sup> जो लागू हो वह लिखिए ।

巻 थिद ध्रम्भिक केसंदाय का ढंग नियम 5 में बिहित ढंग से शिक्ष है हो तदनुसार इसकी भाषा में परिवर्तन कर दियाजाएगा ।

हो जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें मकान बनाया गया है, जल प्रवार, सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालियों बीर मलवहन जैसी सुविधाक्रों की वृद्धि से पूरा हो गया है।

यह करार निम्नलिखित का साक्षी है :--

(1) (क) उक्त विनियम के प्रनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के घनुसार बंधकवार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/विए गए जनत मग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधकर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविधा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों भीर शतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और '''' स्पण् (केवल ''''''''''''''''''''' के ज़क्त अग्निम का बंधकदार को प्रतिसंद्राय .... रुपए (केवल .... रुपए) की\* ••••• भासिक किस्तों में बंधककर्ता के वेतन में से करेगा। थह प्रतिसंवायः .....के....के.... भास. से प्रथवा भकात पूरा होते के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होगा । बंधककर्ता ऐसी किस्तीं को कटौती उसके मासिक वेसन/पृद्धी वेंसन/मिर्वाह भन्ते में से करने के लिए वंधकदार को प्राधिकृत करता है। उक्त प्रग्रिम की पूरी रकम देने के पश्चान् बंधक-कर्ता उस पर देय व्याज का संवाय भी ····· \*\* मासिक किस्तों में उस रीति में और उन निबंधनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिदिष्ट हैं । परम्यु बंधककर्ना व्याज सहित, प्रक्रिमः का पूरा प्रतिसंबायः उस तारीखः से पूर्व करेगाः जिसः नारीखः भने वह सेवा. से तियुत्र होने बाला/माजी है । यदि वह ऐसा नहीं करेगा/ कारेगी, तो बेधकधार को यह हक होगा कि वह बंधक को दश प्रतिभृति को उसके कादः किसी भी समय प्रयुक्त करे और उस समय देय प्रक्रिम भी, मोक स्कम तथा उस पर ब्याज, श्रोर वसूनी के खर्क बंधक सम्पत्ति का विकास करके या विधिः के प्रधीन प्रतुषेय किसी प्रत्य सीत से बसुल करे। **कंशककर्ता इ**स रक्तम का प्रनिसंदाय इससे कम प्रवधि के भीतर कर सकता

(1) (सा) उक्त विशिधम के प्रनुसरण में प्रौर उक्त विश्नियम के जमबंद्यों के बल्सार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए जनत श्राप्रिम के प्रतिफ<del>लस्करमा बंधककर्ता दसके द्वारा बंधकवार से यह</del> प्रसंविदाकरता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों झौर भारों का सदैव सम्बक् रूप से अनुपालन करेगा भीर : : : रूपए (केबल : : : : : : : हपए) के उक्त प्रग्रिम का अधिकदार को प्रतिसंदाय .....रपए (केवल .......... रुपए) की ' ' मासिक किस्सों ग्रपने (बंधककर्ता के) वेतन में \*\*-\* पूरा होने के पश्च।त्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो,पारम्भ होकर उनकी मधिवर्षिता <del>की तावीच तक कियाः जाएगा ग्र</del>ीर उसकी श्रक्षिर्थायमा की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख नक का ब्याज उसके उपवान/मृत्यु-एकं-सेवा निवृत्ति उपवान में से वसूल किया जाएगा । श्रंभककर्ता किस्तों की रकम को कटौसी उसके मासिक वेसन/छुट्टी वेनन/निर्वाह भन्ने मे से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/ध्रिधि-वर्षित की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपवाम/मृत्य् एयं लेखा निवृत्ति उपदान में में करने के निए बंधकदार की प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पुरी बसूली नहीं हो पाती है दो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रकृत करें भीर उस समय देश भग्निम की गेष रकम तथा उस पर ध्याज झौर बसूली का सार्च, बंधक सम्पत्ति का विकथ करके या विधि के सम्मीत भन्तुवेय किसी सन्य रीति से बभूल करे। संधककर्ता इस रकम का प्रतिसंद्राय इसले कम प्रविधः के भीतर कर मकता है।

(1) (ग) जनत विनिधम के अनुसरण में भीर जनत विनिधम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त प्रश्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारक बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि मंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निकंदनों भीर शर्तों का सर्देव सम्यक् रूप से अनुपालन करेता श्रीरः ' ' ' ' ' ' '''''' हपए (केवल ''''' हपए) के उक्त ग्रग्रिम का **बंधकवार को प्रतिसंदाए'''''''''''''हपए) (केवल'''''''''** रुपए) को मासिक किस्सों में धपने (बंधककर्ता के) वेसन में से करेगा । यह प्रतिसंदाय ' ' मास से या भकान पूरा होने के पश्चात्वर्ती मास से धनमें में जो। मी पूर्वतर हो, प्रास्म्भ होगा। बंधककर्ताः इसके द्वारा बंधकदार को ऐसी किस्लो की कटौसी उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन से करने के लिए प्राधिकृत करसी है कौर बंधककर्ता स्रक्षिम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् ····· मासिक किस्तों में मंदाय ग्रपनी ग्रधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तथा अग्रिम की गयी रकम पर प्रग्निम की तारीख से उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस बाकी रकम का जो उसकी प्रधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय ग्रपने उपदान√ मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा घोर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वेतन/शुट्टी वेतन में से तथा उस क्रेंच रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्युकी तारी 🗷 तक नहीं किया गया 🐮 कटौती श्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृक्ति उपदान में मे करने के लिए वंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मृत्यू की तारीख का कोई मतियोग मसंद्रत रह जाता है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह मधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे ग्रौर उस समय देग भग्रिम की शोष रकम तथा उस पर स्थाज भीर बसूली का सार्च, बंधक सम्मत्ति का विकय करके या विश्व के प्रधीन धनुत्रीय किसी श्रन्य रीति मे वसूल करे। बंधककर्त्वा इसः रकम का प्रतिसंदाय इससे कमः श्रवधि के भीतर कर सकता है।

- (2) यदि बंधककर्ता मित्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि प्रावेदक बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेबानिवृत्ति, ग्रिधिवर्षिता से भिन्न किसीकारण से सेवा में महीं रहता है अथवा यदि अधिम के पूरे संवाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि वह उक्त विनियम में विनिद्दिष्ट ग्रीर उनकी ग्रीर से ग्रनुपालन किए जाने वाले किसी सिबंधन, गर्त भीर भनुबंध का धनुपालन नहीं करता है-तो ऐसी प्रत्येक दशा में अधिम का सम्पूर्ण मूलधन या उसका अतना भाग जो उस समय देय रहता है और जिसका संदाय नही किया गया है, और उस पर : : : : †प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा जकत ग्रन्थिम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीख से परिकलित किया अग्रामा, तुस्क संवेग हो अग्रमा । इसकी किसी, बात के होते हुए भी, यदि बंधककर्ता ग्रमिम क। उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन केलिए करता है जो: उस प्रयोजन में भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधक-दार बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी अनुगासनिक कार्रवाई कर सकेगा जो बंधक कर्ताको लागृ मेवा के नियमों के मधीन उपयुक्त हो।
- (3) उक्त बिनियम के अनुसरण में और उपयुक्त प्रतिफल के लिए नया उपर्युक्त अग्निम के और उस पर स्थाप के, जो उसके पश्चाक् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निश्चंधनों के अधीम केंग्रक्तराए को विषय हो, प्रतिसंवाय की प्रतिभूत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार को

<sup>\*</sup>यह 180 से मधिक नहीं होगा ।

<sup>\*\*</sup>यह 60 से मधिक नहीं होगा ।

<sup>†</sup>नियम के मधीन प्रभाय स्थाज की प्रसामान्य दर ।

उक्त सम्पूर्ण बंधक सम्पत्ति जिसका पूरा वर्णन इसमें ग्रागे लिखी ग्रनुसूची में किया गया है, उस सम्पत्ति पर बंधककर्ताद्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों या तत्समय उस पर की सामग्री का उक्त बंधक सम्पत्ति से सम्बन्धित सभी या किन्हीं ग्रधिकारों, सुखाचारों और ग्रनुलस्तकों सहित प्रनुदान, हस्तांतरण प्रंतरण घौर समनुदेशन करना है । बंधकदार उक्त बंधक सम्पत्ति को उसके अनुलग्नकों सहित, जिसके अन्तर्गत उक्त अवंधक सम्पत्ति पर के सभी तिर्माण ऋौर ऐसे भवन को निर्मित किए गए हैं या इसके परचात् निर्मित किए जाएं भथवा उस पर तत्समय रखी सामग्री भनी है, सभी विल्लालंगनों से मुमत पूर्णरूप से घारण करेगा ग्रीर उसका जपयोग करोगा । किन्तु यह इसमें द्यागे विए हुए मोचन संबंधी उपबंध के भक्षीन होगा । इसके पक्षकारों के बीच यह करार किया जाता है भौर मोचण। की जाती है कि यदि बंधक कर्ता, बंधक वार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मुलधन भीर स्थाज का भीर ऐसी ग्रन्य रकम का (यदि कोई हो) को बंधककत्तिकों द्वारा बंधकदार को, उक्त नियमों के निबंधनों कौर शर्ती के अधीन संवेय अक्क्शारित की जाए, सम्यक रूप से संदाय इसमें दी हुई रीति से कर देगा तो अधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ती के भवुरोध स्प्रीर खर्च पर, उक्त बंधक सम्पत्ति का प्रतिहस्तांतरण भौर प्रति-मंतरण बंधककर्ताओं को उसके या उसके निवेशानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

(4) इसके द्वारा अभिन्यक्त रूप यह करगर किया जाता है और व्योषणा की जाती है कि यदि वंशककर्ता अपनी ओर से की गयी और इसमें दी हुई अर्सविदाक्षों का भंग करता है या यदि बंधवकर्ता दिवालिया हो जाता है यदि सामाप्य रूप से सेवा सिवृत्ति/प्रश्चिविता से भिन्न किसी कारण से सेवा में मही रहना है, या यदि छन सभी रकमों के जो इस विलेख के अधीन बंधकदार को संबेय हैं, स्नौर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए काने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त अग्रिम था उसका कोई। माग इस विलेख के घष्टीन याकिसी अन्य रूप से तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकवार के लिए यह विधिपूर्ण होगाकि बाहु उक्त बंधक सम्पत्ति काया उसके किसी भागका विकय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना,एक साथया टुकड़ों में और लोक मीलाम द्वारा था प्राइवेट संविदा द्वाराकर दें। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका क्रय कर ले या विकथ की किसी संविदा को विखंडित कर दे श्रीर उसका प्रुकः विकास कप वे सच्या ऐसी किसी हानि के लिए जिस्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो । उसे ग्रह गक्ति भी होनी कि ग्रह ऐसा विकय करने के लिए, जो बंधकदार ठीक समझे, समीकार्य करे ग्रीर हस्तांतरण पक्षों का निरूपादन करे। यह घोषणा की जाती कि बेचे गए परिसर या उक्सके किसी भाग के अध्य धन के लिए अंधनखार का रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केला या केताओं में कय धन का मुगसान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के अनुसरण में किए गए किसी विक्रम से प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप में आरण करेगा। उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का संदाय किया जाएगा भीर तब इस विलेख की प्रतिभूति पर तत्समय देश धन को चुकाने में या उसके 'लिए, धन का संवाय किया जाएगा और यवि कोई धन बाकी रहता 'है तो वह बंधनकर्ता को दे दिया जाएगा ।

- (5) बंधकमती इसके द्वारा अधकतार के साथ यह प्रसंविदा करता है कि :--
- (क) बंधककर्ता को इस बात का विधिपूर्ण मधिकार श्रीर प्राधिकार है कि वह बंधक सम्पत्ति का, बंधकदार की भीर उसके उपयोग के लिए भनुदान, हस्तातरण, मन्तरण भीर समनुदेशन पूर्वोक्त रीति में करे।
- ्र (ख) बंधककर्ता मकान के तिर्माण/उक्त मकात में घाबास स्थान में परिवर्तन का काम उस प्रमुशोदित तक्यों और उन विनिर्देशों के ध्रनुसार ही करेगा जिनके पाधार पर उक्त धाधार की संगणना की गयी है धौर वह

टिप्पणः जब भ्रमिम बने बनाए मकान के क्रम के लिए हैं या उस उधार के प्रतिसंदाय के लिए हैं जो अधिक ने किसी भकान वे निर्माण या क्रम के लिए लिया है तब खण्ड (ख) भ्रीर (ग) लागू महीं होंगे।

- (घ) बंधककर्ता भारतीय जीवन बीमा निगम में या किसी राष्ट्रीय-कृत साधारण बीमा कम्पनी में उस मकान का तुरन्त ग्रपने खर्च पर बीमा उतनी रकम के लिए कराएगा को अक्त भाष्ट्रिम की रकम से कम म हो । वह उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार की ग्राग्रिम पूरी तीर से चुका नहीं किया जाता है, अनिन, यात भीर तड़ित से हानि या नुकसान के विरुद्ध बीमाकृत रखेगा जैसा कि उक्त नियमों में उपबंध है, ग्रीर बीमा बंधकदार को सींप देगा । बंधककर्ता समय-समय पर उपल बीमगक्ता प्रीकि-थम नियमित रूप से देगा कौर जब उससे अपेक्ता की जाए प्रीमियम की रसीवें बंधकवार के निरीक्षण के लिए पेश करेगा । यदि अंधककर्ता अस्ति, बाढ़, तड़ित के विरुद्ध भीमा नहीं कराता है तो अधकदार के लिए यह विधिपूर्ण, किन्तु भावद्यकर नहीं होगा कि वह उक्त मकान का बीमा बंधक-कर्ता के खबर पर करा ले और प्रीमियम की रकम की अग्रिम की बकाया रकम में जोड़ ले। तब बंधककर्ताको उस पर \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* प्रति वर्ष की कर से क्याज देना होगा मालो प्रीसियम की रकम की छसकी उक्त प्रक्रिम के भाग के रूप में वी गणी भी । यह व्याज उसे उस समय तक देना होगा जब तक कि वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी आती है याजब तक उसकी बसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख को प्रतिपूर्ति के भन्तर्गत अपने वाली रकम हो । बंधककर्ता जब भी उससे अपेक्षित हो, बंधकवार की एक पत्र देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस मकान का बीमा कराया गया है ! यह पत्र इसलिए होगा कि बंधकवार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधकदार उस बीमा पॉलिसी मैं हिसबद्ध है।
- (कः) बंधककर्ता उक्त मकान को ग्रापने खर्च पर ग्राक्की मरम्मत की हालत में रखेगा ग्रीर बंधक सम्पत्ति की बाबत नगरपालिका के ग्रीर ग्रस्य

<sup>🕶</sup> जो निग्रम के अधीन प्रभार्यक्याज की प्रसामान्य ६५:।

<sup>\*</sup>यहां यह तारीख लिखिये जिस तारीख को ग्राग्रिम की पहली किस्त बंग्रककर्ता को दी गयी है।

सभी स्थानीय रेट, कर और घस्य मभी देनदारियों उस समय तक नियमित रूप से देगा जब तक कि बंधकदार को घिष्रम पूरी तौर से चुका नहीं दियाजाता है। बंधककती, बंधकदार को उक्स धाणय का एक वार्षिक प्रमाणपत्न भी देगा।

- (च) बंधककर्ता मकान पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिश्चित करने के लिए कि मकान श्रव्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है. निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि श्रप्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- ं (छ) बंधककर्ता ऐसी कोई रकम श्रीर उस पर देय ब्याज, यदि कोई है, बंधकदारको लौटाएगा जो अधिम के मद्दे उस ब्यय के श्रिधक्य में ली गयी है जिसके लिए श्रिधम मंजूर किया गया था ।
- (ज) बंधककर्ता बंधक सम्पत्ति को इस विलेख के जारी रहते के दौरान न तो भारित करेगा, न उस पर विल्लंगम मृजिन बरेगा, न उसका अन्य संक्रामण करेगा, और न उसका किसी अन्य प्रकार मे व्ययन करेगा।
- (म) इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदारको यह हक होगा कि वह अग्रिम की शेष एक मंधीर उस पर ब्याज जिसका संदाय बंधककर्ता की सेवा निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गयी है तो, उस समय तक नहीं किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्विष्ट भाग में से वसूल कर ले।

भ्रनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है उस्त बंधककार्ती : : : : : : : : : : (1) ....(प्रथम माक्षी का नाम, पता स्रोर व्यवसाय) ••••• (प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर) (2) .... (द्वितीय माक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) ····· (द्वितीय साक्षी के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए । त्तीकोरिन पत्तनत्यास के न्यासी बोर्ड के लिए और उसकी अोर से तथा उसके निवेशानुसार .... कार्यालय के श्री · · · · · · ने हस्ताभार (1) .....(प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय) ·····(प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर) (2) नाम, पहा व्यवभाय) ----- (द्विसीय साक्षी के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्तक्षर किए। ष्यान दें:--- प्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज परस्टास्य शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए क्या

स्टाम शुल्क के संदाय मे कोई छूट मिल सकती है,

राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें।

#### प्रदेष सं० 3 क

जब सम्पत्ति मुक्त धृति (फीहोल्ड) है भीर संयुक्त रूप से पति श्रीर पत्नी के नाम में धारित है तब निष्पावित किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप (विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो का पुनी/पुल है श्रीर जो इस समय में मंत्रालय/कार्यालय में मंत्रालय/कार्यालय में के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/ उसकी पत्नी (जिन्हें संपुक्त रूप से इसमें श्राने 'बंधककर्ता' कहा गया है और इसके शन्तर्गत उनके वारिस, निव्यावक, प्रशासक श्रीर समनुदेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या मंदर्भ से अपवर्जित या उसके विकद्ध नहीं हैं) भीर दूसरे पक्षकार के रूप में नव तृतीकोरित पत्तन त्यासी बोर्ड (जिसे इसमें भागे 'बंधकदार' कहा गया है और इसके शन्तर्गत उसके उत्तरवर्ती और समनुदेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अपवर्जित या उसके विकद्ध नहीं हैं) के बीच श्राज तारीख को किया गया है ।

वंधमकर्ता उस भूमि भौर/या गृह संपत्ति भौर परिसर का पूर्ण और एकमास हिनाधिकारी स्वामी है जिसका वर्णन इसमें आये लिखी अनुमूची में किया गया है और जिसकी सीमाएं प्रधिक स्पष्टता के लिए, इससे संलरन नंक्यों में '''रंग की रेखा से दिखाई गयी हैं तो जो इसके द्वारा हस्तांतरित और अंतरित किया गया प्रभिव्यक्त है, (जिसे इसमें भागे 'उक्त बंधक सम्पत्ति' कहा गया है) भौर वह उसके कब्ने में है अयवा वह अन्य रूप में उसका विधिपूर्वक और पर्याप्त रूप से हकदार है।

बंधककर्ता में से एक श्री मानै (जिसे इसमें आनै 'आवेदक बंधककर्ता' कहा गया है) फिर फिर (केंद्रल फिर कंधककर्ता' कहा गया है) फिर कंधकदार की आवेदन किया है । अवेदक बंधककर्ता ने यह अग्रिम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है,

- \*(1) भूमि का क्रय करने के लिए उस पर मकान बनाने के लिए या\*, (उक्त भूमि पर विद्यमान मकान में प्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- \*(2) उक्त भूमि पर मकान बनाने के लिए या\* (उक्त भूमि पर बने मकान में प्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।

उक्त श्रीम की एक गर्त यह है कि बंबक्तिमों को चाहिए कि वे इसमें आगे अनुमूची में विणित सन्मति का वंबक्त करते उक्त अधिम के प्रतिसंदाय को प्रीर उन निवंबनों भीर भर्ती के सम्बर् अनुगानन की प्रति-भूत करे जो नृतिकोरिन परतन न्याम कमंबारी (मकानों के निर्माण आदि के लिए प्रियम का प्रनुदान) विनिधन 79 में (जिन्हें इसमें धार्ग उक्त 'विनिधम' कहा गया है और इसके अन्तर्गन जहा मंकर्म के प्रनृकूल हो, तरसमय प्रवृक्त उसके संगोधन या उनके परिवर्गन मी हैं) दो हुई हैं।

### धीर बंधकदार ने---

\*(आवेदक बंधककानी को प्राप्त का प्राप्त केवन क्षण) का प्राप्त अक्त विनिधेम क्षण) का प्राप्त में संजूर कर दिया है तथा उस उधार का व्याज सहित प्रतिसंदाय नथा उक्त विनिधम में बिए हुए निबंधनों और भतों का, जिनका

जिल्लेख ग्रांगे किया गया है, ब्रनुपालन इसमें ग्रांगे दी हुई रीति से प्रतिभूत करालिया है।

धावेदक बंधककर्ता की बंधकदार से उक्त मग्रिम निम्नेलिखन किस्नीं में मिलना है:

\*···ः रुपए · ः तारीख को मिल चुकें

\*\*··· रुपए तस जब मकान का निर्माण कुर्सी के स्नर पर पहुंचेगा।

कंक प्रदेशीयाः।
 इसए तब जब मकान का निर्माण छप के स्तर तक पहुँचीयाः।

परन्तु यह तब होगा जब कि बंधकदार का यह समाधान हो जाना है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें मकान बनाया गया है, जब प्रदाय, 'सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालियां ग्रीर मनदहन जैनो सुविधायों 'कीवृष्टि सेपूरा हो गया है)। 1

यह करार निम्नलिखिन का साक्षी है:

(i)(क) उक्त विनियम के धनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ता को संजूर किए गए/ दिए गए उक्त श्रप्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करते है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों भौर शतों का सदैव सम्यक रूप से अनुपालन करेंगे और ' ' ' ' ' रुपए (केवल ं ' मामिक किस्तों में ग्रावेदक के वित्तन में से करेगे । यह प्रतिसंदाय ' ' ' के ' के ' के ' ' ' ' ' ' ' ' मास से मयवा पूरा होने के पश्चात्वर्ती भाग से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होगा। ब्रावेदक ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेसन/ छुट्टी वेतन∤निर्वाहभक्ते में से करने के लिये बंधकदार को प्राधिकृत करता है। उक्त अग्रिम की पूरी रकम दे देने के पण्चात् आवेदक बंधककर्ता उस पर देथ ब्याज् का संवाय भी : : : : : ‡मासिक किस्तों में उस रीति में ग्रौर उन निबंधनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिधिष्ट है परन्तु ग्राबेदक बंधककर्ता ब्याज सहित प्रश्रिम धन का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा से निवुस्त होने वाला/वाली है। यदि वह ऐसा महीं करेगा/करेगी तो बंधकवार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रयुत्त करे ग्रौर उस समय देय ग्रग्निम की गोष रकम सथा उस पर ब्याज ग्रौर वपूली का खर्चबंधक संपत्ति का विकय करके या विधि के अधीन अनुज्ञेय किमी अन्य रीति से वसूल करे। शाबेदक संधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

पूर्वतर हो, प्रारम्भ होकर उसकी प्रधिविषा की तारीख नक किया जाएंगा थीर उसकी प्रधिविष्ता की तारीख पर जो रक्तन बकाय होगी तथा प्रिप्त दी गई रक्तम पर प्रिप्ति की तारीख पर जो रक्तन बकाय होगी तथा प्रिप्ति दी गई रक्तम पर प्रिप्ति की तारीख से प्रतिसंदाय को तारीख तक का क्याज उसके उपदान/मृत्यु की रक्तम सेवा निवृत्ति उपदान में से बसून किया जाएगा। प्राविषक बंधककर्ता किस्तों की रक्तम की कटौती उसके मासिक वैसन/लुट्टी वेतन/निविष्ट् भत्ते में से तथा उस णेव रक्तम की जिसका मंदाय उसकी मृत्युतिका निवृत्ति/प्रधिविष्ता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकवार को प्राधिकत करना है। यदि फिर भी पूरी वनुनी नहीं हो पाती है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की दम प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे, और उस समय देव प्रिप्ति की उसके वाद किसी भी समय प्रवृत्त करे, और उस समय देव प्रिप्ति की जिसक करके या विधि के प्रधीन प्रतृतेष किसी भ्रम्य रीति से वसूल करे। बाबेवक बंधककर्ता इस रक्तम का प्रतिभंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

(i)(ग) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा अध्यक्तकर्ता को संबूर किये गए/दिए गए जिल श्रीप्रम्∕के प्रतिकतस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंतिदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों धीर शतौं का सर्वेव सम्यक् रूप से धनुपालन करेगा घौर : : : : : : : : : : : । । । साए. (केवल ॱॱॱॱॱॱॱॱॱरपण्) के उक्त ग्रमिम का बंधकदार को प्रतिसंदाय ः ः · · · · · रु० (केबल · · · · · · · रुपण्) की · · · · · · · · · · · मासिक किस्तों में भवने (बंधककर्ता के) बेतन में से अरेगा। यह प्रतिसंदाय · · · · · · के · · · · · · मास से या मकान पूरा होने के पश्वात्-वर्ती मास से, इनमें से जो भो पूर्वतर हो, प्रारंग होगा । बंधकरुती इसके द्वारा बंबकदार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेसन/ छुट्टी वेतन में से करने के लिये प्राधिकृत करता है और बंधककर्ता ग्रिप्रम की पुरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देव क्याज का भी 😬 भविवर्षिता की तारीख तक करेगा तथा भिन्न की गयी रकम पर भिन्न की नारीख से उसके प्रतिसंवाय की तारीख तक के व्याज. की उस बाकी रकम का जो उसकी अधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय भगने उपवान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा भ्रौर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती असके मासिक बेनन/ळुट्टी बेनन में से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिक्वन करता है। यदि उसकी मृत्यु की तारीख को कोई ग्रतिशेष असंदरत रह जाना है तो बंधकदार को यह हज होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करेग्रीर उस समय देय प्रश्निम की शेष रकम तथा उस पर स्थाज ग्रीर वनुलो कांखर्घ बंधक संपति का विकय करके या विधि के प्रयोग धनुजेब किसी धन्य रीति से चालू करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसमे कम अविधिः के

[टिप्पण: खांड (1)(क), (1)(ख),या (1)(ग) में से जो कानू नहीं है उसे काट दीजिए]।

भीतर कर सकता है।

(ii) यदि भावेदक बंधककर्ता ध्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से सिश्र है जिसके लिये वह संजूर किया गया है या यदि भावेदक बंधककर्ता दिशिलया हो जाता है या साँमान्य रूप में सेवा निवृत्ति, प्रधिवृद्धिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है भथवा यदि भग्निम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यू हो जाती है या यदि श्रावेदक बंधककर्ता उक्त नियम में वितिदृष्ट और उसकी और में अनुपालन किये जाने वाले किसी निवंधन, गर्त और अनुबंध का अनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में भग्निम का सम्पूर्ण मूलधन या उसका

<sup>\*</sup>जो लागू हो वह लिखिए।

<sup>\* &</sup>quot;यदि प्रस्मि के प्रतिसंदाय का ढंग नियन 5 में बिहित ढंग से निश्च है तो नदावार इनको भाषा में परिवर्तन कर दिया जाएगा।

<sup>†</sup>यह 180 से मधिक नहीं होगी।

जतना भाग जो उस समय देव रहता है और जिसका संवाय नहीं किया गया है, भीर उस पर " प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से व्याज को बंधकवार द्वारा उकत अग्निम को पहली किस्त के दिए जाने की तारी के परिकलित किया जाएगा, तुरत्त संदेय हो जाएगा। इसकी किसी बात के होते हुए भी, यदि प्रधान बंधककर्ता ध्रमिम का उपयोग किसी ऐसे अगोजन के लिये करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिये वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार, धावेदक बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी प्रमुख्यासिक कार्रवाई कर सकेगा औ उसके (धावेदक बंधककर्ता को) लागू सेवा, के नियमों के सधीन उपयुक्त हो।

(iii) उक्त नियमों के अनुसरण में ब्रीर उपर्युक्त प्रतिकृत के लिए तथा उपर्युक्त मुप्रिम के मुौर उस पर स्थाज के, जो उसके परवात किसी मुर्मय या समयों पर इस विलेख के निवेधनों के प्रधीन वेधकदार की देय हों, प्रसिसवाय को प्रतिभूत करने के लिये बंधककर्ती, इसके द्वारा बंधकदार की उक्त संस्पूर्ण बंधक सम्पत्ति जिसका पूरा वर्णन इसमें ग्रीने लिखी ग्रेनु-सूची में किया गया है उस सम्प्रतित पर बंधककर्तांध्रों द्वारा निर्मित या नियमित किये जाने वाले भवनी प्रथमा तत्समेय उस पर रखी सामग्री का उक्त बैंघक संपीति से संबंधित सभी यें किल्ही ग्रीधकारों, सुबानारों ग्रीर प्रमुखनकों सहित धनुवान, हस्तातरण, प्रतरेण ग्रीर समनुदेशन करते हैं। बंधकवार उक्ते बंधक संगतित को, उसके अनुलग्नकों सहित जिसके घन्तर्गत उक्त बंधक सम्पत्ति पर के सभी निर्माण ग्रीर ऐसे भवन जो निर्मित किए गए हैं यो इसके पश्चात् निर्मित किये जाएं, अथवा उस पर तत्समय रेखी सामग्री भी है सभी विल्लंगमों से मुक्त पूर्ण रूप से धारण करेंगा भीर उसकी उपयोग करेंगा। किन्तु यह इसेमें भागे दिए हुए मोर्बर संबंधी उस उपर्वंध के अधीन होगा कि यदि र्वधककर्ता, वंधकवार को इसके द्वारा प्रतिभूत उत्ते मुलबंग बीर ब्याज का भीर ऐसी मन्य रकमें का (यदि कोई हो) भी बुधिककतान्त्री द्वारी बंधकदार को उक्त नियम के निबंधन भीर गती के भंधीन सर्विय भवधारित की जाए सम्यंक रूप से संवाय इसमें वी हुई रीति से कर देंगेतो बंधकवार उसके बाद किसी भी धमय बंधककर्ताओं के भनुरोध भीरे खेर्च पेरी उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिहस्तातरण भीर प्रति धेतरणे बंधकेकेलिधी को उनके उपयोग के लिये या उनके निदेशानुसार उपयोग के लिये कर देगा।

(iv) इसके द्वारा मृभ्विषक रूप से यह करार किया जाता है भौर भोजना की जाती है कि यदि बंधककर्ता भानी भीर से की गयी भीर इस में दी हुई प्रसंबिदाओं की भंग करते हैं या यदि मानेदक बंधकुकर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/भूधिवर्णिता से भिन्न किसी कारण से सेचाओं नहीं रहता है या यदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के अधीन बंधकदार की संदेय हैं, भीर उन पर स्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु ही जाती है या यदि उक्त प्रश्निया उसका कोई माग इस बिलेख, के प्रभीन या किसी अन्य रूप से तुरस्त संदेय हो जाता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में संधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विकय, न्यायालय के हस्तकीप के विना, एक साथ का दुकड़ों में और लोक नीलामृद्वारा या प्राइब्रेट संबिदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका क्रय कर ले या विकय की किसी संविदा को विश्वण्डित कर दें ग्रीर उसका पुनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हाति के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो। उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिये, नो बंधकवार ठीक समाने, सभी कार्य करे भीर हस्तातरण पत्रों का निष्पादन करे। यह श्रोषणा की जाती है, कि बेचे गए परिसर या उसके किसी भाग के कृप बन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता/केतामी ने क्रम धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के अनुसरण में किए गए किसी विकय से प्राप्त धन की बंधक-बार न्यास के रूप में घारण करेगा । उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विक्य पर हुए कार्चका संवाय किया जाएगा भीर तब इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय

देय अन को चुक्कृते में या उसके लिये, धृत का संद्राय किया आएया और यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ता को दे विदा जाएगा।

- (V) बंधककर्ता इसके आरा बंधकक्ष्यार के साझ यह प्रसंत्रिया करते हैं कि:-
  - (क्र) बुंधकक लाख़ीं को इस बात का विधिपूर्ण मिककार मीर प्राधि-कार है कि वे बंधक संपत्ति का, बंधकदार की मीर उसके उप-योग के लिए मनुदान, हस्तांतरण, भन्तरण मीर समनुवेशन उक्त रोति में करें।
  - (ब्) प्रावेदक बंधककर्ता सकान के निर्माण/उक्त मकान में प्रावास स्थान में परिवर्धन का काम उस अनुमोदित नक्को घोर उन विनिर्देशों के प्रनुसार ही करेगा जिनके घाधार पर उक्त प्रक्रिम की संगणना की गयी है और वह मंजूद किया गया है, जब तक कि उससे विचलन की भनुका बंधकदार नेन दे दी हो। ध्राखेदक अंधकु-कर्ता, कुर्सी/छल पड़ने के स्तर पर ग्रभुज्ञेय ग्रग्निम की किस्तों के लिए भावेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्शे कीर प्राक्कलन के बनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं और यह कि निर्माण कार्य कुर्सी/ छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है झौर मंजूर किए गए झिसन में से ली जा चुकी रकम का वस्तुतः उपयोग मकान के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नों के सही होने का सत्यापन करने के लिये बंधकदार को स्वयं या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करते. की अनुमति देगा/देगी। यदि बंधककर्ता होई मिन्धा प्रमाणपक देता है तो उसे बंधकदार को वह सम्पूर्ण प्रश्निम, जो उसे मिला है तथा उस पर ''''\*\* प्रतिशत प्रतिवर्ध की दर से क्याज देना होगा।
  - (ग) आबेदक बंधककता मकान का निर्माण/उक्त मुकान में आबास स्यान में परिवर्धन के कि बंधकदार में झूट्टारह मास के भितर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार में इस काम के लिये लिखित रूप में समय न बचा दिया हो। इसमें अपितन होने पर प्रधान बंधककर्ता को, उसे दी गयी सन्पूर्ण रक्तम का और उक्त नियमों के सुधीन परिकलित ज्याज का एक मुश्त प्रतिसंवाय तुरन्त करना होगा। आवेदक बंधककर्ता मकान पूरा होने की तारी बा सुपता बंधकदार को देगा और वह बंधकदार के इस सामय का एक प्रमाणपत्र देगा कि सुप्तिम की पूरी रक्तम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिये किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।
    - हित्रण--अब प्रश्निम बने बनाए मकान/प्रवैद के क्रम के लिये हैं मा उस उधार के प्रतिसंदाय के लिये हैं जो धाबेदक ने किसी मकान/प्रशैट के विस्थित या क्रम के लिये लिया है तब खण्ड(ख) और (ग) लागू नहीं होंगे।
  - (क) बंधककृती भएतीय जीवृत्वीमा तिगम में उस मकृति पर दुरन्त अपने बर्क पर बीमा उतनी रकृत के जिये क्राएंगे जो उक्त मित्र की एक में पर बीमा उतनी रकृत के जिये क्राएंगे जो उक्त मित्र की एक में से क्राएंगे जो उक्त कि बंधकवार को बंधि परी दौर से क्रांग नहीं दिया जाता है, अणि, बाद की पर तिहत से हालि छा तुक्सान के विषय बीमा- क्रा रखेंगे जैसा कि उक्त नियमों में उपबंध है, भौर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप वेंगे। बंधककरी समय-समय पर उक्त बीमा का शीमियम नियमित कुछ से वेंगे भौर जब उनसे घरेशा की अए, प्रीमियम की रसीवें बंधकवार के निरीक्षण के लिये पेश करेंगे। यदि बंधकृत्वार प्रतिन, बाद, तिहत के विश्व बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकवार के निरीक्षण के लिये पेश करेंगे। यदि बंधकृत्वार के निरीक्षण के लिये पेश करेंगे। यदि बंधकृत्वार प्रतिन, बाद, तिहत के विश्व बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकवार के निए यह विधिपूर्ण, किन्तु भाववकर

नियम के प्रधीन प्रभार्य क्याज की प्रसानाम्य वर।

<sup>\*\*</sup>वह' वह क्षारीच लिखिए जिस तारीच को प्रश्निम की पहली कि त बंधककर्ता को दी गयी है।

- (क) बंधिककर्ती उक्त मकान को अपूर्त सर्च पर अच्छी मरस्मत की हालते में रखेंगे और बंधिक सम्मत्ति की बाबत नगरपालिका के और अन्य सभी देनदारियां उस समय तक नियमित रूप से देंगे जब तक कि बंधिकदार को अपूर्म पूरी तीर से चुकी नहीं दिया जाता है। बंधिककर्ता, बंधकदार को उक्त आग्रय को उक्त आग्रय को एक वार्षिक प्रमाणपत्र भी देंगे।
- (च) बंधकर्कली मंकान पूरा होने के बाव बंधकदार की यह सुनिध्यित करने के लिये कि मकान अंक्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएँ उस समय तक वेंगे जब तक कि मर्थिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बावेवक बंधककर्ता ऐसी कोई रुक्त भीर उस प्रर देय ब्याज यदि कोई है, बंधकदार को सौटाएगा जो अधिम के मबूदे, धंस समय के आधिक्य में ली गयी है जिसके लिये बंधिम मंजूर किया गया था।
- (ज) बंधककर्ता, बंधक संपरित को इस विलेख के जारी रखने के बौरान न तो भारित करेंगे, न उस पर बिल्लगम सुजित करेंगे, न उसका मन्य संकमगकरेंगे भौर न उसका किसी भन्य प्रकार से क्यन करेंगे ।
- (का) इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकवार को यह हक होगा कि वह प्रक्रिम की भीषे रकी भीर उस पर ब्याज जिसका सवाय प्रावेदकों बंधककेती की सेवा निवृद्धि के समय तक या यदि सेवा निवृद्धि से पूर्व उसकी पृथ्वे हो गयी है तो उसे समय तक नहीं किया गया है, पावेदक बंधककेती को मंजूर किये जाने वाले सम्यूर्ण उपवाम या उसके किसी विनिधिष्ट भाग में से बेसूल कर लें।

प्रमुखी जिसका करार उल्लेख किया गया है\* इसके साक्य स्वक्षी बंधेर्ककरीयों ने इस पर पंपने हस्तीकी कर विए

उक्त बंधककृतीयो	
· • · · · • • • · · · · · · ने	<b>(ह</b> स्ता <b>क</b> र)
( 1)(มีา	पूर्व साक्षी का काम, पता ग्रीर व्यक्साय)
(प्रां 	यम साक्षी के हस्ताकर)

(2)	(दिसीय सामी का नाम पता भीर क्यबसाय)
	(ब्रितीय सामी के हस्ताकार)
धी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।	·
इसके सोड्यस्वरूप सरकार के लि के प्रादेश ग्रीर निवेश से	र्वि मीर उत्तनी भीर ते तथी बोर्ड
कार्वालय के श्री	· · · · · · · ने
इसं विलेखं पर	(हरतांबर)
(1)	(प्रचम साक्षी का नाम, पता चौर अवस्ताय
*****************	(प्रथम सामी के हस्ताकर)
(2)	(द्वितीय साक्षी का नाम, पता और. व्यवसाय)
्रे. की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।	(द्वितीय साश्री के हस्ताक्षर)∦
भारत के राष्ट्रपेति के लिए झी गौर निदेश सेे ने	र उनकी मोर से तथा उनके मार्थक मनालय/कार्यालय के बी
(1)	(प्रथम सुक्ति का नाम, पता भीर व्यवसाय) (हस्ताकर)
	्रावस अस्य अस्य १९५० १९५० (प्रथम साक्षी के हस्ताकर)
(2)	(द्वितीय सीक्षी का नामें, पेता] और ग्यक्तीय)
***************	(द्वितीय साक्षी के हस्ताकर)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।	
ध्यान वें: साबेचकों को सुलाह वी शुल्क वेने से पूर्व यह सुनि	जाती है कि इस बस्ताबेश पर स्टाम्स निवत करने के सिए कि क्या स्टाम्स निवत करने के सिए कि क्या स्टाम्स निव सकती हैं अपनी राज्य सन्कारों
प्रसिद्धी हैं जब सम्पति पट्टोश्वृति है तब निष्य का प्र	ति 4 प्राचित किये जाने बाले बंधक विशेष क्यं
(विनियम :	7 देखिर <sup>)</sup>
	-

यह करार एक पक्षकार के कप में श्री
भा के श्री
है और जो इस समय
का लिय में में नियोजित है (जिसे इसमें भीय
बंध ककती कहा गया है और इसके अन्तर्गत, उन्नके कुर्द्भित, निष्पुद्भक,
प्रकालक भीर समृत्विभिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विकय या संवर्भ से
अपविजित या उसके विषय नहीं हैं) और दूसरे प्रस्कार के रूप, में न्या

तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें माने बंधकवार कहा गया है मौर

<sup>\*</sup>इसे बंधकनतः भरेंगे।

इसके अन्तर्गंत अगके अन्तरवर्धी, और समनुदेशिती भी हैं जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अनवर्जित या इसके विरुद्ध नहीं हैं) के बीच आज तारीख •••••को किया गया है।

- \*(1) भूमि का ऋष करने के लिये और उस पर मकान बनाने के लिए यां\* (उक्त भूमि पर विद्यमान मकान में प्रानास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- \*(2) (अक्तः भूमि पर मकान बनाने के लिये या\* (अक्त भूमि पर बने मकान में द्यावास स्थाम का विस्तार करने के लिए)।
  - (3) उक्त बसे बनाए मकान का ऋय करने के लिये।

बंधकदार कुछ निबंधनों भीर शतीं पर .... 'ष्पए की उक्त रकम बंधककर्ता को देने के लिये सहमत हो गया है।

उक्त अग्रिम की एक गर्स यह है कि बंधककर्ता को चाहिए कि वह इसमें आगे अनुसूची में वर्णित सम्मत्ति का बंधक करके उक्त अग्रिम के प्रतिसंदाय को और उन सभी निबंधनों और शतों के सम्यक् अनुपालन को प्रतिभूत करें जो नव तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मचारी (मकानों के निर्माण, आदि के लिये अग्रिम का अनुदान) विनियम, 1978 में (जिसे इसमें आगे 'उक्त विनियम' कहा गया है और इसमें जहां संदर्भ के अनुकूल हो, तत्समय प्रवृत्त उसके संगोधन मा उसके परिवर्धन भी हैं) दी हुई हैं।

### ग्रौर बंधकदार ने---

बंधककर्ता को बंधकदार से उक्त प्रश्निम निम्नलिखित किस्तों में मिलना है: |

\*\* .... रुपए .... तारीख को मिल क्रोते हैं

\*\* प्रक्रिया का निष्पादन करेंगे।

\*\* प्राप्त तब जब मकान का निर्माण कुर्सी के स्तर तक पहुंचेगा।

\*\*\*
'रिपण तब जब मकान का निर्माण छन के स्तर तक पहुंचेगा, परन्तु यह नब जब कि वंधकदार का यह समाधान ही जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें मकान बनाया गया है जल प्रदाय, सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालिया धौर मलबहन जैसी मुविधाओं की वृष्टि से पूरा हो गया है।

(मीर परिसर के पट्टाकर्ता ने बंधक का प्रनुमोवन इस गर्त पर किया है कि यदि इसमें घन्तविष्ट शक्तियों के घधीन या प्रत्यया सम्पर्ति का विकय किया जाता है तो ऐसे विकय के खर्च के पश्वात् पहने उने प्रनुशतिन वृद्धि में उसका हिस्सा विया जाएगा जैसा कि उक्त पट्टे में उपबंधित है।

### 🕻 ग्रहकरार निम्नलिखित का साक्षी है:

(1)(क) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंजों के मनुसार बंधकवार द्वारा बंधकवर्ता को मंजूर किये गए/दिए गए उक्त व्यक्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियन के समी निबंधनों घीर गतीं का सरीव सम्यक रूप से अनुसलन करेगा और १००० १००० रूपए )केवल .... रुपए) के उक्त भग्निम का बंधकदार को प्रतिसंदाय ·····रुपए (केंबल ·····रुपए) की\*\*\* ••••• मासिक किस्तों में ग्रपने (बंधककर्ता के) वैसन में करेगा। यह प्रतिसंदाय .....भा के ....भा मास से प्रयवा मकान पूरा होने के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। बंधककर्ता ऐसी किस्तों की कटौतो उसके मासिक वेतन/खुट्टी वेतन/निवहि भसे में से करने के लिये बंधककदार को प्राधिकृत करता है। उक्त अग्रिम की पूरी रकम देने के पण्चात् बंधककर्ता उस पर देय क्याज का संदाय भी ... ·····\*\*\*मासिक किस्तों में उस रीक्षि में **ग्रौर** उन निबंधनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिदिष्ट हैं । परन्तु बंधककर्ता ब्याज सहित ब्रग्निम का पूरा प्रतिसंदाय उस क्षारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख से वह सेवा से निवृत्त होने वाला/यालो है । यदि वह ऐसा नहीं करेगा/करेगी तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय अग्रिम की शेष रकम तथा उस पर अयाज भीर बसूली का खर्च बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के प्रधीन धनुक्रोय किसी घन्य रीति से वसूल करे। बंधकतना इस रकम का प्रतिसदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

(1) (ख) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त जिनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा बंधकदार को मंजूर किये गए/ दिए गए उक्त अग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधकदार को मंजूर किये गए/ दिए गए उक्त अग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधकदार इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधकदार उक्त विनियम के सभी निर्धयों और मार्जी का सदै व सम्प्रक् रूप से अनुपालन करेगा और ...... रुपये (केवल ...... रुपए) की अफ प्रियम का बंधकदार को प्रतिसंवाय .... रुपए (केवल ..... रुपए) की .... मासिक किस्तों में अपने (बंधकदार्त के) बेतन में से करेगा । यह प्रिमादाय .... के .... माम से या मकान पूरा होने के पश्चात्वर्ती मात्र ते, हारे वे जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होकर उसकी अधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा और उसकी अधिवर्षिता की सारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक का क्याज उसके उपवान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से वसूल किया जाएगा । बंधकदार्ती किस्तो की रक्षम की कटौती उसके मार्मिक बेतन/ छुट्टी वेतन/ निविद्य भने में से सथा उस शेष रक्षम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु/ सेवा निवृत्ति/प्रधिवर्षिता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके स्मा

<sup>ः \*</sup>जो लागू हो वह लिखिए।

<sup>ं \*\*</sup>यदि ब्राप्रिम के संदाय का ढंग विनियम 5 में विहित ढंग से भिन्न है तो तवनुसार उसकी भाषा में परिवर्तन कर दिया ज।एगा।

<sup>\*\*\* 180</sup> से मधिक नहीं होगी।

<sup>\*\*\*&</sup>lt;sup>\*</sup> यह 160 से प्रधिक नहीं होंगी।

जपदान/मृत्यु एवं सेया निवृत्ति उपदान में से करने के लिये बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधकदा को यह हक होगा कि यह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बार किसी समय प्रवृत्त करे और उस समय दय ध्रीप्रिम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज और यसूली का खर्च बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के प्रधीन ध्रमुजीय किसी ध्रम्य रीति से वसून करे। बंधकार्ता हा रकम क प्रतिसंदाय इससे कम ध्रवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण : [खण्ड (1) (क) ग्रीर (1) (खा) में से जो लागून हो उसे काट दीजिए]।

(1)(ग) उक्त विनियम के अनुसरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के अनुसार बंधकवार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त प्रश्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों ग्रीर शहीं का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और : : : : : : रुपण् (केवल : : : कप्ए) के उक्त ग्रग्निम का बंधकदार को प्रतिसंद्राय मासिक किस्तों में ग्रमने (अंधककर्ता के) वेतन में से करेगा। यह प्रति-, संदाय: '''के मास से या मकान पूरा होने के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा । बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है भौर बंधककर्ता भन्निम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देय क्याज का भी ' ' ' ' ' रुपए की ःःः मासिक किस्तों में संवाय अपनी ग्रिधविषता की तारीख तक करेगा तथा अग्रिम दी गयी रकम पर अग्रिम की तारीखा से उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस बाकी रकम का जो उसकी श्रधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय भ्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा धौर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन में से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्य्/सेवा नियृत्ति/ ग्रिधिवर्षिता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मृत्यु की सारीख को कोई प्रतिशेष ग्रसंदत्त रह जाता है तो बंधकवार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे ग्रीर उस समय देय ग्रग्निम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज भीर वसूली का खर्च, बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के भन्नीन मनुशेय किसी भन्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम भवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण : खण्ड (1)(क), (1)(ख) या (1)(ग) में से जो लागू न हो उसे काट दीजिए।

(ii) यदि बंधककर्ता श्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति, श्रीधविष्ता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है ध्रवता यदि श्रीम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि बंधककर्ता उक्त विनियम में विनिदिष्ट भौर उसके श्रीर से श्रनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन, शर्त भौर प्रनुबंध का श्रनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में श्रीम का सम्पूर्ण मूलधन या उसका उतना भाग जो उस समय वेय रहता है और जिसका संदाय नहीं किया गया है, भौर उस पर "" में श्रीतशत प्रति वर्ष की दर से स्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त ध्रीम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीख से परिकलित किया जाएगा, तुरन्त संदेय हो जाएगा। इसकी किसी बात के होते हुए भी, यदि बंधककर्ता श्रीम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर

किया गया है तो बंधकवार बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी मनुशासनिक कार्रवाई कर सकेगा जो उसको (बंधककर्ता को) लागू सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त हो ।

(iii) उक्त विनियम के ग्रनुसरण में ग्रौर उपर्युक्त प्रतिफी के लिए तथा उपर्युक्त ब्रिग्निम के ग्रीर उस पर क्याज के, जो उसके पश्चात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के प्रधीय बंधकदार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिभूत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधक-् वार को तारीखः .... ... ... के उक्त पट्टे में समाविष्ट उक्त सम्पत्ति का जिसका पूरा वर्णन इसमें आगे लिखी धनुसूबी में किया-गया है, उक्त संपत्ति पर (जिसे इसमें झागे कंधक संपत्ति कहा गया है) बंधककर्ता द्वारा निर्मित्त या निर्मित किए जाने वाले भवनों प्रथवा तत्संमय उस पर रखी सामग्री का उक्त बंधक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्हीं भक्षिकारों, सुखाचारों भौर श्रमुलग्नकों सहित भनुदान, हस्तातरण, भंतरण भौर समनुदेशन बंधकदार द्वारा की गयी प्रसंविदाओं भौर इसमें अंतर्विष्ट शर्तों के ग्रधीन रहते हुए करता है । बंधकदार उक्त बंधक संपत्ति की पूर्ण रूप से किन्तु उक्त पट्टे के निबंधनों भीर प्रसंविवार्थों के प्रधीन रहते हुए धारण करेगा । किन्सु यह इसमें आगे दिए हुए मोचन संबंधी इस उपबंध के ब्राधीन होगा । यह भी उपबंध है तथा इसके पक्षकारों द्वारा यह करार किया जाता है भौर घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता, वंधकदार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन ग्रीर ब्याज का ग्रीर ऐसी ग्रन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ता द्वारा बंधकदार को उक्त विनियम के निबंधनों भीर भतों के भ्रधीन संदेय भवधारित की जाए, सम्यक् रूप से संवाय इसमें वी हुई रीति से कर देगा तो बंधकवार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ता के प्रनुरोध धौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिहस्तांतरण भीर प्रति ग्रंतरण बंधककर्ता को उनके या उनके निदेशानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

(iv) इसके द्वारा श्रिभिश्यक्त रूप से यह करार किया जाता है श्रीर घोषणा की जाती है कि यवि बंधककर्ता अपनी मोर से की गयी मौर इसमें दी हुई प्रसंविदामों को मंगकरता है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/ग्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है यायदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के ग्राधीन बंधकदार को संदेश है, ग्रौर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त ग्राग्रिम या उसका कोई भाग इस विलेख के ग्राधीन या किसी ग्रन्थ रूप से तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विक्रय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ों में फ्रौर लोक नीलाम क्वारा था प्राइवेट संविधा द्वारा कर दें। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका ऋय कर ले या विकय की किसी संविदा को विखंडित कर दे ग्रीर उसका पुन: विक्रय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्भेदार न हो जो∘ ऐसा करने से हो । उसे यह माक्ति भी होगी कि वह ऐसा करने के लिए, जो बंधकवार ठीक समझे, सभी कार्य करे और हस्तांतरण पत्नों का निष्पादन करे। यह घोषणा की जाती है कि वेचे गए परिसर या उसके किसी<sup>,</sup> भाग के ऋय धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि कैताया केताओं ने कय धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त मानित की अनुसरण में किए गए किसी विकस्य पर प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप धारण करेगा । उसमें से अर्थ प्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का संदाय किया जाएगा \*\*(ग्रीर उसके बाद, बंधक संपत्ति के पट्टाकर्त्ता, '''''''''''''''''' की उक्ताः पटटे के खण्ड ''''' के अनुसरण में, अनुपार्जित वृद्धि के 50 प्रतिशत का संदाय किया जाएगा) ग्रीर तब इस विलेख की प्रति भृति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संवायः किया जाएगा भीर यदि कोई धन बाकी रहता है तो यह बंधककर्ताको दे दिया आएगा।

<sup>\*</sup> नियम के प्रधीन प्रभार्य ब्याज की प्रसामान्य दर।

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup> जो लागून हो उसे काट दीजिए।

- (5) बंधेकैंकेती इसके द्वारी बंधेकवार के साथ यह ब्रसेविया करती है कि :
- (क) बंधकर्कति को इस बात का, विधिपूर्ण धर्धिकार ग्रीर प्राधिकार है कि वे बंधक संपत्ति का बंधकवार को और उसके उपयोग के लिए धनुदीन, हस्तीवरण, बंतरण और समनुदेशन उक्त रीति में करें।
- \*(ख) कि बंधककर्ता मकान के निर्माण/उक्त मकान में प्रावास स्थान में परिवर्तम को काम उस अनुमेदित मक्यों और उन विमिर्देशों के अमुसार ही करेगा जिनके प्राधार पर उकत प्रतिमें की संगणना की गयी है और वह मंजूर किया गया है, जब तक कि उससे विकलन की अमुबा बंधकदार ने म दे वी हों। बंधककर्ता कुटैिं/छल पड़ने के स्तर पर अमुबा प्राविम की किस्तों के लिए घावेदन करते समय यह अमेणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्से और प्रावकलन के अनुसार किया जा रहा है जो उसने बंदकवार को दिए हैं, कि निर्माण कार्य कुटिं/छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है और मंजूर किए गए धायम में से ली जा चुकी रकम का बस्तुत: उपयोग मकान के मिर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रवाणपत्नी के सही होने का सत्यापन करने के लिए वंधकदार को स्थय या उसके प्रतिनिध के द्वारा निरीक्षण करने की प्रतृमित देगा/देगी। यदि बंधकवार को उसे मंध्या प्रमाणपत्न देता है तो उसे बंधकदार को वह सम्पूर्ण धायम, जो उसे मिला है तथा उस पर

..... \*\*प्रतिशत प्रतिवर्ष की वर से क्याज देना होगा । इसके प्रतिरिक्त बंधककर्ता के विरुद्ध, उसकी लागू सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त अनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी

- \*\*(ग) बंधकंकती मकाने का निर्माण/उक्त मकाने में प्रायांस स्थाने में परिवर्धन करेगा जब कि बंधकदीर ने इस काम के लिए लिखित कर में संगय ने बढ़ी दिया हो। इसमें व्यक्तितम होने पर बंधकंकती को, उने दो गई संपूर्ण रक्तम का और उक्त विनियम के अवीन परिकर्शन व्यक्ति का एके मुर्शन प्रतिसंदाय तुरन्त करना होगा। बंधकंकती मकान पूरा होने को तारी खंकी सूचना बंधकदार को देगा और वह बंधकदार को इस प्रायय का एक प्रभाणपत्न देगा कि प्रतिम को पूरो रक्तम का उन्नोग उती प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।
- (च) बंधनकर्ती भारतीय जीवन बीमा निगम में उप महाने का तुरस्त भवने **अर्च** पर बोमा उत्ती रक्तमें के लिए कि राजा जा उक्त प्रतिम की रक्षण से कम न ही । वह उसे उसे समय तक जब तक कि वंधकैंबार को अभिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है, अभिन, बाद और तदित से 'हानि' यां 'मुकसान' के विरुद्ध बोमाकृते रखेगा जैसा कि उक्त वितियम में उपनेष्ठ है, भीर बीमा पालिसी बंधेकदार को सींप देंगे । बंधेककर्ती समय समय पर उक्त बोमां का प्रोमियम नियमित कर से देन। ग्रीर जब उससे भरोका की जाए, प्रोंनियमं की रसीवें बंबनदार के निरोक्षणें के लिए पेश करेगा । यदि बंधककेंदि धिन, बाके, तड़ित के विरुद्ध बीमा नहीं बाराता है तो बंधेक्वार के लिए यह विधिवूर्ण, किन्तु भावद्वकर नहीं होगा कि वह उक्त मकाम का बीमा बंधेककर्ती के खर्च पर करीले धीर प्रीप्तियम की रकंग को प्रक्रिम की वकाया रकंग में जोड़ ले। तब वैधक-करों कि। उस पर व्याज देना होना मानो प्रोमियन को रकम उसकी 🔧 ····· रुपए के पूर्वीके प्रियम के भागे के रूप में दो गई। थीं । यह व्याज उसे उस समय तक देना होगा जबतेक कि वह रकमें बंधकंदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी बसूंखी इस रूप में नहीं हो जाती है मानों वह इस विलेख की प्रतिमृति के प्रतर्गत आले वाली रक्तम हो । बंधककर्ता, जब भी उससे प्रवेक्तिस हो, बंधकदार को एक पत्न देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होंगा जिससें उन्हें मकान का बोमा कराया गया है। यह पत्र इसतिए होता कि बंधक-दार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंबकदार उस बीमा पालिसी में हितबद है।

- (छ) बंधककर्ती उक्त मंकान की ब्राउन खंबी पर अंब्छी मेरम्मेंत की हालते में रखेंगा और बंधक सम्पत्ति की बॉबत नगरपालिका के और मध्य सभी स्वानीय रेट, कर, भीर भन्य सभी देनवीरियों उस समय तक नियंभित रूप से देंगा जब तक कि बंधकदार की अधिम पूरी तीर में चुकी नहीं दिया जाता है। बंधकदार, मंधकदार को उक्त अधिम का एक बाँविक अभागपे भी देगा।
- (च) बंधककर्ता, सकता पूरा होते के बाद बंधकदार को यह सुनिरिवर्त करने के लिए कि संकाल अच्छी सरम्मंत की होलते में रखी गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि अधिमं पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बंधककर्ता ऐसी कोई रक्षम और उस पर देय, ब्याज, याँद कोई हो, बंधकदार को लौटाएगा जो स्रविम के सहे, उन व्ययं के स्नाधिक्य में ली गई है जिसके लिए स्रविम मंजूर किया गया था।
- (ज) तारीखें की पट्टा के जी उक्त बंधेक संवर्षि को विधिमान्य और प्रस्तित्वयुक्त पट्टा है भीर वह किसी मो रूप में मूर्यि या गून्यंकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा भारिका किरीए को संवाय भीर उसमें दी हुई प्रसंविदिशों भीर मेती को पालन इस विलेख की तारीख तक कर विधा गया है भीर इसमें इसके पूर्व विशेत रीति में इसका समनुवैशन किया जा सकता है।
- (क्त) बंधककर्ता उस समय तक जब एक कोई धर उक्त बंधक संगत्ति की जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा मनर्नुदेशित म्राभिध्यक है, प्रतिभूति पर वेय रहता है भीर हर हालत में उक्त करार को प्रश्नीय नक पट्टे की मभी प्रसंविद्यों का घीर उक्त पट्टा विलेख में धर्तविष्ट गतों का मध्यक् क्य से धनुपालन करेगा तथा बंधकवार को उन सभी धनुपीजनों, वार्ती, कार्यवाहियों, खर्बी, प्रभारों, वार्ती और मांगों को बाबत क्षतिपूरित रखेगा जो उक्त किराए का संवाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रसंविद्यां धौर गती के या उनमें से कि ही के मंग किए जाने, प्रानन या धनुपालन न किए जाने के कारण उपगत होंगी।
- (ञा) बंधकर्कती, बंधकं संपत्ति को इस विलेख के जारी रहते के वौरान न तो भारित करेगा, न उस पर बिंटलर्गम सृजित करेगा, न उसका भन्य संकामण करेगा और न उसका किसी भ्रम्य प्रकार से ब्यायन करेगा।
- (ट) इसकी किसी बाल के होते हुए भी बंधेकबंद की यह हक होगा कि वह प्रिमिम की ग्रेषे रकमे और उस पर ब्याओ जिसेका संवीय बंधेककेती की सर्वानिवृति के समय तक या यदि सेवीनिवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गर्द है तो उस समय तक नहीं किया गर्या है, बंधेककेती की मंगूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपयान या उसके किया बिनिविदें भाग में से बसूल कर ले।

मनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है ।††

इसके साक्ष्यस्वरूप बंधककर्ता ने भीर बोर्ड के लिए भीर उसकी भीर
से "कार्यालय के श्रा "ने इस पर भाने
हस्ताक्षर कर दिये हैं।

उक्त बंधककर्ता " ने (हस्तेंक्षरें)

(i) (प्रथम संधिका नाम, पर्वा भीर व्यवसाय) (प्रथम साशी के हस्ताक्षर)

(2) · · · · · · · · (द्वितीय साक्षो का नाम, पता भीर ध्य-बताय) · · · · · · · · · (द्वितीय साक्षा के हस्ताक्षर)

की उपस्थिति में हस्साक्षर किए । 🚶

\*जहां भग्निमं बनें बनोएं मुक्तान के कय के लिए हैं वहां खण्ड (ख) भीरें (ग) लागू नहीं होंगे।

<sup>\*\*</sup>नियम के प्रधीन प्रभार्य क्याज की प्रस्तावित दर ।

<sup>†</sup> यहां वह तारीख लिखिए जिस तारीख की पश्चिम की पहली किस्त बंधककर्ता की दी गई है। † १इसे बंधककर्ता भरेगा।

<u> </u>
भारत के राष्ट्र पति के लिए भीर उनकी और से नया उनके आदेश भीर निदेश से भारतीय के आर्थ
4
(हस्ताक्षर)
(1) ''(प्रयुत सङ्ग्री को न.स.,पत्तः,प्रौर,व्यवसः॥) '''(प्रयम सःक्षी के हस्तःकर)
(2) · · · · · · · · · · · (विद्यीय साक्षी का नाम, पता घौर व्यवसाय)
(द्वितीय साक्षी ्रके ,हस्ताक्षर,)
्मी उप्रक्रियति में हस्ताभर मिए ।
ध्यान हैं:─्रमाझेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्ताओं पर स्टांप श्रुटक देते से पूर्व ग्रह सुनिश्चित करते के लिए कि क्या स्टांप श्रुटक के संद्राय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से संपर्क कर लें।
प्ररूप संख्यु  4-क
जब सम्प्रति पट्टाधृति है स्पीर संयुक्त रूप से पति सीर पद्मी के नास से धारित है तुन निष्पादित किए जाने वाले बंधक वितेष का प्रका।
यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री
''''' के श्री'''' का पुत्र है सीर जो इस समय'''' के कार्यानय में
के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/परनी
(जिन्हें इसमें भागे संयुक्त रूप से 'बंधककर्ता' कहा गया है भौर इसके मंतर्गत उनके पारिस, निष्पादक प्रशासक भौर समनुदोधितों भी हैं, जब तक कि ऐसा
विषय या संवर्ध से अपविजित या उसके विरुद्ध तहीं है) ग्रीर दूसरे पक्षकार के रूप में तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड जिसे इसमें ग्रागे "बंधकदार" कहा गया है ग्रीर इसके ग्रंतर्गत उसके उत्तरवर्ती ग्रीर समनुवेशिती भो
्हें जब सक कि ऐसर विषय या संवर्ध से घरताजित या उसके विषय नहीं है) के शीच घाज तारीखः को किया गया है।
तारीच कें पट्टे द्वारा, ओ श्रीर
प्रापे धनुसूची में किया गया है, पट्टान्तरण एक के वार्षिक/
मासिक किराए पर से प्रारंभ होने वाली
वर्षे की श्रवधि के लिए और इस बात के श्रधीन रहते हुए कि उसमें वर्णित प्रसुंविदाओं श्रीर शर्तों का पालन श्रीर श्रतुपालन किया जाएगा,
बूंधकृति की दिया है।
श्रंधकरुतीओं में से एक श्री ने (जिसे इसमें इससे 'सावेदक बंधकरुती' कहा गया है) न्य किया है। सोबेदक बंधक- इससे) के समिन के लिए बंधकरार की सावेदन किया है। साबेदक बंधक-
कर्ता ने यह भग्निम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है,
*(1) भूमि का अल, करने के लिए और इस पर मकान बनाने के लिए या है (उक्त भूमि पर विद्यमान मुकान में भावास स्थान का विस्तार करने के लिए)
*(2) उक्त भूमि पर मकान बनाते के लिए सा*(उक्त भूमि पर बने मकान में भ्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
*(3) उक्त बने बनाए मकान/फ्लैट का कप करने के लि <i>ज्,</i>
वंधकवार कुछ निवंधनों और शतों परः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
की उक्त रक्तम बंधकृत्रत् को देने के लिए सहमत हो गया है।
*ओ लागूहो वह लिखिए।

उक्त प्रिम की एक गर्त यह है कि बधककर्ता को चाहिए कि वह इसमें मार्ग भनुसूची में वर्णित सम्पत्ति का बंधक कर्क उक्त मधिम के प्रति संबाय को भीर उन सभी निबंधनों भीर शती के सम्यक् अनुपालन को प्रतिभूत कर्रे जो तूतीकोरिन पत्तन न्यास कर्मवारी (मकानों के निर्माण मावि के लिए प्रशिम का भनुवान) विनियम, 1979 में जिसे इसमें भागे "उक्त विनियम" कहाँ गया है भीर इसमें जहां संदर्भ के भनुकूल हो, तस्समय प्रवृत्त उसके संशोधन या उसके परिवर्धन भी है) दी हुई हैं।

भीर बंधकवार ने .....

- \* (1) व्यावेदक वंधकतिर्वाको : : : : : : राजे (केवल : : : : : : रपमे) का क्रिम मंजूर कर दिया है। यह मित्रम उत्तो किन्तों में स्नौर उस रीति भें संदेय होगा जो इसमें झागे बनाई गई है।
- \*(2) झालेदक वंधक्कहा को .... रामे (केनल ... क्यये) का मंत्रिमः ' ' ' ' ' तारीक्ष को ग्रीर उक्त वितियम में अपविक्रित रीति में वे विया है, तथा उस उधार का स्थाज सिहत प्रतिसंदाय तथा, उक्त विनियम में विष हुए निसंधनों सुपैर शाली का, ज़िएका उल्लेख इसमें माने फ़िया मया है, चतुपानन इक्सें मध्ये वो हुई रोति से प्रतिभूत करा लिया है ।

धावेदक बंधकभती को बंधकवार से उक्त प्रश्निम निम्नलिखित किस्त्रों में मिलना है:

\*\* . . . . . . . . . . . . . . . . . सारीख को मित्र चुके हैं।

\*\* ..... इसमें तब जान बंधककृती, बंधकदार के पक्ष में इस ज़िलेक् का निश्वादत करेंगे।

\*\*···· रुपये तब जब सकान का निर्दार्ण कुर्सी के स्तर पर पहुंचेगा । \*\* : : : : : हपये तब जब मकान का निर्माण छत के स्तर तक पहुंचेगा, परंतु यह तब जब कि बंधकदार का यह समाधान ही जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिपमें मकान बनाया गया है, जल प्रदाय, सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालियों धौर मलवहन जैसी सुविधाधों की दृष्टि से पूरा हो गया है)

†(ग्रीर परिसर के पट्टाकर्ता ने बंधक का भनुमोदन इस गर्त पर किया है कि यदि इसमें अंतर्विष्ट गरिनयों के अधीन या मन्यणा सम्पति का विकय किया जाता है तो ऐसे विकय के खर्च के पश्चात्, पहले उसे अनुपार्जित वृद्धि में उसका हिस्सा दिया जाएगा जैसा कि उक्त पट्टे में उपवंधित है ।)

यह करार निम्क्लिबित का साक्षी है।

(1) (क) उक्त विनियम के प्रतुपरण में घौर उक्त विनियम में उपबंध के अनुसार बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककती को मंजूर किए गए/विए गए उक्त प्रश्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता, बंधकदार से यह प्रसंविदा करते हैं कि बंधकुकर्ता उक्त विनियम के सभी निबंधनों श्रीर शतों का सर्वव सम्यक् रूप से प्रन्पालन करेंगे भीर '''' रुपये (केवल ·····ःकपये) के उक्त अग्रिम का बधकवार को प्रतिसंदाय ····ः रुपये (केवलः : : रुपये) की †† : : मासिक किस्तों में धावेवन बंधककर्ता के बेतन में से करेंगे। यह प्रतिसंवाय ::: के '''' मास से प्रथवा मज़ान पूरा होते के पश्चात्वर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्राइंग होगा। प्रावेदक बंधककर्ता ऐसी किस्लों की कटौती उसके मासिक बेनन/छुट्टी बेनन/निर्वाह भरते में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। उक्त प्रतिम की पूरी रकम देवे के बश्वाल धानेदक बंधककर्ता उस पर देप स्थाज का संदाय भी ....£ मासिक किस्तों में उस रीति में भीर उन निश्चंत्रनों पर करेगा जो उक्त विनियम में विनिर्दिष्ट है । परंतु ग्राबेदक बंधककर्ता व्याज महित प्रश्निम का पुरा प्रतिसंवाय उस तारीच

<sup>\*\*</sup>यदि प्रशिम के संव≀य का ढंग क्षिनियम 5 में विहित ढंग से भिल्त है तो तबनुसार इसकी भागा में परिवर्तन कर दिया जाएगा। †थह् (सामान्यतः) नजूल भूमि को लागू होता है भौर वहां भंतःस्थापित किया जाएगा जहां लागू हो। † + यह 180 से मधिक नही होगी।

<sup>£</sup> यह 60 से मधिक नहीं होगी।

से पूर्व करेगा जिस नारील को वह सेवा में निवृत्त होने वाला/वाली है विषय वह ऐसा नहीं करेगा जो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय पबुत्त करे और उस। समय देय प्रश्निम की शेष रकम नथा उस पर ब्याज और बसूली का सर्ज बंधक संपत्ति का विक्रय करके ब्रिधि के प्रधीन प्रनुजेय किसी प्रत्य रीति से बसूल करे। प्रावेदक बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसमें कम अविध के भीतर कर सकता है।

(1) (क) उक्त विनियम के ग्रन्सरण में ग्रौर उक्त विनियम के उपग्रंथों के मनुसार बंधकवार द्वारा भावेदक बंधककर्ता को मंजूर किए गए/विए गए उपन श्राप्तिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करते हैं कि संधककर्ला उक्त विनियम के सभी निर्वधनों भीर शर्ती का सबैब सम्यक् रूप से प्रनुपालन करेंगे भीर '''' रूपये (केवल '''रुपए) के उक्त प्रश्निम का बंधकदार को प्र संवाय ...... रुपये (केवल ..... रुपये) की \* ..... मासिक किस्तों में, भावेदक मधककर्ता के वेतन में से करेंमे। यह प्रतिसंदाय के .....माम से या मकान पूरा होने के पत्रवाल्वर्शी माम से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होकर उसकी ग्रधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा और उसकी अधिवर्षिता की तारीख पर जो रकम बकाया होगी तथा प्रग्निम दी गई रकम पर प्रग्निम की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक का ब्याज उसके उपदान/मृत्यु एवं मेवा निवृति उपदान में से बसूल किया जाएगा। भावदक बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक बेनन/फुट्टी देतन/निकहि भस्ते में से तथा उस शेष रकम की जिसका संदाय उभकी मृत्य्/सेवा निवृति/ग्रधिवर्षिना की तारीख तक उपदान/मृत्यु कटौती उसके ₹, सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए वैधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधकदार को वह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे घौर उस समय देय ग्राग्रिम की गोष रकम तथा उस पर व्याज ग्रौर वसूली का खर्च, बंधक संपत्ति का विकय करके या विधि के प्रधीन धनुज्ञेय किसी धन्य रीति से वसूल करे। घानेदक अधिककर्त्ता इस रकम का पनिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता

(1) (क) उक्त विनियम के धनुमरण में और उक्त विनियम के उपबंधों के प्रन्सार बंधकदार हारा बंधककर्ता की मंत्रूर किए गए/ दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककृती उक्त विनियम से सभी निबंधतीं भौर शतों का सदैव सम्यक् रूप से भ्रनुपालन करेगा भ्रौर '''''' रुपये (केवल क्षाप्त क्षेत्र क्षेत्र के जन्न अग्रिम का बंधकदार को प्रति-(केवल · · · · · · रुपये) संवाय .... भपवे) की,........मासिक किस्लों में ग्रंपने (बंधककर्ता के देतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय : के : : माम से या मकान पूरा होने के पश्चातुवर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। बंधककर्ता इसके हारा बंधकदार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक बेतन/छट्टी येतम में से करने के लिए प्राधिक्कन करना है ग्रौर बंधककर्ता प्रिमिस की पूरी रक्तम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देय ब्याज का भी '''' रुपंग की '''' मामिक किस्तों में संदाय ग्रपनी ग्रधि-वर्षिसा की तारीख तक करेगा तथा ग्रग्निम दी गई रकम पर ग्रग्निम की प्तारीख से उसके प्रतिसंवाय की सारीख तक के क्याज की उस बाकी रकम क़ा जो उसकी ध्रधिषर्षिता की सारीख को बकाया रहती है, संदाय भ्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति/उपदान से करेगा भीर बंधककर्ता किस्सी की रकम की कटौती उसके मासिक वेनन/छुट्टी वेतन में से तथा उस शेष रकम भी जिसका संदाय उसकी मृत्यु/मेव। निवृत्ति/प्रधिवर्षिता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निमृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करना है।

मिष् उसकी मृत्यु की तारीख को कोई मित्रीय असंदरत रह जाता है तो बंधकदार की यह इक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय मित्रम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज और वसूली का खर्च, बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के मधीन भनुभैय किसी मन्य रीति से वसूल करे। बंधककती है। इस रकम का प्रतिसंवाय इससे कम म्रविध के भीतर कर मकता है।

[टिप्पण - खंड (1) (क), (1) (ख) या (1) (ग) में से जो लागू न हो उसे काट बीजिए]

(2) यदि भावेदक बंधककर्ता अग्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि भावेदक बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/प्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है अथवा यदि अग्निम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यू हो जाती है, या यदि बंधककर्ता उक्त विनियम में विनिर्दिग्ट भौर उसकी मोर से भनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन, गर्त ग्रौर धनबंध का भनुपालन नहीं करता है तो ऐसी प्रत्येक दणा में प्रिप्तम का संपूर्ण मूलधन या उसका उतना भाग जो उस समय देय रहता है और जिसका संवाय नहीं किया गया है भीर उस पर ' ' \*\* अतिशत अतिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त ग्रग्निम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीस्त्र से परिकलित किया जाएगा तुरस्त संदेय हो जाएगा। इसकी किसी बात के होते हुए भी, यदि प्रावेदक बंधककर्ता प्रग्निम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार बावेदक बंधककर्ती के विरुद्ध ऐसी श्रमुणासिक कार्रवाई कर सकेगा जो उसका (श्रावेदक बंधककर्ता को) लागू सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त हो।

(3) उक्त नियम कि अनुसरण में और उपर्युक्त प्रतिकल के लिए .नया उपर्यक्त मग्रिम के मोर से उस पर ब्याज के, जो उसके पश्चात किमी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के अधीन बंधकदार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिभृत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को तारीख.... '...' जक्त पट्टे में समाविष्ट उक्त सम्पनि का जिसका पूरा वर्णन इसमें मागे लिखी धन्सूची में किया गया है, उकत संपरित पर, जिसे इसमें भागे बंधक संपरित कहा गया है, बंधककर्ता द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने बाले भवनों भथवा तत्समय उस पर रखी सामग्री का, उक्त, बंधक संपरित से संबंधित सभी या किन्हीं श्रधिकारी मुखाचारों भीर भनुलग्नकों सहित भनुवान, हस्तांतरण, भंतरण भीर सम-नदेशन बंधकदार द्वारा की गई प्रसंविदाओं और इसमें धंतर्विष्ट शतों के ग्रधीन रहते हुए करते हैं। बंधकवार उक्त बंधक संपत्ति की पूर्ण रूप से किन्सु उक्त पट्टे के निबंधनों ग्रीर प्रसंविदाशों के मधीन रहते हुए धारण करेगा । किन्तु यह इसमें भागे दिए हुए मोचन संबंधी उपबंध के प्रधीन होगा प्रयात् यदि बंधककर्ता, बंधकवार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन भौर व्याज का और ऐसी ग्रन्थ रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ताओं द्वारा बंधकदार को, उक्त विनियम के निबंधनों ग्रीर शर्तों के ग्रंधीन संदेय ग्रंवधारित की जाए, सम्यक् रूप से संबाय उसमें दी हुई रीति से कर देंगे तो बंधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ताओं के घन्रोध गौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिहस्तांतरण भौर प्रति अंतरण बंधककर्ताओं को उनके या उनके निदेशा-नुसार, उपयोग के लिए कर देगा।

(4) इसके द्वारा भ्रभिष्यक्त रूप में यह करार किया जाता है भीर घोषणा की जाती है कि यदि प्रावेदक बंधककर्त्ता अपनी भ्रोर से की गई 'भ्रीर इसमें दी हुई प्रसंविदाओं को भंग करता है या यदि उन सभी रक्तमों के जो इस विलेख के भंधीन बंधकदार को संदेय हैं, भ्रीर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या

<sup>\*</sup> यह 180 से घ्रधिक महीं होगी।

<sup>\*\*</sup> नियम के अधीन प्रभार्य व्याज की प्रसामान्य वर

यपि उन्त ध्रश्निम मा इसका कोई साम इस विलेख के प्रापीन या किसी श्रस्य रूप से तुरंत संदेव हो जाता है तो ऐसी प्रस्येक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विश्रय न्यायालय के हस्सक्षेप के बिना, एक मार्थ या ट्कड़ो में श्रीर लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट मंत्रिदा द्वारा कर दें। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका कय कर ले या विकय की किसी संविदा को विखंडित कर दे और उसका पुनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो। उमे यह प्रक्रित भी होगी कि वह ऐसा विक्रय करने के लिए जो बंधकदार ठीक समझे, सभी कार्य करे और हस्तांतरण पत्नें! का निष्पादन करे। यह घोषणा की जाती है कि बेचे गए परिसर या उसके किसी भाग के ऋग धन के लिए बंधकदार की न्सीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता या केताओं ने क्रय धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उकत गर्मित के श्रनुसरण में किए गए किसी विकय से प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप में धारण करेगा। उसमें से सर्व प्रथम ऐसे विकय पर श्रुए खर्च का संदाय किया जाएगा (ग्रीर उसके बाद, बंधक संपत्ति के पट्टाकर्ता .... को उत्त पट्टे के खण्ड .... के ग्रनु-सरण में, ब्रनुपार्जित बृद्धिध के 50 प्रतिशत का संदाय किया जाएगा) श्रीर तक इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा और यदि कोई धन बाकी रहता है सो वह बंधककर्ताको दे दिया जाएगा।

- (v) बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करते हैं कि:---
  - (क) बंधककर्तात्रों को इस बात का विधिपूर्ण अधिकार और प्राधिकार है कि वे बंधक संपत्ति का, बंधकदार को और उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तांतरण, अंतरण और समनुदेशन उक्त रीति में करें।
  - \*\*(ख) श्रावेदक बंधककर्ता संकान के निमार्ण/उक्त संकान में भावास स्थान में परिवर्धन का काम उस भ्रनुमोदिस नक्को श्रौर उन विनिदेशों के श्रनुसार ही करेगा जिनके ग्राधार पर उक्त प्रश्रिम का संगणना की गई है और वह मंजूर किया गया है, जब नक कि उससे विचलन की भ्रनुजा बंधकवार ने न दे दी हो। आवेदक बंधककर्ता कुरसी/ छत पड़ने के स्तर पर ब्रनुजेय श्रमिम की किस्तों के लिए आवेदन करने समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्से भीर प्राक्कलन के प्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं कि निर्माण कार्य कुरसी/छत पढ़ने के स्तर तक पहुंच गया है और मंजूर किए गए ग्राप्रिम में से ली जा चुकी रकम का बस्तुत: उपयोग मकान के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नों के सही होने का मत्यापन करने के लिए बंधकदार को स्वयं या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देगा। यदि बंधककर्ता कोई मिथ्या प्रमाणपत्न देना है तो उसे अंधनवार को वह संपूर्ण मग्रिम, जो उसे मिला है सथा उस पर 🗥 🦈 प्रतिकात प्रतिवर्ष की दर से व्याज देना शोगा। इसके अतिरिक्त उपयुक्त बंधककर्ता के विरुद्ध उसकी लाग् सेवा के नियमों के अधीन उपयुक्त श्रनुणासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।
- \*\*(ग) घ्रावेदक बंधककर्ता मकान का निर्माण/उक्त मकान में भ्रावास स्थान में परिवर्धन · · · · · · · \*\*\* के घ्रट्ठारह मास के भीतर पूरा करेगा जब सक कि बंधकदार ने इस काम में लिए

- लिखित रूप में समय न बढ़ा विया हो। इसमें व्यक्तिम होते पर आवेषक बंधककर्ता को, उसे दी गई सम्पूर्ण रूकम का भीर उकत विनियम के भधीन परिकलित स्याज का एक सुधत प्रति-संदाय करना होगा। आवेषक बंधककर्ता सकान पूरा होने की तारीख की सूचना बंधकवार को येगा भीर बहु बंधकदार को इस अध्यय का एक प्रमाणपत्न देगा कि अग्निम की पूरी रकम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजुर किया गया था।
- (प) मंधककर्ना भारती या जीवन बीमा निगम में उस महान का त्रंत अपने खर्च पर बीमा उसनी रकम के लिए करायरे जो उक्त प्रिप्तिम की रकम से कम न हो। वे उसे उस समय सक जब तक कि मंधकवार को प्रश्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है, ग्रग्नि, बाक भीर सिक्त से हानि या नुकमान के विरुद्ध बीम।कृत रखेंगे, जैसा कि उक्त बिनियम में उपबंध है, भीर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देगे। बंधककर्ला समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित रूप मे देगें भीर अब उनसे ग्रपेक्षा की जाए, प्रीमियम की रसीवें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेश करेंगे। यदि बंधककर्ता प्रस्मि, बाढ़ तिहत के विख्त बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण, किन्तु आबद्धकर नहीं होगा कि वह उन्त मकान का बीमा बंधककर्ताओं के खर्चपर कराले और प्रिमियम की रकम को प्रक्रिम की बकाया रकम में जोड़ लें। तब प्रावेदक बंधककर्ताको उस पर ''''प्रतिवर्षकी धर से स्थाज देना होगा मानों प्रीमियम की रकम उसको उक्त अग्रिम के भाग के रूप में दी गई थी। समय तक देशा होगा जब तक कि वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी बसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानों वह इस विलेख की प्रसिभृति के ग्रंतर्गत ग्राने वाली रकम हो। बंधककर्ता जब भी उनसे अपेक्षित हो, बंधकवार को एक पत्र वेंगे जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस मकान का बीमा कराया गया है। यह पक्ष इसलिए होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले को इस लध्य की सूचना दे मकेंगें कि बंधकदार उस बीमा पालिसी में हिसबद्वध है।
- (इ) बंधककर्ता उक्त मकान को ध्रमने खर्च पर ध्रच्छी मरम्मन की हालत में रखेने घौर बंधक संपत्ति की वाबत नगरपालिका के ग्रौर भ्रत्य सभी स्थानीय रेट, कर, भौर भ्रत्य सभी देन-दारियां उस समय तक नियमित रूप से देंगे जब नक कि बंधकदार को भग्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त भ्राग्नय का एक वार्षिक प्रमाण पत्न भी देंगे।
- (च) अंधककर्ता, मकान पूरा होने के बाद बंधकवार को यह मुनि-िश्चत करने के लिए कि मकान ग्रच्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है निरीक्षण करने की सभी मुनिधाएं उस समय नक देंगे जब तक कि ग्राधिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) ग्रावेकक बंधककर्ता ऐसी कोई रक्षम ग्रीर उस पर वेय ब्याज, यदि कोई हो, बंधकदार को लौटायेगा भी ग्राग्निम के मुद्दे, उस व्यय के ग्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए ग्राग्निम मंजूर किया गया था ।

<sup>\*\*</sup> जहां ग्राप्रिम बने बनाए मकान के कब के लिए हैं बहां खण्ड (स्त्र) ध्रुपौर (ग) लागू नहीं होंगे।

<sup>\*</sup>नियम के अधीन प्रभार्य ब्याज की प्रस्तानित दर।

<sup>\*\*\*\*</sup>यहां वह नारीख लिखिए जिस नारीख को अग्निम की पहली किस्त बंधककर्ता को वी गई है।  $887~\mathrm{GI/80}$ —4

<b>5</b> 6	THE GAZETTE OF INDIA:	EXTRAORDINARY
(স)	तारीख फा विधिमान्य भीर भ्रस्तित्वयुक्त पट्टा है शीर वह	(1)
	किसी भी रूप में जून्य या जून्यीकरणीय नही है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा आरक्षित विराये का मंदाय और उसमे दी	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
	हुई प्रसंविदास्रों धौर मनौं का पालन इस विलेख की नारीख तक कर दिया गया है स्रौर इसमें इसके पूर्व वर्णित रीति में इसका सममुदेशन किया जा सकता है ।	(2)
	· ·	*****,******
(朝)	यंक्षककर्ता उस समय तक जब तब कोई धन उक्त बंधक संगरित की जिसका उल्लेख इसमें भागे लिखी भ्रानुसूची में किया गया	की उपस्थिति में हस्ताक्षा
	है, भौर जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा समनुदेशित अभि-	ध्यान दें: धावेदकों को
	व्यक्ति है, प्रतिभृति पर देय रहता है छौर हर हालत में उक्त	पर स्टाम्प
	करार की भ्रवधि तक पट्टे की सभी प्रसंविदाओं का और उक्त	निः मया स
	पट्टा विलेख में ग्रंतिंक्ट शर्तों का सम्यक्ष रूप से अनुपालन करेंगे तथा बंधनदार का उन सभी अनुयोजनों, वादों, कार्ययाहियों, खर्चों, प्रभारों, दायो और मांगों की आवत क्षतिपूर्ति रखेंगे जो उक्त किराये का सदाय न किये जाने के कारण या उक्त प्रसंविदाधों शनीं के या उनमें से किसी के भंग किए जाने, पालन या शनु- पालन न किए जाने के कारण उपगत होंगी।	सकती है. जय सम्पत्ति पट्टा ध
(স)	बंधककर्सा, बधक संपस्तिको इस विलेख के जारी रहने के दौरान	
	न तो भारित करेंगे, न उस पर विस्लंगम मृजित करेंगे, न	यह करार एक पक्षक
	उसका ग्रन्थ संकामण करेंगे और न उसका किसी प्रकार से व्ययस करेंगे ।	जो इस समय ः ः ः जो इस समय ः ः ः
( <b>ट</b> )	इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को ग्रह एक होगा कि वह अग्निम की शेष रकम श्रीर उस पर ब्याज जिसका संदाय श्रावेदक बंधककर्ता की सेवा निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस ममय तक नहीं किया गया है, श्रावेदक बंधककर्ता की मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से बसूल कर लें।	है जिसे इसमें आगे "बंध वारिमा, निष्पादक, प्रणामः विषय या संदर्भ से अपवर्षि के रूप में तूनीकोरिन पर कहा गया है और इसके जब तक कि ऐसा विषय के बीच श्राज हारीख
	<b>अनुसूची</b> जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है।*	उधार लेने वाले ने

(हस्ताक्षर)

पता भीर व्यवसाय)

पता भीर व्यवसाय)

(हम्लाक्षर)

इसके साक्ष्यस्वरूप बंधककर्ता ने इस पर प्रपने हस्ताक्षर कर दिए

उक्त बंधककर्तिभ्रों ..... 

(1) .....(प्रथम साक्षी का नाम,

ः (प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर)

(2) .....(हिनीय साक्षी का नाम,

ः (द्वितीय साक्षी के हस्ताक्षर)

इसके साक्ष्यस्थरूप, तूनीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए और उसकी ग्रोर 

XTRAORDINARY 	_
(1)	
	॰॰॰॰(प्रथम माक्षी के हस्ताक्षर)
(2)	····(डितीय साक्षी का नाम, पना भ्रीर व्यवसाय)
*****,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	ं (ढ़िलीय साक्षी की हस्ताक्षर)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।	
	ो पूर्व यह मुनिश्चित करने के लिए के संदाय ने कोई छूट मिल
प्ररूप संख्य	स ्ब
` `	निष्पादिस किए भाने वाले <b>बंधक</b> का प्रका
(विनियम	ा ७ देखिए)
के श्री जो इस समय के कार्यालय में के जिसे इसमें आगे "बंधककती" कह वारिस, निष्पादक, प्रणासक श्रीर समय विषय या संदर्भ से अपविजित या उसके के रूप में तूनीकोरिन पत्तन न्यासी विषय या संदर्भ से श्रीर इसके श्रीतर्गत उसके जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से के बीच श्राज सारीखा के बीच श्राज सारीखा के बीच श्राज सारीखा के श्रीम का श्रमुं श्रीर उसके विनयम कहा गया है श्री श्रीम के श्रीम के श्रीम के वान कपये के श्रीम के लिए प्रतिम को अपविच साम ने उधार लेने वाने को साम स्वाप में उसके साम साम में उधार लेने वाने को साम साम में उधार लेने वाने को साम	में,  गया है और इसके अंतर्गत उनके प्रिया है और इसके अंतर्गत उनके प्रिया है और इसके अंतर्गत उनके प्रिया है कि जा तक कि ऐसा विन्द्ध नहीं है) और इसरेपक्षकार है जिसे इसमें आगे ''बंधकदार'' उत्तर्श्वर्ती और समनुदेशिती भी हैं अपवर्णित या इसके विरुद्ध नहीं हैं) ''को किया गया है।  परतत त्यास कर्मचारी (मकात के बात) वितियस, 1979 (जिसे इसमें तैर जहां संदर्भ के अनुकूल हैं, इसके अन या उसमें परिवर्धन भी हैं) यो सकात के क्रय के लिए ''' को आंवेडन किया या और पत्सन '' क्ये का अधिम जकत क्रय के प्रियम जकत क्रय में देखिए लागेंख '' जिनकी एक प्रति इसमें उत्तरिक्षा विवर्ध में देखिए लागेंख पर प्रति इसमें उत्तरिक्षा विवर्ध में परिवर्ध म
तारीखा की उ बंधनवर्ती श्रीर बंधनदार व्यारा श्री किया गया था जिसके द्यारा बंधनवर्त दी गई रकम श्रीर उक्त रकम के नियम द्वारा उपवंधित प्रक्य में प्र बंधकदार को बंधक करने बाली दस्सा किया है।	िने ग्रन्य यातों के माथ उसे अग्रिम लिए मंद्रेय ब्याज के लिए भी उक्त निभृति के रूप में उक्त फ्लैट का
त।रीम्ब्रः के उस पक्षकार के रूप में	हस्सांतरण विलेख द्वारा जो एक भीर दूसरे पक्षकार के रूप में

मेंबंधककर्ता द्यारा ग्रौर उनके बीच निष्पःदित किया गया है, उक्त विलेख यणित प्रतिफल ने लिए .... ने उन सम्पत्तियों का जिनका

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

है।

विस्तृत वर्णन उक्त दस्तायेज को प्रतृतूची में ग्रीर इसकी प्रतृतूची में भी किया गया है, बंधककर्ता को उक्त वितिख में वर्णिए सिबंधनों ग्रीर गर्नी पर विकय, ग्रंपरण ग्रीर समतृदेशन किया है ।

\_\_ = ---- -----

उक्त श्रेतरण के श्रीतका का संदाय वयककार्ता ने पार प्रस्ये के उस सरकारी उधार में से किया है जो उने दिया गर, है।

यह करार निम्नलिखिन का माओं है।

- (1)(क) उक्त विनिधमों के अनुसरण में श्रीर उक्त विनिधमों के उपबंधों के अनुसार बंधकदार द्वारा अध्येदन जबककर्ता की मजूर किए गण्/दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिकल स्वरूप बंधककर्ता, बंधकदार से यह प्रसंविदा करने है कि बबककर्ता उक्प विनियमों के पमी दिबंधनों और शर्ती कः। सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगे ग्रीरःःःःः छ्यये (・・・・・・・रुपये) के उक्त प्रग्रिम का बधकदार को प्रतिसदाय ····· रुपयें (···· रारा रुपये) कारा रारामासिक किस्तों में प्रावेदक मंधककर्ता के वेतन में से करेगे । यह प्रतिसंदाय ' ' ' ' के -----भास से श्रथथा श्रशिम लेने के मास के पश्**या**तृतर्ना मास से, इसमें से जो भी पूर्वत्पर हो, प्रारम्भ होगः । बधककर्ता ऐसी किस्सी की कटौनी उसके मासिक बेनन/छुट्टी बेनन/निर्वाह भन्ने में में करने के लिए अधिकदार को प्राधिकृत करता है । उत्तर अग्निम की पूरी रक्षम देने के पण्चात् बंधककर्ता उस पर देय ब्याज का सवाय भी :::: ::::\* मासिक किस्तों में उस रीति में और उन निबंधनो पर करेगा जो उक्त विनियमों में विनिर्दिष्ट है । परन्तु बंधककर्ता ब्याज सहित प्रिप्तिम का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा गे निवृत्त होने वाला है । यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो बंबकदार को यह हक होगा कि वह बंधक को इस प्रतिभृति की उसके बाद किसी भी समय प्रयुत्त करे फ्रीर उप समय देव प्रश्निम की शेष रक्षम तथा उस पर ब्याज स्रीर यसुली का लार्च बद्धक संपत्ति का विकय करके या विधि के अधीन अनुक्षेप किसी अन्य रोति से यसूल करे। बधककर्ता इन रकम का प्रतिसंदाय इससे कम भ्रवधि के भीतर कर सकता है।
- (1) (ख) उक्त नियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपबंधों के प्रनुसार बंधकदार द्यारा प्रावेदक बधककर्ता को संजूर किए गर्/दिर् गर् उस्त अग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बधककर्ता बंधकदार से यह संविदा करमा है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निवधनों क्रीर णतीं का सदैव सम्यक् रूप से अनुपःलन करेगा और ःःःः ठपये ( अपन का वश्चकदार को प्रतिसंदाय ····क्यये ( · ····क्यये ) की ····· \*\*मासिक किस्तो में बंधककर्ता के वेशन में से करेगा । यह प्रतिसंदाय : : : : : के : : : मास से या अग्निम लेने के पण्यास्त्रर्ती मास से, प्रारंभ होकर उसकी अधिवर्षिता की नारीख नक किया जाएगा श्रीर उसकी प्रधिवर्षित तारीख पर जो रकम बकाया होगी तथा क्रश्रिम दी गई रकम पर प्रग्रिम की नारीख से प्रतिसंदाय को नारीख नक का ब्याज उसके उपदान/मृत्यु एवं मेवा निवृत्ति उपदान में में वयूत किया जाएगा ! बधककर्ता किस्तों को रकम की फटोनी उगके मामिक वेपन/छुट्टी घेतन/ निर्वाह भन्ते में से तथा उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/यधिवर्षि*स की* नारीख को उस रकम की, जिसका संदाय न किया गया हु।, फटोनी उनक उपदान/ मृत्यु एवं भेया निवृत्ति अपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भा पुरी वसूला नहीं हो पाती है तो बंबक-दार को यह हक होगा कि वह बंधक का इस प्रतिभृति को उसके बाद किमी समय प्रवृत्त करे ग्रीर उस समय देय श्रग्रिम को ग्रेय रकम हथा उस पर ब्याज और वसूली का खार्च, बधक संपत्ति का वि⊿य करके या विधि के अधीन भ्रमुक्तेय किसी भ्रन्य रीति से बसूल करे। किन्तु, बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसमें कम प्रविधि के भीतर भी कर सकता है।

 $(1)(\vec{v})$  उक्त विनियमों के अनुसरण में श्रौर उक्त विनियमों के उपबंधों के अनुसार बधकदार द्वारा आवेदक वंधककर्ता की संजूर किए गत्/दिए गए उक्त अग्रिम के प्रतिकलस्यरूप श्रावेदक ंधककर्ता बधकदार से यह प्रसविदा करता है कि बंबककर्ता उक्च विनियमों के सभी निबंधनों श्रीर शर्ती का भदैव सम्यक् रूप से अनुकलन करेगा श्रीर : : : : क्यमे (केवल प्राप्त को प्रति-मासिक किस्तों में बंधककर्ता अपने वेलन में से करेगा । यह प्रतिसदाय · · · · · · · · की · · · · · · · · · से या मकान पूरा होने के पश्चात्यर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्यतर हो, प्रारंभ होगा । अधककर्ता बंधकदार को ऐसी किस्तो की कटौसी उसके मासिक बेतन/छुद्टी बेयन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है और अबककर्ता प्रपनी प्रधिवर्षिता की नारीखा तक श्रविम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देय ब्याज का भी। "" रुपये की " मामिक किस्तों में संदाय करेगा तया उसकी प्रक्षिवर्षिता की त⊬रीख को उधार दी गई रकम पर श्रम्भिम की ताराज से प्रतिसंदय को तारीख तक बाकी रह गई ब्याज की रकम का प्रतिसदाय उसकी उपदान/मृत्यु एवं **मेवा** निवृत्ति उपदान से करेगा और आवेदक बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक येवन/खुट्टी बेवन/निर्वाह भत्ता में से तथा उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/प्रधिवर्षिता की नारीख की उस रकम की, जिसका सदाय न किया गया हो, फटौनी उसके उपदान/मृत्यू एवं सेवा निवृतिन उपदान में से करने के लिए बंबककार को प्राधिकृत करता है । यदि उसकी मृत्यु की नारीख को कोई अनिशेष असंदत्त रह जाता है तो बधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाव किसी समय प्रश्रुल करें और उस समय देव ग्रम्भिम की रोष रक्तम तथा उस पर ब्याज ग्रीर यसूनी का खर्च, बंधक संपत्ति का विकय करके या विधि के ऋधीन प्रनुक्तेय किसी अन्य रीति से वसूल करे । बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम भ्रवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण: खंड (1)(क), (1)(खा) या (1)(ग) में से जो लागून हो उसे काट दें)

- (II) यदि बंधककर्ता अग्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करेगा जो उस प्रयोजन से सिन्त है जिसके लिए वह मूजर किया गया है या यदि बंधककर्ना दिवालिया हो जाएगा या मामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/ ग्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण में सेश में नहीं रहेगा श्रथका पदि बह श्रयिम के पूरे संदाय के पूर्व मर जाएगा या यदि बंधककर्ना उक्त विनियमों में थिनिर्विष्ट और उनकी ग्रोर से धनुपालन किए जाने वाले किसी निश्वंधन. णर्न और अनुबंध का अनुपालन नहीं करेंगे तो ऐसी प्रत्येक दशा ने धक्किम का संपूर्ण मुश्धन था उसका उत्तरा भाग जो उस समय देव रहता है ग्रीर जिसका मंदाय नहीं किया गया है, और उस गर 😬 🥶 र प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त पश्चिम की पहनी किस्त के दिए जाने की लत्साब से परिकलित किया जाएगा. तुरस्त सक्षेत्र हो। जाएगा । इसको किसी बाच के होते कुए भी, यदि वधककर्ती प्रतिप्रम का उपयोग किसा ऐसे प्रयोजन के लिए करना है जो उस प्रयोजन के भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो वंधकार को यह स्वतंत्राता होगी कि वह बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी अनुगामितिक कार्रवाई करे जो उसको वंधककर्ताको) लागू सेवा के नियमों के प्रधीन उपपुत्र हो ।
- (III) उक्त विनियमों के स्रीर अनुसरण में सौर उपर्युक्त प्रतिकल के लिए तथा उपर्युक्त स्विम के सीर उस पर ब्याज के, जो उसके पश्चात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के अधीन बंधकदार को देय हो, प्रतिसदाय को प्रतिभृति करने के लिए, बाकती, ता रोखा क्रिक उक्त हस्तानरण पत्न में समाविष्ट उक्त सम्मति के जिनका पूरा वर्णन इसमें स्वागे लिखिन श्रमुंची में दिया हुशा है, उक्त सम्मत्ति पर यदि

<sup>\*</sup> यह् 60 से प्रधिक नहीं होगी।

<sup>&</sup>lt;sup>४,४</sup>यह 180 से अधिक नहीं होगी।

ध्यान वें: खंड (1)(क) या (1)(ख) में से जो लागून हो उसे काट वीजिए। †नियम के श्रधीन प्रभार्य व्याज की प्रसामान्य दर।

यवि कोई हो, जिसे इसमें श्रागे 'बंधक संपत्ति' कहा गया है) बंधककर्ता दुबारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों का तत्समय उस पर की सामग्री का उक्त बंधक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्हीं अधिकारों, सुखाचारों श्रौर अनलानकों सहित अनुदान, हस्तातंरण, अंतरण श्रौर समनुदेशन क्रोता दुवारा की गई प्रसंविदाओं स्नौर उसमें श्रंतर्विष्ट शतौं के अधीन रहते हुए करते हैं । बंधकवार उक्त बंधक संपस्ति को पूर्ण रूप से किन्तु उक्त हस्तांतरण पक्ष के निबंधनों भौर प्रसंविदामों के ग्रधीन रहते हुए धारण करेगा किन्तु यह इसमें भागे दिए हुए मीचन संबंधी प्रम उपवंध के भ्रधीन होगा । परन्तु इसके पक्षकारों द्वाराग्नौर उनके बीच यहकरार किया जाता है और घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता, बधकदार को इसके द्वारा प्रतिभृत उक्त मुलधन और ब्याज का और ऐसी अन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ता द्वारा बंधकदार को, उक्त विनियमो के निबंधनों भौर शतों के भ्रधीन संदेग करने के लिए अवधारित हो, सम्पक् रूप से संवाय इसमें दी हुई रीति से कर देंगे तो बंधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ता के अनुरोध श्रीर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का पुनः हस्तांतरण भीर पुनः अंतरण बंधककर्ताओं को उनके या उनके निदेशानुसार उपयोग के लिए कर देंगे।

(IV) अभिव्यक्त रूप से यह करार किया जाता है और पोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता ग्रपनी भोर से की गई भीर इसमें दी हुई प्रसंविदाध्रो को भंग करेगा या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाएगा या सामान्य रूप से सेवा निवृहित/प्रधिविपता से भिन्न किसी कारण से सेवा मे नहीं रहेगा या यदि वह उन सभी रकमों के जो इस विलेख के धर्धान बंधकदार को संदेय है, और उन पर व्याज के पूरी सरह से चुकाए जाने से पूर्व मर जाता/जाती है या यदि उक्त प्रक्रिम या उसका कोई भाग इस विलेख के भ्रधीन या किसी भ्रन्य रूप से तुरन्त संदेय हो जात है तो ऐसी प्रत्येक दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपरित का या उसके किसी भाग का विकय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या ट्कड़ों में भ्रौर सार्वजनिक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका कथ कर लेया विकय की किसी संविध। को विखंडित कर देशीर उसका पुनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो । उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिए जो बंधकदार ठीक समझे सभी कार्य करे भौर हस्तांतरण पत्नों का निष्पादन करें। यह घोषणा की जाती है कि बेचे गए परिसर या उसे किसी भाग के कय धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात की प्रमाण होगी कि केता/केताक्रों ने कथ धन का भुगतान कर दिया है । यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के अनुसरण के किए गए फिसी विक्रय से प्राप्त धन की बंधकदार न्यास के रूप में धारण करेगा । उसमें से खर्च प्रथम ऐसे विकय पर हुए वर्ष का संदाय किया जाएगा\* (भ्रीर उसके बाद, बंधक संपरित के पट्टाकर्ता, .... को उक्त पट्टे के खण्ड ···· के अनुसरण में अनुपाजित वृद्धि के 50 प्रतिगत का संदाय किया जाएगा) श्रीर इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा ग्रौर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ता को दे दिया जाएगा।

- $(\mathbf{V})$  बंधककर्ता, बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करते हैं:—
- (क) िक बंधककर्ता, को इ.स. बात को विधिपूर्ण अधिकार और प्राधिकार है िक वह बंधक संपित्त का, बंधकवार को और उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तातरण, अंतरण और सममुदेशन उक्त रीति में करें।
- \*\*(ख) कि आवेदक बंधककर्ता मकान के निर्माण/उक्त मकान में आवाम स्थान में परिवर्तन का काम उस धनुमोदित नक्शे और उन

विनिर्देशों के अनुसार ही करेगा जिनके भाधार पर उक्त अग्रिम की संगणना की गई है और वह मंजूर किया गया है, जब तक कि उससे विचलन की भनुजा बधकदार ने दें दी हो। बंधकदार कुरसी/छन पड़ने के स्तर पर प्रनृक्षेय प्राप्तम की किस्तो के लिए भावेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्सो भ्रौर प्राक्कलन के श्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं, कि निर्माणकार्य कुरसी/छत पड़ने के स्थर तक पहुंच गया है, और मंजूर किए गए अग्रिम में से ली जा चुकी रकम का थस्तुत: उपयोग मकान के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नों के सही होंने का सत्यापन करने के लिए बंधकदार को स्वयं या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देगा/देगी । यदि बंधककर्ता कोई भिष्या प्रमाणपत्न देता है तो उस बंधकदार को वह संपूर्ण प्रश्रिम, जो उसे मिला है तथा उस पर ::: † प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से अ्याज देना होगा । इसके प्रतिरिक्त बंधककर्ता के विकद्ध उसका लागु सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त प्रनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।

- \*\*(ग) आवेदक बंधककर्ता मकान का निर्माण/उन्ह मकान में आवास
  स्थान में परिवर्धन ......\* के आद्दारह मास
  के भीतर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार ने इस काम के
  निए लिखित रूप से समय न बढ़ा दिया हो। इसमें व्यक्तिकम
  होने पर बंधककर्ता को, उसे दी गई संपूर्ण रकम का और
  उक्त नियमों के अधीन परिकर्तित व्याज का एक मुक्त प्रतिसंदाय करना होगा। बधककर्ता मकान पूरा होने की तारीख की
  सूचना बंधकदार को देगा और वह बंधकदार को इस आगय का
  एक प्रमाणपत्न देगा कि आग्रम की पूरी रजम का उपयोग
  उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर
  किया गया था।
  - (घ) वंधककर्ता मारतीय जीवन बीमा निगम में उस माकान का तुरन्त अपने खर्च पर बीमा उतनी रकम के लिए कराएंगे जो उक्त अग्रिम की रकम से कम नही । ये उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को अग्रिम पूरी सौर से चुका नहीं दिया जाता है, ग्रस्ति, बाढ़ धौर तड़ित से हानि या नुकसान, क विरुद्ध वीमाक्तत रखेगे जैसा कि उक्त विनियमों में उपबंध है, श्रीर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देंगे। बंधककर्ता समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित रूप से देंगे ध्रीर जब उनसे भ्रमेक्षा की आए, प्रीमियम की रसीदें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेश करेंगे । यदि बंधककर्ता ग्राप्ति, बाढ़, तिष्कृत के विरुद्ध बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण किन्तु ग्राबद्धकर नहीं होगा कि वह उक्त मकान की बीमा बंधककर्ता के खर्च पर करा ले और प्रीमियम की रकम को प्रयिम की बकाया रकम में जोड़ ले। तब बंधककर्ता की **उस पर**ःःः .... प्रतिवर्ष की दर से अयाज देना होगा मानो प्रीमियम की रकम उक्त प्रियम के भाग के रूप में दी गई थी। यह ब्याज उसे उस समय तक देना होगा जब सक कि वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी बसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभूति के श्रंतर्गत श्राने वाली रकम हो । बंधककर्ता जब भी उससे अपेक्षित हो, बंधकवार को एक पत्न देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस मकान का वीमा कराया गया है। यह पत्न इसिलए होगा कि यंधकदार दीमा करने वाले

<sup>\*</sup>यहाँ वह तारीख लिखिए जिस तारीख को अधिम की पहली किस्त बंधककर्ती को दी गई है ≀

<sup>\*\*ि</sup>टप्पण-⊷जहाँ अग्रिम सने बनाए मकान के क्रय के लिए हैं बहाँ खण्ड (ख ग्रीर ग) लागू नहीं होगे । ंनियम के ग्राधीन प्रभार्य व्याज की प्रस्तावित वर ।

की इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधकदार उस बीमापालिसी
में हितबद्ध है।
बंधककर्ता उक्त मकान को भ्रपने खर्च पर भ्रष्टी मरम्मत र्ज
हालत में रखेंगे श्रौर बंधक सम्पत्ति की वाबन नगरपालिका व

- (ङ) बंधककर्ता उक्त मकान को ध्रपने खर्च पर प्रच्छी मरम्मत की हालत में रखेंगे ध्रौर बंधक सम्पत्ति की बाबन नगरपालिका के ध्रौर ध्रन्य सभी स्थानीय रेट, कर, ध्रौर ध्रन्य सभी देनद्यारियां उस समय तक नियमित रूप से बेगे जब तक कि बंधकदार को ग्रिप्रम पूरी तौर से खुका नहीं दिया जाता है ! बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त ध्राणय का एक वार्षिक प्रमाण-पत्न भी देंगे ।
- (च) अंधककर्ता, मकान पूरा होने के बाद बंधकदार को यह मुनिश्चित करने के लिए कि मकान अच्छी मरम्मन की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देंगे जब तक कि अग्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बंधककर्ता ऐसी कोई रक्षम श्रीर उस पर देय ब्याज, बंधकवार को लौटाएगा जो श्राग्रम के मब्बे, उस व्यय के श्राधिक्य में सी गई है जिसके लिए श्राग्रम मंजूर किया गया था।
- (ज) तारीख ..... का उक्त हस्तांतरण विलेख श्रव विधिमान्य है श्रीर उक्त बंधक संपत्ति का अस्तित्वमुक्त पट्टा है श्रीर वह किसी भी रूप में शून्य या शून्यकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा श्रारक्षित किराए का संदाय श्रीर उसमें दी हुई प्रसंविदाश्रों श्रीर शतों का पालन इस विलेख की तारीख नक कर दिया गया है श्रीर इसमें इसके पूर्व विशित रीति में इसका समनुदेशन किया जा सकता है।
- (झ) बंधककर्ता उस समय तक जब तक कोई धन उक्त बंधक संपित्त की जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा समनुवेशित धिभ्यित्व है, प्रतिभूति पर देय रहता है श्रीर हर हालत में उक्त करार की श्रवधि तक पट्टे की सभी प्रसंविदाशों का श्रीर उक्त पट्टा विलेख में अंतर्विष्ट शर्ती का सम्यक् रूप से श्रनुपालन करेगें तथा बंधकदार को उन सभी अनुयोजना, वादों, कार्यवाहियों, खचों, प्रभारों, दावों श्रीर मांगों की बाबत क्षतिपूरित रखेगे जा उक्त कराये का संदाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रसंविदाशों श्रीर शर्तों के या उनमें से किसी के भंग किए जाने पालन या अनुपालन न किए जाने के कारण उपगत होगी।
- (अ) अंधककर्ता अंधक सपित को इस विलेख के जारी रहने के यौरान न तो भारित करेंगे, न उस पर जिल्लंगम मिजत करेंगे, न उसका अन्य संकामण करेंगे और न उसका किसी श्रन्य प्रकार से व्ययन करेंगे ।
- (ट) इसकी किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हक होगा कि वह अग्रिम की शेप रकम और उस पर ब्याज जिसका मंदाय बंधककर्ता की सेवा निवृद्धिके समय नक या यदि सेवा निवृद्धि से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिद्दिष्ट भाग में से बसूल कर से।

इसके साक्ष्य स्थरूप बंधककर्ता ग्रोर तूतीको	् रेन पस्तन न्यासी बा
के लिए द्योर उनकी द्योर से	
····ंने ऊपर सर्वे प्रथम लिखित तारोख क	
	हस्ताक्षर कर दिए हैं।
उक्त बंधककर्ता ने	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •

(हस्ताक्षर)

(1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)
.....(प्रथम साक्षी के हस्साक्षर)
(2) (द्वतीय साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)
.....(द्वतीय साक्षी के हस्ताक्षर)
की उपस्थित में हस्ताक्षर किए ।
इसके साक्ष्यस्वरूप, तूलीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए और उसकी और में तथा उसके निदेश से
.....कार्यालय के श्री
..... ने
(हस्ताक्षर)
(1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

ध्यान दें: श्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्ताबेज पर स्टाम्प शुल्क देनेसे पूर्व यह मुनिष्चित करने केलिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय सेकोई छूट मिल सकती है, अपनी राज्य सरकारों/प्रणासनों से सम्पर्क कर में ।

पता ग्रीर व्यवसाय)

· · · · · · · · · · · · (प्रथम साक्षी के हस्ताक्षर)

· · · · · (व्वतीय साक्षी के हस्त:क्षर)

(2) '''' (ब्वितीय साक्षी का नाम,

### अनुपूरक बंधक विलेख

(i) बंधककार्या ने इस प्रयोजन के लिए कि वह मकान बना सके ।
\*\*प्रायोग स्थान का विस्तार गर सके ।
\*\*प्रायोग स्थान का प्रयोजन के लिए
बंधकदार को प्रावेदन किया है । बंधककार्या ने यह प्रायेदन तृतीकारित
पत्नन न्यास कर्मचारी (मकान के निर्माण प्रावि के लिए प्रयिम का प्रनृपान)
विनियम, 1979 के, जिसे इसमें प्राये उक्त विनियम कहा गया है, प्रधीन
किया है ।

<sup>\*</sup>इसे बंधककर्ता भरेंगे।

<sup>&</sup>lt;sup>के क</sup>ोदे का गुरुष है तो। का**ट दीजिए ।** 

- (ii) बंधकदार "उक्त मल बबक विलेख" में विष् गए निबंधनों प्रीर शतीं पर बंधकक्त को स्वार स्वयं (केवल स्वार क्षयं) की उक्त राणि, जिसे इसमें "मूल उधार" कहा गया है, के के लिए सहमत हो गया है और बेशककर्ता ने यह करार किया है कि बह बंधकदार का मूल उधारका प्रतिसंदाय स्वार किया में करेगा थीर यह प्रतिसदाय स्वार का समान मासिक कियों में करेगा थीर यह प्रतिसदाय स्वार स्वार स्वार साम से आरंभ होगा।
- (iii) बज्रकराती ने, मूल उधार के प्रतिफलस्बक्त उक्त मूल बज्रक विलेख की श्रनुसूची में और इसमें श्रागे तिका श्रनुसूची में भी उतिनिधान सम्पत्तियां तृतीकीरिन पत्तन त्यामी बार्ड को बपाल महिन उक्त राजि के सपुदाय की प्रतिमृति के रूप में श्रेतरिन, समनुदेशिन श्रीर हस्तानरिन करदी है।
- (iv) बंधककर्ता "प्राः उबार/मूत उबार में में क्रमणः ः ः क्षये प्रोरः ः ः ः म्पये तथा ः ः क्षये कीः ः किस्ते ने चुका है।
- (v) बधकानती मूल उबार के मद्धे ः ः क्षये की ः ः ः नमान मानिक किस्मों स प्रुतः ः ः ः ः क्षये क. प्रिनंदाय कप मुका है।
- (∨ां) बधककर्ता ने तृतीकोरित पटनत न्यासी बार्ड के का का क्रमुगरण से इस प्रयोजन के लिए कि वह इसमें आगे लिखी अनुत्रों से उक्तिशिखन परियर पर सकान का निर्माण/क्षिक्तार प्रया कर सके/का कर सके, कि का के अधिरिक्त उदार के लिए बंदाकार को आवेदन किया है।
- (vii) बंधकदार प्राप्त प्राप्त की उन्न अधिक्त राशि, जिसे इसमें अधि "प्रतिरिक्त उपार" कर गया है, इसमें सी उर्वेशिक विश्व की सिन की की की सिन सहस्र हो गया है।
- (viii) बंधककर्षाः तृतीकोरित पत्यत न्यामा बोर्ड केः ः ः ः ः कं प्रतुमरण में मूल उबार श्रोर प्रतिरेक्त उधारकः पतिषंसार प्रविक मूबिबाजनक किस्तों में करना चाहता है ।

यह करार इस बात का माक्षो है कि :--

(1) उक्त वितितम के अनुमरण में प्रोर उन्ह वितित्त में प्रतिबंध उपलेशों के अनुमरण में बंधककर्ती को प्रव मंतृर किए गए परिनर प्रीर प्रिंतिक्त उधार के प्रतिकत्मन्त्रक्ष वंबककर्ती हमने हारा वंबकहर में यह प्रगिवदा करते. है कि यह (बज्रकारी) उक्त वितियम के गभी निबंबतों प्रीर प्रति का मदैव सम्यक् अनुपालन करेगा प्रीर उन्ह मृत वंबह वितेष के प्रधान देय कि स्वयं की राणि ना/प्रीर कि प्रयो की राणि नथा अतिरिक्त उबार का जित्ता था। राज होता है) \*\* \*\* प्रति तथा बज्रकदार को \* \* राण की/प्रीर का मदाय करते होता है) \* प्रति की प्राप्त वंबकदार को \* राणि की प्राप्त का मदाय करते के पर्ण्य की पर्णात वह व्याज का भी संदाय उन्ह तितयम में वितिदेख रोति से प्रीर दर में ममान मासिक किस्तों में करेगा अव उन्ह जी से प्रार दर में ममान मासिक किस्तों में करेगा । यो वं उन्ह प्रोर/य उपयो की (कुल) \* राणि की कोई रकम भेष रहते हैं तो यह प्रोर/य उपयो व्याज की वसूली वंधककर्ती से उसकी प्रविविधित/मृणुतिश ति कृति

की तारीख पर उसकी (बंधककर्ता की) माध्य उध्यान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान की रक्तम में से की जाएगी। उक्ता कार्य की (कुल) \*\*\*राशि की वपूरी, बंधककर्ता के बेनन से कि क्षेत्र के स्थान मान में आरंभ होगी और बंधककर्ता अपने मासिक बेनन/कुट्टी में से इन किस्तों की रक्तम की कटौती करने के निए बंधकदार की प्राधिकत करना है।

- (II) बंधककर्ता यह घोषण करता है कि वह सम्पत्ति जो उक्त मूल अधक विलेख में समाविष्ट है और जिसका उल्लेख इसमें आहे लिखी अनुसूची में भी है, अब मंजूर किए गए अतिरिक्त उबार के संबाय के लिए मी। उसी प्रकार प्रतिभूति होती और वह उस उसी प्रकार भाग होता मानो अतिरिक्त उधार उस मूल राणि का ही मत्य है जो उक्त मूल बंधक विलेख हारा प्रतिभूत है।
- (iii) यह करार किया जाता है प्रीर घारण का जाता है कि उना मूल बंधक विलेख के प्रधान मंदेय मूल धन और किस्तों के संबंध में उना मूल बंधक विलेख में प्रतिविद्य सभी प्रसंविदाएं, शक्तियां, प्रीर उनवंध इस विलेख के प्रधीन संदेश (उक्त प्रतिविक्त उधार श्रीर) एक किस्तों की लागू होंगे श्रीर इसके द्वारा किए गए परिवर्तनों के सिवाय उनत नूल बंधक विलेख के सभी निबंधन श्रीर घल पूर्णनया प्रशृत श्रीर प्रमायी रहेंगी।

### अनुसूची जिसका ऊपर उस्लेख किया गया है

स्य ः ः ः विषयः पहस्याम् बड जिस्ताः क्षेत्रकृतः ः ः ः ः वर्णमीटर (ः ः ः ः ः ) है ।
सभा सुखाचारो अनुलग्नकों मार्गाधिकारों सहित सं ःःःः वाला वह सस्पूर्ण भूखंड जो ःः ः ने स्थित है स्रीर जिसका- क्षे <b>त्र</b> कत ः ःवितिहः (ःःः) है ता जिसके
उत्तर में ःःः ः ः ः है
विक्षण में 🖖 🕟 🕟 हे
पूर्व में · · · · · · · हें
पण्चिम भें ः ः ः ः ः ः है
इसके साक्ष्यस्थाकर बबकारकों ने और तूसकोरित पत्तत न्यासी बोर्ड के तिर और उसकी छोर से और राज्यस्थान कर कि इस पर अस्ते-अस्ते हस्साक्षर कर दिए हैं।
यत्रक प्रति ने
(इन्सानः)
्र वंबहरूको
ा ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं (प्रयत् ताओं का नात, ात आहेर व्यवसाय)
2' ' ''' प्रोत् प्राप्त स्थाप का तान, नक्ष स्रोत व्यवसाय)
को उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

<sup>&</sup>quot;यादे लागू नहीं है तो काट दीजिए।

<sup>&</sup>lt;sup>अभ</sup>उन मामलों में जहां मूल उधार का प्रतिसंदाय श्रारंभ नहीं हुआ। है, यह निर्माण या विस्तार को दगा में पहतों किशा के प्रारंभ किए जाने की दारीख से 18वें माम में पण्चान् का श्रीरक्षने बनाए मकान के कर के लिए श्रप्तिम प्राप्त किए जाने की तारीब श्राणामी मान के परवात् का नहीं होना चाहिए। अन्य मामलों में यह श्रनुप्रक विकेष के निरादत के जातारी मान से परवात् का नहीं होना चाहिए।

परिवर्णन (V) का सब क्षेप किया जाएगा जब मूल उबार के गिरो भाग का प्रतिकेश नहीं किया गरा है।

पण्चिणंत (vi) और (vii) तथा खं $\pi$  (II) का तब लांग किया जाएक। अब किया अवेरितन उबार के लिए आवेरत नहीं किया गया है।

परिवर्णन (Viii) का एवं लोग फिया जाएगा जब प्रतिसंदाय को रोति में कोई परिस्कृति करने का प्राणा नहीं है।

<sup>\*\*\*</sup>इसे तब बाट दें जब किसी अतिरिक्त उबार के लिए आवेदन नहीं किया गया है।

<sup>ं 📆</sup> इसे तब काट दें जब कियी अतिरिक्त उधार के लिए आवेदन नहीं किया गया है।

तूतीकोरिन पत्पन स्वार्गा बोर्ड के तिरु स्रोर उत्तर थाः सेः
( রম্মা <b>क्षर</b> )
ा. · • · · · · · · · प्रथम साक्षी का नःम पता और व्यवसाय)
2. · · · · · · · · · · · · · (दिवरीय साक्षी का न.म. पना व्यवसाय)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।

### त्ररूप संख्या-5

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा भूखंड का कप करते ब्रीर मकान बनाते, बिद्यमान मकान का विस्तार करते तथा बने बनःए मकान के क्रम के लिए श्रीप्रम लेने के समय निष्यादित किए जाने बाले करार का प्रकार।

(विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री .... जो श्री : : : : : : : : का पुत्र है ग्रीर इस समय : : : ःःःःःःः है (जिसे इसमें द्वारो 'उधार लेने वाला' कहा गया है स्रीर इसके संतर्गर उसके वारिंग, निष्पादक, प्रशासक स्त्रौर विधिक प्रतिनिधि भी हैं, जब तक कि एपा विश्वय या संदर्भ में अपवर्शित या उसके विरुद्ध नहीं है) ग्रीर दूसरे पक्षकार के रूप में नव तूनीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड (जिन्हें इसमें बार्ग 'तूनीकोरिन पत्तन' कहा गया है और इपने अंबर्गन उनने उत्तर वर्सी प्रीर नजत्वेशियी भी है, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से अपर्याजन या उनके विरुद्ध नही है (के बीच प्राप्त तारीख '''''' को किया गया। उबार लेके वाला इसमे संलग्न प्रनुसूची में वर्णिन भृमि का \*श्रय करना चाहता है धीर उस पर मकान बनाना चाहना $l^{*}$   $\cdots$   $\cdots$  भी स्था स्रात मकान में बास स्थान का विस्तार करना चाहता है/\* : : : में स्थित एक बने बनाए सकान का अध करता चाहता है और उधार लेते वाले ने तूतीकोरिन पल्लन न्याम कर्मचारी (मकानो के निर्माण, ब्राद्धि के लिए म्रग्निम का भ्रनुदान) विनियम, 1979 के (जिसे इत्तमें भ्रागे 'उक्त नियम' कहा गया है) और इसमें अहा संदर्भ के अनुकूत है, तत्समय प्रयुत्त उपात संगोधन या परिवर्धन भी हैं) उपवंध के अधीव उक्त भूमि का कप करने भ्रपने सकान में वास स्थान का विस्तार करने के लिए \*/उक्त बने अनाए (..... फंप्ये) के श्रमिम के लिए तूनाकोरिन पत्सन न्याम को भाषेशन किया है । तूनीकोरिन पत्तन न्याम ने, उधार नेने वाले को ..... राग्रे) का अग्रिम जन्त प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए पत्र सं० ..... तारीख ..... फिसकी एक प्रति इस विशेख केसाथ संत्रम्न है और भिसमें उहिलीखन निबंधनों स्नौर गर्तो पर यह अग्रिम मंजूर किया गया है । इसके पक्षकारों **बा**रा ग्रीर उनके बीच यह करार किया जाता है कि :---

(1) इस करार के निष्पादन के बाद भूमि का क्रय करने के लिए तूनीकोरिन पत्तन न्यास द्वारा वी जाने वाली ..... स्वये (यहां पहली किस्त की रक्षम लिखिए) की राणि और उक्त नियमों के उपबंध के अनुसार तूर्तीकोरिन पत्तन न्यास द्वारा उधार लेने वाले को दी जाने वाली ..... स्वये की (यहां दी जाने वाली शोप रक्षम लिखिए)

राणि के प्रतिफलस्यलप उधार लेते याला तृतीकोरिन पत्तन न्यासी वोर्ड के साथ यह करार करता है कि वह :—

(यहा किस्तों की संख्या लिखिए मासिक किस्तों में सरकार को प्रतिसंदाय अपने बेतन में से करेगा । यह प्रतिसदाय अपने बेतन में से करेगा । यह प्रतिसदाय अपने बेतन में से करेगा । यह प्रतिसदाय अपने में का मास में अथवा मकान पूरा होने के पञ्चाम्वर्ती मास गे, इनमें से जो भी पूर्वतर हों, प्रारंभ होगा । उधार लेने बाला ऐसी किस्तों की कटौती उसके गायिक बेतन, छुट्टी बेतन छौर निर्वाड भने के बिलों में से करने के लिए तूर्ताओरिन पन्तन न्यास की प्राधिकृत करना है।

ै(ख)(ा) उक्त मंजूर किए गए ग्रग्निम में ने प्राप्त नाने वाली (यहा दी चाने वाली ••••• प्राप्त करने की तारीख

किस्त की रकम लिखिए)
में दो मास के भीतर या ऐसे प्रतिरिक्त समय के भीतर को तूनीकोरित
पत्तन न्याम विभागाध्यक्ष हरा निमिल अनुज्ञात करे, भूमि का क्रय करने में
उक्त रक्तम खर्च करेगा और उसके संबंध में विकय विशेष मुनीकोरित
पत्तन न्यास के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करेगा और ऐसा न करने पर
उधार लेने वाला उसे प्रान्त अग्रिम की पूरी रक्षम का और उग पर
ब्याज का तूतीकोरित पत्तन न्याम की प्रतिसदाय करेगा।

- \*(ii) उक्त म्हार्य ( म्हार्य ( महार्य करते की तारीख में तीन मास के भीतर उक्त बने बनाए मकान का क्रय करते में उक्त रक्तम खर्च करेगा और उसे तूनीकोरिन पत्तन न्याम के पान बंधक रख देगा। ऐसा न करते पर जब तक कि तूनीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड समय नहीं बढ़ा देशा है, उधार तेने वाला उसे प्राप्त प्राप्ति की पूरी रक्षम और उस पर ब्याल का तूनीकोरिन पत्तन त्याम को तुरन्त प्रतिमंदाय करेगा।
- \*(日) उसन मकान का निर्माण/विस्तार, सूर्ताकोरिन पत्तन न्याम बोर्ड बारा प्रतृनोदिन किए जाने वाले उस नका प्रौर उन विनिर्देशों के अनुसार जिनके आधार पर प्रियम की रक्त की संगयना की जानी है धीर अन्तिम क्या में मंजूर की जानी है. के अन्यारह मास्य के भीतर या उस बढाई गई प्रविध के भीतर पूरा करेगा जो नूतीकारिन पत्तन के न्यासी बोर्ड द्वारा धिकथित की जाए।
- (2) यदि उबार तेने ताले हारा\* भूमि का कर करने और उस पर मकान बनाने के लिए/\*मकान का विस्तार करने के लिए/\* बने बनाए मकान का कथ करने के लिए बन्दून थी गई रक्ष्म इन विदेख के खनीन उसके द्वारा प्राप्त की गई रक्ष्म से कम है तो वह ऐप रक्षम का तूनीकोरिन पत्तन नासी बोर्ड की तुरन्त प्रतिसंदाय करेगा।
- (3) इस विलेख के अधीन उबार लेते वाले को अभिम दी गई रकम के लिए और उक्त रकम के लिए संदेय व्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त मकान/उक्त भूमि और उस पर बताए जाने वाले मकान को तृतीकोरिन पतान स्थासी बांड के पाम बंबक रखने के लिए उक्त विनियम द्वारा उपवेधित प्ररूप में दस्तावेज का निष्पादन करेगा।
- (4) \*यदि उक्त प्रयोजन के लिए श्रिप्रिम का भाग लेने की नारीख़ से दो मास के भीतर या ऐसे श्रितिरिक्त समय के भीतर, जिसे तूतीकोरित पत्तन त्यासी बोई/विभागाध्यक्ष इस निमिस्त समुज्ञान करे, भूमि भा ज्ञय नहीं किया जाता है और उसका विकय निलेख तूनोंकोरित परवन त्यासी बोई के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत नहीं किया जाता है/\*यदि श्रिप्रम लेने की नारीख़ से तीन मास के भीतर या ऐसे श्रितिरक्षा समय के भीतर जो तूतीकोरित पत्तन त्यासी बोई/निभागाध्यक्ष इस निभिन्त श्रमुज्ञान करे, मकान

<sup>\*</sup>जो लागृन हो उसे काट बीजिए।

का क्रय गही किया जाता है और ासे क्ष्मिक नहीं रखा जाता है /\*सिष्ठ उधार लेने बाला उपर किए गए करार के प्रमुखार, उक्त मकान का निर्माण/ विस्तार पूरा करने में श्रमकल रहता है या यदि उधार लेने बाला दिवालिया हो जाता है या पूर्ताकोरिन पल्लन न्यासी बोर्ड की नौकरी छोड़ देता है या मर जाता है तो श्रिप्रम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज सहित तूरीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को, सुरन्त सोध्य श्रीर संदेय हो जाएगी।

- (5) सरकार को यह हक होगा कि वह उक्त स्रांग्रम की शेष रकम स्रोर उस पर व्याज जिसका संवाय उसकी (उधार लेने वाले की) मेवा निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस संपूर्ण उपदान या उसके किमी विनिधिष्ट भाग में से बसूल कर ले जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (6) तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोई के इस निमिल्स किसी श्रन्य श्रिधिकार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले बिना, यदि कोई रक्षम उधार लेने वाले द्वारा तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को नौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड उस रकम को भू-राजस्य की सकाया के रूप में वसूल करने की हकवार होगी।
- (7) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होगा वह सुतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड देगा ।

न्ननुसूची जिसका उल्लेख ऊगर किया गया है।\*\*

इसके साध्यस्वरूप उधार लेने व बोर्ड के लिए श्रीर उनकी श्रोर से	ाले ने श्रौर तृतीकोरिन पतत्न न्यामी
के कार्यालय के श्री : : : : : : : : : : : : : : : : : : :	ने इस पर ग्रयने-ग्रपने
•	
जक्त उधार लेने वाले ने	
	(उघार लेने वाले के हस्ताक्षर)
(1)	(साक्षीका नाम, पता श्रीर व्यवसाय)
******	(साक्षी के हस्ताक्षर)
(2)	(साक्षी का नाम, पता स्रौर व्यवसाय)
**************	(साक्षी के हस्ताक्षर)
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।	
•••• कार्या	लयं के
<b>ᆀ···</b>	
ने	
(1)	(साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय)
	हस्ताक्षर
· · · · (साक्षी के हस्ताक्षर)	(तूतीकोरिन पस्तन न्यासी बोर्ड केलिए और उनकी फ्रोर से)
(2) ••••• (साझी का नाम पता ग्रीर व्यवसाय)	
••• (साक्षी के	

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा भूमि का क्रय करने ग्रीर मकान बनाने के लिए सब निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष प्ररूप जब उमे भूमि का हक, मकान बन जाने के पत्रचान् संकान्त होगा।

### (विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री : : : : : : : : जो
इस समय : : : : के रूप में सेवा कर रहा है
(जिसे इसमें प्रागे उधार लेने वाला कहा गया है धौर इसके धंतर्गत उसके
वारिस, निष्पादक, प्रशासक और विधिक प्रतिनिधि भी हैं, जब तक कि
ऐसा विषय या संदर्भ से श्रपविजन या उसके विरुद्ध नहीं है) श्रीर दूसरे
पक्षकार के रूप में तूतीकारिन पत्तन त्यासी बोर्ड (जिसे इसमें घागे
तूतीकोरिन पत्तन 'न्यामी बोर्ड' कहा गया है और इसके श्रंतर्गत उसके
उत्तरवर्ती और समनुदेशिती भी है जब तक कि ऐसाविषय या मंदर्भ से
यपर्वाजन या उसके विरूद्ध नहीं हैं) के बीच प्राज नारीखा : · · · ·
·····को किया गया ।

उधार लेने वाला इससे संलग्न ध्रनुसूची में वर्णित भूमि का ''''' (यहां विश्वेशः का '''''ों क्य करना चाहता है धौर उस पर मकान बनाना नाम विखिए)

### चाहता है।

उक्त भूमि के हस्ताक्षर-पन्न उक्त · · · · · · · (विकेता का नाम लिखिए) द्वारा उधार लेने वाले के पक्ष में तभी निष्पादित किया जाएगा जब मकान बन जाएगा।

इसके पक्षकारों के द्वारा और उनके बीच यह करार किया जाता है कि:→

- ... सपये की राणि भौर उक्त नियम के उपबन्ध के अनुसार तृतीकोरिन पतन न्यासी बोर्ड द्वारा उधार लेने वाले को दी जाने वाली राशि ... ... सपये की राणि के प्रतिफलस्वरूप उधार (यहां दी जाने वाली घोष रकम लिखिए)

लेने वाला तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के साथ यह करार करता है कि यह :---

(क्:) उस समय प्रवृत्त उक्त नियमों के अनुसार लगाए गए अयाज सक्रित: की उक्त रकाम का

(यहां मंजूर की गई पूरी रकम लिखिए)
....मासिक किस्तों में तूतीकोरिन पतन न्यासी
बोर्ड को प्रतिसंदाय प्रपने वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय

हस्तामर)

की उपस्थिति में हस्ताक्ष'र किए।

प्रकृप संख्या-५ (क)

<sup>\*</sup>जो लागून हो उसे काट बीजिए।

<sup>\*\*</sup>यह उधार लेने वाला **भरे**गा ।

ा ा माम से अथया मकान पूरा होने के पश्चातवर्ती मास से, इनमें से जो भी पूर्वनार हों, प्रारंभ होगा। उदार लेने वाला। ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक येवन, छुट्टी येवन और विविध भने बिलों में से करने के लिए तूनीकीरिन प्रभान त्यामी बोई की प्राधिकृत करना है।

--

- (ख) उगोंही उसे उक्त भूमि वा कय मूल्य प्राप्त हो जाएगा और उक्त भूमि का कब्जा मिल जाएगा उक्त भूमि की बाबि उक्त भूमि के केता के रूप में प्रपत्त सारे ब्रिधकारों का प्रतिभति के रूप में तृतीकीरित पलत त्यासी बोर्ड के पक्ष में भीर उक्त ........................(विक्रेता का नाम लिखिए) के विरुद्ध समनुदेशन करेगा भीर इस प्रयोजन के लिए उक्त विनियम में उपबन्धित प्ररूप में ब्रितिस्कत हस्तांतरण पद्म निष्पादित करेगा।
- (ग) उक्त मकान का निर्माण पत्तन न्यामी बोर्ड द्वारा अनुमोदिन किए जाने वाले उस नक्षणे और उन बिनिर्देणों के अनुसार जिनके आधार पर अग्निम की रकम की संगणता की जानी है और अन्तिम रूप से मंजूर की जानी है, के अट्ठारह मास के भीतर या उस बढाई गई अबिध के भीतर पूरा करेगा जो तूनीकीरिन पत्तन न्यासी बोर्ड द्वारा अधिकथित की जाए।
- (घ) यदि मकान बनाने के लिए वस्तुतः दी गई रकम इस विलेख के ग्रधीन उसके द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो वह उनके अन्तर का तूनीकोरिन पत्तन न्यामी बोई को तुरन्त प्रतिसंदाय करेगा।
- (इ) ज्योंही सकान बन जाता है घोर उसके पृक्ष में धावप्यक धिमहरूनांतरण पत्न या हस्तातरण पत्न निष्पादित हो जाता है, इस विलेख के प्रधीन उधार लेने वाले को धिम दी गई रकम के लिए घौर उक्त रकम के लिए सदेय ब्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त भूमि घौर उस पर बनाए गए सकान को तृतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त नियम द्वारा उपविधित प्ररूप में दस्तार्थक का निष्पादन करेगा।
- (2) यदि उद्यार लेने वाला उत्पर किए गए करार के प्रमुतार, उक्त मकान का निर्माण पूरा करने में प्रमुक्त रहता है या यदि उक्त भूमि के क्रय मृख्य का संदाय करने प्रौर कब्का करने के प्राप्त करने के पृथ्वान प्रतिरिक्त हस्तांतरण पन्न निष्णादिन नहीं करना है या उनके पक्ष में प्रावण्यक प्रभिद्धनांतरण पन्न या हस्तातरण पन्न निष्पादित कर दिए जाने के पश्चान वधक विलेख निष्पादित नहीं करना है या यदि उद्यार लेने वाला दिवालिया हो जाना है या तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की नौकरी छोड़ देता है या मर जाना है तो अग्निम की पृरी रकम उन पर लगने वाले ब्याज सहित सरकार को नुरन्न लोध्य प्रौर संदेय हो जाएगी।
- (3) सूतीकांदिन पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त ध्रिप्त की गोप रक्षम ध्रीर उस पर ब्याज जिसका संदाय उसकी (उधार लेने वाले की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा-निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी निर्निदिष्ट भाग में से बसूल कर ले जो उधार लेने वाले का मंजूर किया जाए।
- (4) त्तीकंरित पत्तन त्यासी बोर्ड के इस निमित्त किसी प्रत्य प्रधिकार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले बिना यदि कोई रकम उधार लेने वाले द्वारा त्तीकंरिन पत्तन त्यासी बोर्ड को लोटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो तूर्तीकंरिन पत्तन त्यासी बोर्ड उस रकम को भू-राजस्य की बकाया के रूप में वसूल करने का हकदार होगा।
- (5) इस विशेख पर जो भी स्टाम्प मुल्क देना होगा उसे तृतीकोरिन पत्तन न्यासी मोर्ड देंगा।

ग्रमुमुची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है।\*\* (भूमि का वर्णन करें)

\*जो लागून हो उसे काट दीजिए।

	र लेने वाले ने ग्रीर नूर्त	
बोर्ड के लिए भीर उनकी प	प्रार मे	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
क।यात्रिय के श्रीः		···ः ने इस पर
ग्रपने भ्रपने हस्ताक्षर कर	दिल् हैं।	
उक्त उधार लेने बाले		
******	(उद्यार हे	ने कले के हस्ताक्षर)
ने		
(1)	····(स <b>ार्का</b>	ो का नतम पना <b>गो</b> र
	<b>ग</b> ्य	वनाय)
	- · · · · · · · (सःक्षी	के हस्ता <b>का</b> र)
(2)	· · · · · (सार्क्ष	ो कानःम, पदास्रीर
, ,	ठय <b>ा</b>	
,	(सार्क्ष	ो के हस्तक्षर)
की उपस्थिति में हस्तःक्षर	•	,
	कयरि	ाय के
श्री : , ,		
ने		
(1)	(सत्क्षी का नाम,	
( - )	पना भौर व्यवसाय)	हस्ता <b>क्षर</b>
	(माक्षी के हस्ताक्षर)	(तूत्रीकोरिन पनान
		न्यामी बोई के लिए
		भौर उनकी भ्रोर मे)
(2)	(साक्षीकानाम,	
	पता भौर व्यवसाय)	

### प्रकप- 5(वा)

· · · · · · · · · · (साक्षी के हस्ताक्षर)

की उपस्थिति में हस्तक्षर किए।

बोई के कर्मचारी द्वारा मकान बनाने के लिए श्रप्रिम की दूसरी किस्त प्राप्त करने के पूर्व उस देशा में निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष प्रक्ष जिसमें उसने विहिन भूमि के क्रय के लिए श्रप्रिम की पहली किस्त प्राप्त कर नी है श्रीर जब कि भूमि का हक उसे मकान बन जाने के पश्चात संकार होगा।

### (विनियम 7 देखिए)

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री

जो का पुत्र है भीर इस समय

के रूप में सेवा कर रहा है (जिने इसमें भ्रागे 'उधार लेने वाला' कहा गया है भीर इसके भन्नांत उसके वारिस, निष्पादक, प्रणासक भाँर विधि प्रतिनिधि भी हैं, अब तह कि ऐसा विषय या संदर्भ से भ्रपत्रजित या उसके विषद्ध नहीं है) भीर दूसरे पक्षकर के रूप में तूतीकारित पत्तत त्यासी बोर्ड (जिने इसमें भ्रागे 'तूतीकारित पत्तत त्यासी बोर्ड कहा गया है भीर इसके भन्नांत उनके उत्तरश्रां भीर समनु-वेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से मन्नांजित या उसके विषद्ध नहीं है) के बीच भ्राज तारीखा को

उधार लेने वाला इसते संसरन धनुसूची में वर्णित · · · · · · · · में स्थित भूमि पर मकान बनाना चाहता है।

उद्यार लेने वाले ने पूलीकोरिन पत्तन न्यासी कर्मचारी (मकानों के निर्माण, ग्रादि के लिए प्रिप्तम का भनुवान) विनियम, 1979 (जिसे

<sup>\*\*</sup>यह उधार लेने वाला भरेगा।

इसमें ग्रागे 'उक्त विनियम' कहा गया है ग्रौर इसमें जहां संदर्भ के मनुक्ल हो, तत्समय प्रवृत्त उसके संगोधन या परिवर्धन भी हैं) के उपवन्ध के ग्रधीन . . . . . . . . . . . रुपये ( . . . . . . . . . रुपये ) के प्रप्रिम के लिए तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को भ्रावेदन किया है। तृतीकोरिन (यहां मंज़्र की गई पूरी रकम लिखिए) ( ......रुपये) का ग्रामिम उक्त प्रयोजन के सिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए नारीख .... का कार्यालय पत्र संख्या .... जिसकी एक प्रति इस विल्लेख के साथ संलग्न है भीर जिसमें उल्लिखित नियन्धनों भीर शतों पर यह प्रशिम मंजूर किया गया है। इसके पक्षकारों के बीच ..... तारीखः .... को निष्पादित करार के ब्रनुसरण में तूतीकोरिन पत्तन न्यासी भोई ने उपर्युक्त मंत्रूर की गई .... रूपये की राणि (यहां मंजूर की गई पूरों रकम लिखिए) में से .....रुपये (यहां दी गई बहुली किस्त की रकम लिखिए) की राणि उधार लेने वाले को उक्त करार में वर्णित निबन्धनों भीर शर्ती पर देदी है जिससे कि वह उक्त''''का कय कर सके।

उधार लेने वाले ने उक्त घष्रिम में से उक्त मूमि के कव मूल्य का संवाय ....को (यहां विकेता का नाम लिखिए) कर दिया है भीर उक्त भूमि का कब्जा प्राप्त कर लिया है,

इसके पक्षकारों द्वारा भीर उनके बीच निम्नलिखित करार किया जाता है :---

- (2) उधार लेने वाला सूतीकोरिन पत्तन न्यासी **वोर्ड** के साथ यह करार करता है कि वह:—

  - (ख) उक्त मकान का निर्माण, प्रथम किस्त प्राप्त करने की तारीख से महारह भास के भीतर या उस बढ़ाई गई मबधि के

भीतर जो तूर्तीकोरिन पत्तन ग्यासी बोर्ड प्रधिकथित करें, जस भन्नमंदित नक्यों धौर उन विनिर्देशों के धनुसार पूरा करेगा जिनके धाधार पर अधिम की रकम की संगणना की गई है धौर मकान पूरा हो जाने की तारीख से तीन मास की धविध के भीतर अपने पक्ष में धावश्यक अभिहस्तांतरण पत्न या हस्तांतरण पत्न प्राप्त करेगा।

- (ग) यदि मकान बनाने के लिए बस्तुतः दी गई एकम उधार लेने बाले द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो बह उनके भन्तर का सूनीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रति संबाय करेगा।
- (घ) ज्यों ही मकान बन जाता है भीर उसके पक्ष में भावस्यक प्रभिहस्तांतरण पन्न या हस्तांतरण पन्न निष्पादित हो जाते हैं, उधार लेने वाले को प्रप्रिम की गई रकम के लिए प्रौर उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त भूमि प्रौर उस पर बनाए गए मकान को तृतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त विनियम द्वारा उपबंधित प्ररूप में दस्तावेज का निष्पादन करेगा।
- (3) यदि उधार लेने याला इसमें इसके पूर्व उपबंधित रूप में उक्त मकान का निर्माण पूरा करने में असफल रहना है या अपने पक्ष में आवश्यक अधिहस्तांतरण पत्न या हस्तातंरण पत्न कराने में या बंधक विलेख निष्पादित करने में अमफल रहता है या यदि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाता है या मूर्तीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की मौकरी छोड़ देता है या मर जाता है तो अग्निम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज सहित तूर्तीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त शोध्य और संदेय हो जाएगी और तूर्तीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड अपने अन्य अधिकारों पर प्रतिकृत प्रकाब काले विना इसके द्वारा अनुवस्त प्रतिभृति की वसूली के लिए कार्यवाही करने का हकदार होगा।
- (4) तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त मग्रिम की शेष रकम और उस पर क्याज जिसका संदाय उसकी (उधार लेने वाले की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपवान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से वसूल कर ले जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (5) तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के इस निमित्त किसी झन्य झिकार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले जिना, यदि कोई रकम उधार लेने बाले द्वारा तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को लौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड उस रकम को मू-राजस्व की बकाया के रूप में बसूल करने का हकदार होगा।
- (6) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होगा उसे ह्रसीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड देगा।

भनुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है\*\*\* (भूमि का वर्णन करें)

इसके साक्ष्यस्थरूप उधार लेने वाले ने और तूतोकोरिन पत्तन न्यासी कोई के लिए धौर जनकी घोर से ''' के कार्यालय के श्री ''' ने इस पर ग्रपने-अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं?

(उधार लेने वाले के हस्ताक्षर)

<sup>\*</sup>जो लागू नही हो उसे काट दीजिए।

<sup>\*\*\*</sup>यह उधार लेने वाला भरेगा।

(1) (साध्यी का नाम, पता भीर व्यवसाय)
(माश्री के हस्ताक्षर)
(2) (साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)
(साक्षी के इस्ताक्षर)
को उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।
कार्यालय के
श्रो · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
<b>す</b>
(1) · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पना भीर व्यवसाय)
·····(साक्षी के हस्ताक्षर)
(2)(साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय).
· · · · · · · · · · · (साक्षी के हस्ताक्षर)
की उपस्थिति में हम्ताक्षर किए।
(हस्ताक्षर)
(तूतीकोरिन पत्तन म्यासी बोर्ड के लिए
ग्रीर जनकी ग्रोर में)
प्रदर्प सं० 5-ग
बोर्ड के कर्मचारी द्वारा मकान बनाने के लिए प्रश्रिम की पहली किस्त
लेने के पूर्व उस दशा में निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष
प्रकप जिसमें उसने भूमि का कप घरने ही धन से किया है किन्तु भूमि का हक सकान बन जाने के पण्चात् उसे संकान्त होंगा।
•
(विनियम 7 देखिए)
यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री
जा श्राः का पुत्र ह आर इस समय : : : के रूप में सेवा कर रहा है (जिसे
इसमें भागे 'उबार लेने बाला' कहा गया है और इसके भन्तर्गत उसके
वारिस, निष्पादक, प्रशासक और विधिक प्रतिनिधि भी हैं, जब नक कि
ऐसा विषय या सन्दर्भ से अपविजित या उसके विरुद्ध लहीं हैं) और
दूसरे पक्षकार के रूप में तूतोकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें
ग्रांगे 'तूर्ताको(रिन पक्तन न्यामी बोर्ड' कहा गया है ग्रीर इसके भन्तर्गत
उसके उत्तरवर्ती और समनुषेशिती भी हैं, जब तक कि ऐसा विषय या
सन्दर्भ से भ्रपवर्जिन या उसके स्थित नहीं है) के बीच भाज तारीखा को किया गया।
उधार लेने वाले ने इससे उपाध्य अनुसूची में वर्णित भौरः में स्थित भूमि का(यहा
विकेता का नाम लिखिए) से क्या करने का करार किया <b>है और अ</b> थने
ही धन से उसके मूल्य का संदाय कर दिया है भीर उक्त भूमि का
कब्जा प्राप्त कर लिया है । उधार लेने वाला उक्त भूमि पर मकान
धनाना चाहना है चीर उक्त (विश्वेना
का नाम लिखिए) उधार लेने वाले के पक्ष में उन्त भूमि का मिसहस्ता-
न्तरण पक्ष तथी निष्पादिल गरेशा जब मकान का निर्माण हो जातुमा।
उधार तिने वाले ने तूतीकोरिंग पत्तन न्यास कर्मकारी (मकानों के निर्माण
मादि के लिए मिन्नम का मनुदान) वितियम, 1929 (जिसे इसमें मार्ग 'उक्त जिल्यम' कहा गया है मीर इसमें जहां सन्दर्भ से मनुकूल
है सत्ममय प्रवृत्त उसके संगोधन और परिवर्तन भी हैं) के उपकाध के
मधीन तूतोकारिन पत्तन न्यासी बार्ड को प्राप्त पर्य के मग्रिम
**
के लिए मावेदन किया है भीर तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड मे जुडार

लिखिए) का ग्रंथिम उक्त प्रशोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस

जिसको एक प्रति इसके साथ संलग्न है घीर जिनमें उल्लिखित निबन्धनों

भीर णती पर उक्त अधिम मंजूर किया गया है।

इसके पक्षकारों द्वारा भीर उनके बीच निम्नलिखित करार किया जाता है:---

- (2) उधार लेने वाला सूत्तीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड के साथ करार करता है कि यह,
- (क) उस समय प्रवृत्त उक्त विनियम के प्रतृतार लाए गए ब्याज्ञ महित स्वाप्त का स्वाप्त प्रवृत्त उक्त विनियम के प्रतृतार लाए गए ब्याज्ञ महित स्वित का स्वाप्त प्रतृत को भई पूरी रक्तम लिखिए) की उक्त रक्तम का स्वाप्त स्वाप्त को को स्वाप्त संदेश महित किसतों में तृतीकंदिन पत्तन न्यासी बोर्ड को प्रतिमंदाय प्राप्त वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय स्मान से अथवा मकान पूरा होने के परचात्वर्ती माम से, इसमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्य होना धीर उधार लेने वाला ऐसी किस्तों की कटीजी उनके मासिक बेतन, खुटी बेतन धीर निर्वाह भले में से करने के लिए तृत्ताकोदिन पत्तन स्यासी बोर्ड को प्राधिकृत करता है।
- (ख) उक्त मकान का निर्माण, प्रथम किन्त प्राप्त करते की तारीख़ से अठारह सास के भीतर या उस बढ़ाई गई प्रविध के भातर जो तूरी-कोरित पत्तन न्यासी बोर्ड प्रधिकिष्यत करे, उस प्रतुमंदित तक्यों ग्रीट उन विनिर्देशों के प्रतुमार पूरा करेगा जिनके ग्राधार पर प्रश्निम को रक्षम की संगणना की गई है ग्रीर वह मंजूर की गई है ग्रीर मकान पूरा हो जाने की तारीख से तीन साम की प्रविध के भीतर ग्राप्त पक्ष में ग्रावक्यक ग्राप्त होतातरण पत्न या हस्तान्तरण पत्न प्राप्त करेगा।
- (ग) यदि मकान बनाने के लिए वस्तुतः दी गई रकत उआर लेके बाले द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो वह उनके प्रस्तर का तूलीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रतिसंवाय करेगा।
- (घ) ज्यों ही मकान बन जाता है और उसके पक्ष में बाजस्यक धिमहस्नान्तरण पक्ष या हस्तान्तरण पक्ष निजाबित हो जाते हैं, उबार लेने बाले की धिमा दी गई रकम के लिए और उस्त रकम के लिए और उस्त रकम के लिए सेंदेय ब्याओं के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उसन भूमि धोर उस एक धनाए गए सकान को तृतीकंदिन पत्तन न्यासी बोई के पान धन्धक रखने के लिए उन्त नियम द्वारा उपविधित प्रस्त में दश्तविज का निज्यादन करेगा।
- (3) यिव उधार लेने वाला इपमें इनके पूर्व उखिन्तर का में उक्त मकान का निर्माण पूरा करने में प्रसक्त रहा है या प्रश्ने पत्र में प्रसक्त रहा है या प्रश्ने पत्र में प्रसक्त रहा है या प्रश्ने पत्र में प्रसक्त पत्र प्रिह्मतान्तरण पत्न या ह्नान्तरण पत्र प्राप्त कराने में या बन्धक पत्र निष्मावित करने में प्रसक्त रहता है या यावे उचार लेन वाला विवालिया हो जाता है या तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की मौकरी छोड़ देता है या मर जाता है तो प्राप्तम की पूरी रक्त उस पर लगने वाले क्याज महित तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की सुरन्त प्रीष्ट्य प्रीर मंदेय हो जाएगी ग्रीर तूनीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड ग्राने ग्रन्य प्रधिकारों पर प्रतिकृत प्रभाव बाले बिता इसके हारा भनुवन प्रतिभित्त की वसूली के लिए कार्यवाही करने का हकदार होगा।

- (4) सूत्रीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हुक होता कि यह उक्त ध्राप्रिम की शेष रकम श्रीर उन पर अ्याज जिसका संदाय उसकी (उजार नेने बाने की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा-निवृत्ति से पूर्व उसकी मृहणु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से बसूल कर ले जो उधार लेने बाले की मंजूर किया आए।
- (5) तृतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड के इस निमित्त किसी अन्य अधिकार पर प्रसिकृत प्रभाव डाले बिना, यदि कोई रकम उबार लेते वाल द्वारा तूर्त कोरिल पत्तन त्यामी बोर्ड को लौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो तूतीकों(रन पत्तन न्यामी बोर्ड उम रकम का भृ-राजस्व की धिकाया के रूप में यसूल करने का हकदार होगा।
- (6) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होना उसे तूती-कोरिस पत्तन न्यासी बोर्ड देश ।

## प्रमुस्ची जिसका उल्लेख ऊपर किया भया है\*\* (भूमिका वर्णन करें)

इसके साक्ष्य स्वरूप उधार लेने वाले ने भीर तूरीकारिन पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए धीर उनकी धोर से . .... के प्रार्थालय के श्री ..... ने इस पर प्रधने-प्रपने हस्ताक्षर गर दिए हैं। उक्स उधार नेने वाले ने a da a e galenda e e e e e e e e e e e e e e . . . . . . . . . . . . . . . . . . . (उधार लेने वाले के हस्ताक्षर) (1) ....(साक्षी का नाम, पना श्रीर व्यवसाय) .... (३ क्षी वे.१८१८) ( 2) · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पंता श्रीर व्यवसन्य) . . . . . . . . . . . . . . . . . (माक्षी के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्काक्षर किए। ..... कायलिय के (1) .... पता भौर व्यवसाय) ं .... (माक्षी के हस्ताक्षर) (2) ....(साक्षी का नाम, पना ग्रीर व्यवसाय) - · · · · · · · · · · · · · · · · (सार्क्षा के हस्ताक्षर) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। ह्रम्ताक्षर ..... (तूर्त।कोरिन पत्तन न्यासी बीर्ड के लिए और उनकी घोर है) . . .

प्ररूप सं० 6 (प्रसिभू बन्धपत्र)

[विनियम 7(6) देखिए]

यह सबको ज्ञात हो कि मैं, पारापार पारापार जें। जिले में .....का निवासी हूं भौर इस समग ······में स्थायी······ः स्था में योजित हूं (जिसे इसमें आगे "प्रतिभू" कहा गया है), तूरीकोरिन पत्तन

के न्यासी बोर्ड के प्रति (जिसे इसमें श्रागे ''तूर्राकोरिन पत्तर न्यासी कोर्ड " कहा गया है और इसके अन्तर्गत उनके उत्तरवर्ती और समन्देशिसी भी हूं, अब तक कि ऐसा सन्दर्भ से अपवर्धित या उसके विख्दा नहीं हैं) ः ः ः ः रूपये (क्षेत्रलः ः ः ः ः रूपये) की रकम का सूर्वीकोरिन पत्तन न्यासी खोर्ड को संदाय करने के लिए बजनबाह हूं और दुक्तापूर्वक आधाद्ध हूं। यह संकाय पूर्णत. और सही रूप में करने के िलए, अपने की, अपने वारिसी, निष्यावकी, प्रणासकी धौर प्रतिनिधियी को इस विलेख द्वारा दृष्ठमापूर्वक ग्रायद्व करता हूं। इसके साक्ष्य स्वरूप मैं काज : : : : : : : : : : : को इस पर अपने हस्ताक्षर करता हूँ।

का पुत्र क्यौरः ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' जिले में ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' का निकासी है भीर इस समयः '''''''' 'मं भस्थायी/स्थायी ा ा ा ा ा ा ा ा कि कप में नियोजित है (जिसे इसनें द्वागे "उधार लेने वाला" कहा गया है)\* (जिल्लु जो · · · · · · · को सेया-निवृत्त होने वाला है)\* भूमि का कय करने ग्रीर/या नए मकान का निर्माण करने/विद्यमान मकान में भ्रावास का विस्तार करने/बने बन∵ए मकान का ऋष करने के निए .... घा अधिन के लिए तूनीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्डको ग्राप्टेश किए है।

तूनीकोरिन पत्तन त्यासी बोर्ड ने तूनीकोरिन पत्तन न्यास कर्नवारी (भकान के निर्माण अवि के लिए अधिन का अनुदार) विविद्या, 1979 के जिसे इसमें धारी "जन्म विनियम" कहा गरा है, प्रारांत : : : : : : रुपये (केंबल ' राप्ता रहमये) का संदाय मंजूर कर दिया है।

उधार लेने वाले ने उक्त रकम का · · · किस्तों में प्र**िसंदाय** करने का वचनबन्ध किया है और उधार लेते वाने ने यह भो । बचनबन्ध किया है कि वह उक्त रकम की सहस्यता से निर्मित्त/का किए गए मकान को बन्धक कर देगा और उका वितित्रम के उत्तवन्त्रों का अनुपालन करेगा। उधार लेने वाले को पूर्वोक्त प्रत्या देने के निर्द्राहोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड द्वारा करार के प्रतिकतन्त्रका प्रतिनू ने उत्तर्भन बन्दान नीचे लिखी शतों पर निष्पादित करने का करार किया है।

उक्त बाध्यक्षा की शर्त यह है कि यदि उक्त उधार क्षेत्रे वाला जक्तः ... कार्याजय में या जिसी ग्रन्य कार्याजय में रियोजित रहने के दौरान, तूसीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को देव पूर्वोक्त ग्रिम की रक्तम का तूर्तकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को कब तक सम्यक् भ्रोर नियमित रूप से किस्तों में संदाय करना है जब तक कि का करना रुपये (केवल : : : : : क्पये) की उक्त राशि का सम्यक् रूप से भूगकान नही हो जाता है या वह उक्त निर्मित/कय किए गए सकतन का तूनीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड को बन्धक कर देना है, जो भी पूर्वनर हो, तो यह बन्धकपत्न शुन्य हो जाएगा अन्यया यह पूर्णतः प्रवृत्त भीर बलंकील रहेगा । जिल्हु यदि उधार लेने वाला मर जाना है या दिवालिया हों जाता है या किसी समय तूतीकोरिन पत्तन न्यासी बोर्ड की सेवा में नहीं रहन्तं है तो ``` ' ' ' ' (केशव ' ' ' ' ' ' ' रस्त्रे) का उ×न पूरा मूलधन या उसका उपना भाग जिनना शेष रह जाता है तथा उनते मूलंधन पर देय ब्याज जो उस समय असंदत्त रहता है, तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोर्ड को तुरन्त शोध्य और संदेय हो जाएगा और इस बन्धपत्र के फाधार पर प्रतिभू से एक किस्त में वसूल किया जा सकेगा।

प्रतिभू ने जा बाध्यमा र्स्वाकार की है, वह तूरीकोरिन पत्तत न्यासी बाई द्वारा संमय बढ़ाये जाने या उक्त उधार लेने वाले के प्रति कोई ग्रन्य उदारता बरने आने के कारण न तो उन्मोचिन होगी श्रीर न किसी प्रकार प्रभावित होगी।

<sup>\*\*</sup>यह उधार लेने वाला भरेगा ।

तूतीकोरिन पत्तन न्यामी बोई इस विलेख शुक्क देगा।	की बाबत संदेय स्टाम्प
ऊक्तः ने	
(1)	-1-11-11-1
	(प्रतिसू के हस्ताकर)
(प्रथम स.क्षरका नाम,पता तथा व्यवसाय )	
(2)	पदनाम : : : : : : : :
	कार्यालय : : : : : : :
(द्वितीय साक्षी का नाम,पता और व्यवसाय )	
की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए भीर परिवास	किया ।
कार्यालय के श्री	· · · · · · ने
(1)	
(प्रथम सक्षी का नत्म, पना भ्रौर व्यवसाय)	
(2)	,
	(तूनीकोरिन पत्तन न्यासी
(ब्रितीय साक्षी का नाम, पना और व्यवसाय)	बोर्डकेलिए भीर उसकी स्रोरमे)
की उपस्थिति में हस्साक्षर किए ।	આર. મ )
प्र <b>क</b> र सं० 7	
मकान निर्माण क्षप्रिम के लिए प्रतिहस्पान्तर [विनियम 10(घ) देखिए]	
यह प्रतिहस्तान्तरण थिलेख, एक पक्षकार के र त्यासी बोर्ड (जिसे इममें प्रागे बन्धकवार कहा गय उसके उत्तरवर्ती और समनुदेणिती भी हैं, जब प्रपर्वाजन या उसके विष्व नहीं हैं) और दूस के हागे विश्वककर्ता कहा गया है और इसके घन्तर्गत प्रशासक और समनुदेणिती भी हैं, जब तक कि से घ्रप्रविज्ञ या उसके विष्य नहीं हैं) के बीच आ को किया गया है।	ा है और इसके अन्तर्गत तक कि ऐसा सन्दर्भ से रे पक्षकार के रूप में ·····(जिसे इसमें उसके वारिस, निष्पादक, ऐसा विषय या सन्दर्भ
एक पक्षकार के रूप में बन्धकारती स्रीर दू बन्धकदार के बीच नारीखा	
जो प्राप्त संख्या	ः राष्ट्रारा जिल्द
संख्या पष्ठ संख्या से .	····· नक में
संख्याः । । । । । के रूप में । । । । । । ।	'ःके लिए रजिस्ट्री <b>क</b> त
हैं (जिसे इसमें मूल करार कहा गया है) रजिश ····में स्थित सम्पत्ति का	न्द्रीकृत है, बन्धककर्ता ने , जिसका विस्तृत वर्णन
इसमें द्वागे लिखी द्वतृसूची में दिया गया है, बन्धा	त्र वन्त्रकार द्वारा वन्धक-
कर्ताको दिए गएः ' ' ' ' स्पये के ध्रा	ग्रम को प्रतिभूत करने के

मूल करार की प्रतिभूति पर गोध्य और देर सब धा का पूरा संदाय कर दिया गया है और सदनुसार, बत्धककारों के अनुरोब पर बत्धकबार ने इसमें इसके धार्ग अस्तिबंद कर में बत्धक परिसर का प्रतिवास्तरण विलेख निष्पादित करने का करार किया है। अब यह विशेष छप बाम का साक्षी है कि उक्त करार के अनुसरण में और उर्ग्युक्त के प्रतिकल-स्वरूप बन्धकदार मार्ग भूखण्ड का, जो मूल करार में समाविष्ट है और जिसका विस्तृत वर्णन इसमें और लिखी अनुसूची में किया गया है, उसके उन अधिकारों, सुबाचारों ौर अनुसम्बक्तों सहित, जो मूल करार में उस्लिखिय हैं तथा मूल करार

लिए बन्धकदार को कर दिया है।

के भाधार पर उक्त परिसर में से या पर बन्धकवार की सभी सम्पदा अधिकार, हक, हिन, सम्पत्ति, दाये और मां। का इसके द्वारा बन्धकाती को अनुदान, समनुदेशन और प्रतिहस्तान्तरण करना है। इसके द्वारा बन्धककर्ता को ग्रौर उसके उपयोग के लिए जिन परिनर का ग्रनुदान, समनुदेशन और प्रशिहस्तान्सरण किया जाना प्रभिव्यक्त है, उसे बन्धककर्ता उन्त मूल करार द्वारा प्रतिभूत किए जाने के लिए द्वा*गा*यित सभी धन भौर उक्त धन या उसके किशी भाग के लिए या उसके सम्बन्ध में ध्यथवा मूल करार के या परिसर की बाबत किसी च*ि*ज के सम्बन्ध में सभी प्रनुयोजनों, वादों, लेखाग्रों, दावों ग्रीर मांगों से निवृक्त रूप में प्राप्त ग्रौर धारण करेगा । बन्धकदार, इसके द्वारा बन्धककर्ता से प्रसंविदा करना है कि उसने (बन्धकदार ने) न नो ऐसी कोई बाप की है, न जानबूसकर सष्टन की है, भीर न उसमें पक्षकार या संसर्गी रहा है जिससे उक्त परिसर या उसका कोई भाग हक, सम्पदा, की बाबत या अन्त्रथा मधिक्षिप्त, विल्लंगमित या प्रभावित होता है या किया जा मकता है। इसके साध्य स्वरूप बन्धकदार ने घालो घोरसे ''''' द्वारा इस पर अपर सर्वप्रथम निखी नारीख को हस्नाक्षर करवा दिए हैं।

प्रमुस्ची जिसका उरर उस्लेख किया गया है।

बन्धकदार के लिए भीर उनको और से

(1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय)
(प्रथम साक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय)
(दिनीय माक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय)
(सिनीय माक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

ध्यान वें: ग्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्म गुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्वित करने के निए कि क्या स्टाम्म गुल्क के संबाय से कोई छूट मिन सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें।

#### प्र₹प सं०8

भारतीय बीमा निगम को उन मकानों की जिनका निर्नाग/कर निरम के स्रश्रीन स्रनुकोय भवन निर्माण स्रीयम से किरा गया है, वासा पालितियों में बोर्ड के हिए की सूचना देने यात्रे पत्र का प्ररूप

प्रेषकः मेवामें,

> (वित्तीय मलाहकार भ्रौर मुख्य लेखा भ्रखिकारी/निवक्रक/किताहकास के माध्यम से)

महोदय,

द्यापको सूचना दी जाती है कि तूनीकोरित पत्तन त्यास आपके ति त में प्राप्त मकान की बीमा पालिसी संख्या : : : में हिनबढ़ है। स्नापसे सनुरोध है कि प्रापं पालिसी में निम्तिविक्षत ग्रांशय का खण्ड जोड़ने की हुपा करें।

बीमा पालिसी में जोड़े जाने वाले खण्ड का प्ररूप

1. यह घोषणा की जाती है और करार किया जाता है कि श्रो : .....ं की उस भवन का स्वामी है जिसका

2. इस पृथ्डोकन द्वारा प्रभिष्यका स्त्र से जो करार किया गया है, उसके सिवाय इसकी किसी भी बान से बीमाकृत या निगम के, इस पालिसी के प्रधीन या सम्बन्ध में प्रधिकार या दायित्व का प्रथवा इस पालिसी के किसी निबन्धन, उपबन्ध का मर्त का न सो उपान्तरण होगा ग्रीर न उस पर प्रभाव पढ़ेगा।

स्थान :

भवदीय

मारोख:

क्रमेषित । क्रुपया इस पत्न के प्राप्त होते की क्रिंभिन्नोक्रित दें । यह भी क्रमुरोध है कि जब कभी इस पालिसी के क्रांग्रीत किती दाये क संवाय किया जाए तब और यदि नबीकरण के लिए कार्तिक रूप से प्रीमियम का संवाय नहीं किया जाता है तो उपको भी सूचना मुझे देते की क्रुपा करें।

(लेखा ग्रधिकारी/विभागध्यक्ष का पदनाम)

स्थान :

तारीख:

राज्य भ्रावास बोर्ड से क्रस की गई सम्पत्ति के बंधक के लिए राज्य श्रावास बोर्ड द्वारा दिया जाने वाला सहमति पत्न प्रेषक

**प्रध्यक्ष** 

### राज्य आवास बोर्ड

सेवा में,

**प्रध्यक्ष** 

तूतीकीरित पत्तन न्यास,

सूती,कोरिन-628004

महोदय,

निर्देश: राज्य ग्रायास बीर्ड से कथ की गई संपत्तियों का बंधक किया जाना।

हम यह वक्तवा करने के लिए गहमन है कि यदि उस सम्पत्ति/ पलेट/मकान संख्या करने के लिए गहमन है कि यदि उस सम्पत्ति/ पलेट/मकान संख्या करने के प्रौर जिसका बने बनाये मकान/फ्नेट प्रादि के क्रय के लिए उधार लेने के उद्देश्य से तूतीकोरिन पत्तन न्यास को बंधक, करने की खब प्रस्थापना है, आबंटन की नारीख से पांच/दम वर्ष के भीतर किसी कारण से तूतीकोरिन पत्तन न्याम द्वारा विकय किया जाना है और यदि हम केना द्वारा निष्पादित निकय/पट्टा नथा निक्रय करारों के अनुसार उस संपत्ति का पुनः क्रय करने के प्रपने विकल्पाधिकार का प्रयोग करने है, तो हम उस बकाया रकम का जो उधार के मद्धे तूनीकारिन पत्तन स्यास को धेय हो धौर ऐसी धितिरिक्त राशि का जो भावेदक द्वारा तृतीं कोरिन पत्तन न्यास के पक्ष में निष्यादित किए जाने वाले बंधक विलेख के निवंधनों के अनुसार देय हो, संदाय करेंगे अथवा ध्रनुकल्पतः हम तृतीकोरिन पत्तन न्यास को सम्पत्ति के साथ ऐसा संव्यवहार जो धावण्यक हो जाए भौर जिसके अंतर्गत उसका विकय भी है, करने की ध्रनुज्ञा देंगे सानों उक्त करार के सुसंगत खण्ड में ऐसा कोई ध्रनुजन्ध नहीं है कि यदि धावन्दन की तारीख से पांव/दस वर्ष के भीतर उसका विकय किया जाता है तो वह प्रथमतः राज्य ग्रावास बोर्ड को प्रस्थापित किया जाएगा।

ग्रध्यक्ष

राज्य प्रावास बोर्ड के ऋय की गई सम्पत्ति के बंधक के लिए राज्य प्रावास बोर्ड द्वारा दिया जाने वाला प्रमाण-पत्न

उपाबन्ध ख

प्रेषक

ग्रह्मक्ष

राज्य आवास बोर्ड

#### प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मूळण्ड/पतेड/महान ग्रादि संख्या के भ्रावंदिती श्री किया जाता है। इसकी सूजना इस कार्यानय के तारीख कि मुगतान कर दिया जाता है। इसकी सूजना इस कार्यानय के तारीख के आवंदिती को सम्बोधित है) दे दी गई है तथा उपको भूखण्ड/पतेट/महान का कब्जा तारीख कि सम्बोधित है) दे दी गई है तथा उपको भूखण्ड/पतेट/महान का कब्जा तारीख कि कि सम्बोधित है। दे दी गई है तथा उपको भूखण्ड/पतेट/महान का कब्जा तारीख कि कि सम्बोधित के दिया गया था। राज्य भाषास बोर्ड उस भूखण्ड/पतान/पत्रैट संख्या का हर भाष्ट्रन की तारीख के 5 वर्षों/10 वर्ष की भ्रवधि पूरी होते पर भौर यदि उसकी भ्रत्ति के मागत में भंतर यदि काई है, का भूगतान कर दिए जाने पर भाषंदिती को निश्चित क्य से भ्रत्तिरत कर देगा। उक्त भूखण्ड पर भवत निर्माण का/उक्त बो अनाए सकान/क्रीट के खर्च की पूर्ति के लिए उधार जुड़ाने के प्रयोजन से उक्त संपत्ति के तूरीकोरिन पत्तन न्यास को बंधक किए जाने पर राज्य भ्रावास बोर्ड का कोई भ्रापत्ति नही है।

..... ग्रस्थका

रिजस्ट्रीक्टन सहकारी सोपाइटियों से बने बनाए मकान/क्नैट के कब की दशा में निष्पादित किए जाने वाले स्वीय बन्धपत्र का प्ररूप (स्वीय बंधपत्र)

तारीखः । । । । । । को इस पर हस्ताक्षर किए गए।

उक्त प्रावद्ध व्यक्ति ने ..... में स्थित ..... नामक भवन में एक रिहायशी पत्तैट खरीदने के प्रयोजन के लिए ..... रुपए के उधार के लिए बोई को प्रावेदन किया है। उक्त भवन का विस्तृत वर्णन इसमें ग्रागे लिखी ग्रनुसूची में किया गया है ग्रीर वह भवन शीग्र ही

\_\_ - -- ----

इस बन्धपत्न की गर्नयह है कि यदि उक्त ग्राबद्ध व्यक्ति बोर्डको तारीखारारारा से भीतर उक्त ' मम्यक रूप में संदाय · · · · · · · समान मासिक किल्तों में प्रत्येक कलैंण्डर म।स के प्रथम सप्ताह में करता है तो यह बन्धपत्न शून्य हो जाएगा, ऐसी प्रवस किश्त का संवाय 19 ' ' ' के ·····के प्रथम सन्ताह में किया जाएगा ग्रीर पश्चात्**व**र्ती किश्तों का संदाय तत्पक्ष्वात् प्रत्येक द्यागामी कर्लैण्डर मास के प्रथम सप्ताह में किया जाएगा ग्रौर इसमें इसके पूर्व जैसा उपबन्ध है उसके श्रनुसार उक्त उधार के मूलधन का नियमित किश्तों में संदाय करने के पश्चात् उक्त ग्राबद्ध व्यक्ति बोर्ड को उक्त : : : : १६५ए के उधार के घटते ध्रुए प्रतिशेष के ब्याज की रकम का भुगतान होने तक उसका सम्यक रूप से संबाय .... वर्ष की प्रतिरिक्त अवधि के भीतरः ः ः प्रितिशत प्रतिवर्ष की दर से करेगा। ऐसे ब्याज का संदाय ..... समान मासिक किश्तों में किया जाएगा । सम्पूर्ण उधार ग्रीर उस पर ग्याज का प्रतिसंदाय तारीख 😬 से · · · · · · · · · · · वर्ष की ग्रवधि के भीतर किया जाएगा। परन्तु यवि द्याबद्ध व्यक्ति मूलधन की द्यौर/या व्याज की किसी किस्त का नियत तारीख पर संदाय करने में असफल रहता है तो ऐसे प्रत्येक मामले में बकाया मूलधन थ। व्याज की ऐसी किस्त की रकम पर ..... प्रतिकात प्रतिवर्ष की ब्याज की उच्चतर दर से क्याज लगेगा धीर ब्याज की ऐसी प्रत्येक किस्त में उसी अनुपात में युद्धि कर दी ज।एसी। यह भी उपबन्ध है कि इसकी किसी भी बात का यह मर्थ नहीं लगाया जाएगा कि उसमे मूलधन ग्रीर व्याज की उक्त किस्सों का उनके लिए नियन तारीख पर संदाय करने का उक्त भावत व्यक्ति का दायित्व भ्रषया भन्यथा बोर्ड का कोई अधिकार या उपचार शिथिल होता है।

- (ख) आबद्ध व्यक्ति के पक्ष में मकान या भूखण्ड के फ्रन्तरण का निष्पादन कर विष् जाने पर वह उसे बोर्ड को प्राप्त किए गए उधार के लिए प्रतिभूति के रूप में बोर्ड के पास बन्धक कर देगा।
- (ग) यदि उक्त फ्लैट स्नौर ग्रोयर/डिबेंचरों की, जिनका पूर्वोक्त रूप में क्रय किया जाना स्रवेक्षित है, वास्तविक कीमत उक्त उक्षार की रकम से कम है तो वह उस ग्राधिक्य का बोर्ड की तुरन्त प्रतिदाय करेगा।
- (घ) वह बोर्ड की लिखित पूर्व-सहमित के बिना उक्त प्रलैट या उसमें किसी हिंत का न तो धंतरण, समनुदेशत, उप-पट्टा

- करेगा, न उसका कब्जा छोड़ेगा श्रीर न उक्त शेपर/डिवेंचरों का श्रीतरण या अस्यथा श्रस्य-संकासण करेगा।
- \*(घ) जब नक उक्त उधार धीर ब्याज का उसका कोई भाग बकाया रहना है और यदि बोर्ड द्वारा घनेला की जाए तो वह उक्त गेयर/डिबेंचरों तथा समुचित रून से हस्ताक्षरित कोरा घन्तरण प्ररूप, उक्त उबार की धांतरिक प्रतिमृति के रूप में, बोर्ड को सौप देगा।

आबद्ध व्यक्ति निम्नलिखित करार करता है:---

- (1) प्रावद्ध व्यक्ति द्वारा बोर्ड को नत्ममय देव उक्त उद्यार या उसका प्रतिशेष तथा इस विलेख के प्रधीत देव सभी धन निम्नतिखित घटनाओं से किसी के होते पर तुरन्त संदेव हो जाएगा:---
  - (क) यदि श्राबद्ध व्यक्ति मूलअन को किसी किस्त या प्रतिसंदाय का, जब वह शोध्य भौर संदेय हो जाता है, उसके लिए नियन तारीख को संदाय करने में श्रमकत रहता है।
  - (ख) यदि आवद्ध व्यक्ति भ्याज की किसी किस्त का नियत नारीख को इसमें इसके पूर्व उपवन्धित रूप में संदाय करने में व्यति-कम करना है।
  - (ग) यदि ध्रावद्ध व्यक्ति की किसी सम्पत्ति पर कोई करस्थम या निष्पादन उद्घहित किया जाता है या उसका रिसीवर नियुक्त किया जाता है।
  - (घ) यदि भावत व्यक्ति उक्त प्रसंविदाओं या उपवन्धों का जिनका उसकी ग्रोर में पालन किया जाना है, भंग करता है।
  - (ङ) यदि भाषद्ध व्यक्ति मर जाता है या बोर्ड की सेवा से निवृत्त हो जाता है या उसकी सेवा में नही रहना है।
  - (च) यवि भावक व्यक्ति विवालिया न्यायनिणीत किए जाने के लिए याचिका प्रस्तुत करना है या विवालिया न्यायनिणीत कर दिया जाता है।
- 2. बोर्ड को प्रतिमास आबद्ध व्यक्ति के देतन में से मासिक किस्तों की रक्तम काटने तथा उसे मूलधन या ब्याज के प्रतिसंदाय में मासिक किस्तों में विनियोजित करने का पूर्ण अधिकार और स्वतंत्रता होगी और उपर्युक्त प्रयोजनों के लिए आबद्ध व्यक्ति बोर्ड की ऐसी कटौतियां आबद्ध व्यक्ति की किसी प्रन्य महमति या सम्मति की आवश्यकता के बिना करने के लिए अप्रतिसंहरणीय रूप से प्राधिकृत करना है।
- 3. प्राथक व्यक्ति के सेवानिवृत्त होते या सेवानिवृत्त के पूर्व मृत्यु हो जाने की दशा में बोर्ड को हक होगा कि वह उक्त उधार का सम्पूर्ण प्रसंदत्त प्रतिशेष जो ऐसी सेवानिवृत्ति या मृत्यु के समय प्रसंदत्त रहना है भौर उस पर सभी ज्याज, जिसका संवाय नहीं किया गया है उस उपवान से, यदि कोई हो, वसूल कर ले जो धावक ज्यक्ति की लागू सेवा नियमों के प्रधीन उसे संजूर की जाए।
- 4. जब कभी इस विलेख के मधीन श्रावद व्यक्ति द्वारा शोध्य भीर संदेय मूलधन या व्याज की कोई किस्त या कोई भ्रस्य राणि बकाया होगी, बोर्ड को उसे भू-राजस्व की बकाया रक्तमके रूप में वसूल करने का हक होगा । यह भी उपबंध है कि यह खण्ड बोर्ड के किन्हीं भन्य ग्रिधकारों, शक्ति भीर उपबारों को प्रभावित नहीं करेगा ।

इसके साध्यस्यरूप ऊपर वर्णित ग्राबद्ध व्यक्ति ने ऊपर सर्वप्रथम लिखिन तारीख को इस पर श्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

प्रनु	ूच	rt	t	गस	P)	T	9	b.d	₹		उ	77	t	ľ	1	9	4	Ţ	3	Пł	11		Ę		Ì												
বৰণ																																					ľ
1.																																					
2.	٠	٠.	-		٠	٠	•	•	٠.	• •	-	•	•	•	•	•	٠	٠	•	٠	•	•	•	•	٠	•	•	•	•	•	٠	•	•	•	•	•	
की	उ	पि	įγų	ति		में		₹	₹Ħ	Tξ	a .	ζ	f	'n	Ų																						
धीर		чf	रद	ान		ſ٩	şε	π		l																											

<sup>\*</sup>यह फेवल उन पलटों को लागू होगा जो उस भवन में खरीदे गए हैं जिसका स्वामित्व सहकारी आवास सोसाइटी के पास है।

रजिस्ट्रीकृत सहकारी सोसाइटी से बने बनाए मकान/फ्लैट के ऋष	3. स्रोहा ग्रौर इस्पान (दर/परिमाण/लागत)
की दक्षा में निष्पादित किए जाने वाले प्रतिभू बंधपत्र का प्ररूप ।	4- लकड़ी (दर/परिमाण/लागत)
(प्रतिभू बंधपक्र)	5. स्वच्छना सम्बन्धी फिटिंग (लागन)
表中; 1.	6. विद्युत फिटिंग (লাगन)
	7 ग्रन्थ विशेष फिटिंग (लागन)
2केकेके	८ श्रम प्रभार
(विमाग भावि) के है, स्वयं को ः ः ः ः ः के लिए	9. मन्य प्रभार, यदि कोई हो
(जिसे इसमें फ्रामे 'ग्राबड ज्यक्ति' कहा गया है) प्रतिभू घोषित करते हैं	
भीर यह प्रत्याभूति देते हैं कि आबद्ध व्यक्ति वह सभी कार्य करेगा जिसको	भूमि भौर भवन की कुल लागतः
करने का बचनबंध उसने बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा निष्पादित तारीख	<ol> <li>निर्माण कार्य का पर्यवेक्षण मै स्वयं करूंगा ।</li> </ol>
····ंके बंधपत्न के ग्रधीन किया है । हम	निर्माण कार्य*· · · · · · · · · · ः ः ः इत्तरः किया जाएगा ।
बोर्ड को रुपये (केवल	ठेकेदार के साथ मेरा कोई सरकारी व्यवहार नही है भौर न मैंने
की राणि का जो उक्त बंबस्त्र के भक्षीन भावद व्यक्ति द्वारा शोध्य	टेकेदार के साथ कोई सरकारी ब्यवहार किया है/किया या घ्रौर विगन
श्रीर संदेय रागि है केवल ऐसी रागिका जो बोर्ड उसको (बोर्ड को)	काल में उसके साथ सरकारी व्यवहार की/उसके साथ मेरे व्यवहार की
ग्राबद्ध व्यक्ति के व्यक्तिकम के कारण हुई किसी हानि या नुकसान की	प्रकृति निम्मलिखित है/थी।
पूर्ति के लिए पर्याप्त समझ, संदाय करने के लिए स्वयं को, अपने वारिसों	भवदीय
भीर निष्पादकों को प्राबद्ध करते हैं। हम यह करार भी करते हैं कि	भवपाय
बोर्ड, किसी भ्रत्य मधिकार और उपचार पर प्रतिकृत प्रभाव डाले बिना,	मकान के पूरा बन जाने/मकान का विस्तार पूरा हो जाने के पश्चात्
उक्त राशि को भूराजस्व की बकाया के रूप में हमसे वसुल कर सकेगा	बिहिन प्राधिकारी को रिपोर्टका प्ररूप ।
भीर हम यह करार भी करते हैं कि आबद्ध व्यक्ति के प्रति उक्त बंधपक्ष	् महो <b>व</b> य,
के प्रवर्तन में किसी प्रविरित या किसी भ्रन्य उदारज्ञा या उक्त कंध्रपक्ष	•
के निबंधनों में किस परिवर्तन से या आवाद व्यक्ति को दिए गए किसी	र्मैंने भ्रपने पत्न सं० ''''' तारीख ''' तारीख '''
ममय से या ऐसी किन्ही भ्रत्य शर्ती या परिस्थितियों से जिनके भ्राधीन	द्वारा सूचना दी थी कि मैं एक मकान बनाना चाहना हूं। मुझे सकान बनाने
	के लिए भादेश संख्या तारीख
कोई प्रतिभू विधि की दृष्टि से उन्मोजित हो जाएगा, हम उक्त रकम का	द्वारा श्रनुज्ञा दी गयी थी । भ्रव वह मकान बनकरपूरा हो गया है भौर
संदाय करने के प्रपत्ने वायित्व से उन्मोचित नहीं होंगे प्रौर इस बंधपत्न	मैं :: †द्वारा सम्यक्तः प्रमाणित
के प्रवर्जन के लिए इस बंधपत्र के भाषीन हमारा व्ययत्व मूल ऋणी के	मूल्याकन रिपोर्ट संलग्न कर रहा हूं।
रूप में होगा वह माबदा व्यक्ति के वायित्व के साथ संयुक्ततः भीर	भवतीय
प्यकतः होगा ।	
भाज तारीखः को श्री	(हस्ताक्षर)
भी उपस्थिति में (1)	मूल्या <b>क</b> न रिपोर्ट
विभाग/कार्यालयं कें श्री ने मौर	मैं/हम प्रमाणित करता हूं कि मैंने/हमने सं० कैके को जो
कार्यालय/विभाग के श्री	र्श्वा/श्रीमती ***/ ग्या है.
·····ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं।	मूल्यांकन किया है और मैंने/हमने उस मकान के मूहय का जो शाक्कलन
	किया है वह निम्नलिखित शीर्षों के अधीन इस प्रकार है:
प्रतिभू, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं	·
to the second se	<b>रीर्ष</b> ′ लागत
मकान बताने या उसमें परिवेधन करने की भनुजा के लिए विहित	रु०] पै०
प्राधिकारी को रिपोर्ट/भावेदन का प्ररूप ।	1. ईंट
महोदय,	2. सीमेंट
श्रापको स्पिके की जाती है कि मैं,	<ol> <li>लोहा भौर इस्पात</li> </ol>
मकान बनाना चाहता हूं/मकान में परिवर्धन करना चाहता हूं । ग्रतः	4. लकड़ी
भापसे भनुरोध है <sup>.</sup> कि मुर्झ मकान बनाने/मकान में परिवर्धन करने की	5. स्व <del>ण्</del> ळता सम्बन्धी फिटिंग
भनुजा वी जाए । भूमि की भौर निर्माण/विस्तार के लिए सामग्री की	6. विसुत फिटिंग
प्राकलित लागत नीज दी गई है :	7. सभी श्रन्य विशेष फिटिंग
	s. श्रम प्रभार
भूमि	9. सभी घन्य प्रभार
<ol> <li>स्थिति (सर्वेक्षण संख्या, प्राम, जिला, प्रदेश)</li> </ol>	
2, क्षे <b>त</b> फल	मकान की कुल लागन
3. लागत	<del>-</del>
भवन सामग्री मादि	मूल्यांकन प्राधिकारी के हस्ताक्षर रिकेट के उ
	[पी० <b>६</b> ० टी० <u>~</u> 8.4/7.8]
1. ईंट (दर/परिमाण/लागन)	अपठनीय
2. सीमेंट (दर/परिमाण/लागत)	सारीख अवर सिवव,
*ठेके दार का नाम और कारोबार का स्थान लिखिल 🎉 🍿	
्रीसिविल इंजीनियरी की कोई फर्म या ख्याति प्राप्त <sup>्री</sup> सिविल इंजीनियर।	
**यहां मकान का क्यौरा लिखित ।	
***यहां कर्मेचारी का नाम, श्रादि लिखिस ।	
नहीं नेत्नारा का नाना जान विकास ।	